

कवि-श्री माला

• तामिल •

कवि

सुब्रह्मण्य भारती

सम्पादक—अनुवादक

क म शिवराम शर्मा



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक

जीवनशास्त्र मन्दिर,
मन्थी

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
दिल्ली-मन्थी, बरघा

● ● ●

1

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण—१००

मई, १९६२

मूल्य—₹ २/-

● ● ●

मुद्रक

जीवनशास्त्र मन्दिर
राष्ट्रभाषा प्रेस
दिल्ली-मन्थी, बरघा

● ● ●

ईर्ष्या विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्ष अपने कार्य कालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मन्त्रालयके आगेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मन्त्र कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट कव्यकार परिषद 'कवि-श्री मन्त्र' की पञ्चम पुस्तकमें हिन्दी गद्यशुवाद भक्ति प्रदर्शित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत गद्य पाठकोंके सम्मेलन आ रहा है।

यद्यपि श्रीमती श्री मन्त्रके सर्वप्रथम कव्य-संश्लेषण निरूपण कथा एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी सौभाग्यवश ध्यानमें रखते हुए गण्यमान्य उन उन भाषाओंके विद्वान्मौली रायसे ही चुनकर कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके अग्रभागमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यकार परिषद और कवि विज्ञेयकार परिषद दिया गया है। जिस भाषाके दो कवियोंका चयन किया गया है उनका चयन करते समय सन् १९२ से पूर्वका साहित्य और १९२ से बादका साहित्य—इस तरिकेमें एक विभाजन रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि इन्धम सन् १९२० के पूर्वके तथा १९२ के बादके साहित्यमें प्रचलित विचार-धाराके एक विज्ञेय प्रकृतका अन्वय-सा पाया जाता है।

श्री ए. ए. शिवरामजी कर्पणने प्रस्तुत पुस्तकमें संश्लेषित साहित्यकार चुनने, कव्यकारके सम्पत्ति तथा आबूति पर सभी भाषाओंके इस रूपमें प्रस्तुत करनेका साहयोग दिया है। पुस्तकमें संश्लेषित विद्वान्मौली प्राप्त कथाके श्री अग्र के पत्रकारकने श्री अग्र सहयोग दिया है। संश्लेषकी आवश्यकता केबाद देनी श्री ए. ए. अग्रकारजी (डी. ए. अ. अ. इन्स्टीट्यूट आफ अल्फाईड आर्ट, बम्बई) का उदार साहयोग मिला है उसके बिना सम्पत्ति उनकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त कर्पण तथा अग्रकारण दृष्टिकोने जिन-जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आज है प्रस्तुत संश्लेष पाठकोंके खचित एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

हि. रायस ६

मंत्री

अनुक्रमणिका

	पृष्ठांक
तमिळ साहित्य परिचय [प्रारम्भ से १९२० तक]	३
कवि-परिचय	२९
काव्य सञ्चय	५१



सुब्रह्मण्य भारती

[फोटो श्री आर. के. परमलामन्के शोबन्यसे प्राप्त]

तमिल साहित्य परिचय

[प्रारम्भसे १९२० तक]

तमिऴ भाषा और उसका साहित्य • • •

बनादि काछसे बासेनु हिमाचल प्रदेस एक राष्ट्र माना गया है। प्राचीन काछसे ही गंगाके घाब-घाय यमुना बोवाबरी सरस्वती गर्गवा सिन्धु और कावेरीके नाम किये जाते हैं। काछीके घाब-घाय रामेश्वर, इारका और बरौनामके नाम किये जाते हैं। भारतबर्षकी यह बिरोपता है कि इस राष्ट्रीय एकताके होते हुए भी विभिन्न भाषा-भाषी प्रदेसोंकी अपनी-अपनी बिशिष्टता सबासे ही बनी रही। हमारे देसके हर भू-भागका रहन-सहन खान-पान या पहनावा सग ही अपना-अपना असग रहा। भाषाकी बिन्नता घवा रही। बिरोप बर्षसे इक्षिककी भाषाएँ उतरकी भाषाबासे एकत्रन भिन्न रहीं। इक्षिककी भाषाएँ इबिड़ परिवारकी हैं। इस परिवारकी अब चार प्रमुख भाषाएँ तमिऴ तेलुगु, कन्नड़ और मळयालम प्रचलित हैं। इन साहित्य सम्पन्न चार भाषाओंके अलावा अन्य कई बोलियाँ भी प्रचलित हैं।

यह कहना कठिन है कि इबिड़ सोय भारतके आरिम निवासी से वा बाहरसे जाए। कुछ लोगोंका बिश्वास है कि ये भारतके आरिम निवासी से कुछ अन्य लोगोंका बिश्वास है कि भारतके पबिचममें अब जहाँ अब घामर है वहाँ एक बड़ा भू-भाग वा जो भारतकी अर्धीकसे जोड़ता वा। उस समय हिमाचल्य प्रदेसमें एक घमुर वा। एक बड़ा भू-खंड हुआ जिसमें अर्धीका और भारतकी जोड़नेवाला भू-भाग तो बल

मग्न हो गया और हिमालय प्रवेशका समुद्र संसारका सर्वोत्तम पर्वत बन गया।
अधिका और भारतको जोड़नेवासे प्रवेशके निवासी भारतमें आ बसे और इतिहास
कहाए। कुछ लोगोंका यह विश्वास है कि इतिहास उत्तरकी ओरसे भारतमें आये।
इन तीन मतोंमें कौन-सा ठीक है, यह कहना कठिन है। पर इतना निश्चित है
कि एक समय या जब इतिहास भारत भरमें व्याप्त थे।

इतिहास परिवारकी भाषाओंमें तमिल सबसे अधिक प्राचीन है और इसका
साहित्य काफी सम्पन्न है। कई तमिलशास्त्रोंका कहना है कि यह भाषा संस्कृतसे
भी अधिक प्राचीन है। पर इतना निश्चित है कि दोनों भाषाओंमें एक दूसरेसे
बहुत कुछ सिखा तथा एक दूसरेकी बहुत कुछ दिया। यद्यपि तमिल भाषाने भी
संस्कृतसे बहुत कुछ सिखा तो भी अन्य भाषाओंकी अपेक्षा उसपर संस्कृतका प्रभाव
कम ही पड़ा।

तमिलकी प्राचीनतामें कोई संदेह नहीं है। ऐसा माना जाता है कि इस
भाषाके पिता सिंधवी है। प्राचीन तमिल साहित्यके तीन "संघ-काल" माने
जाते हैं। तमिल भाषाकी उत्पत्तिके लिए पहला संघ मयुरा नामक नगरमें स्थापित
हुआ। इस संघकी स्थापनाकी कहानी यों है —अगस्त्य मुनि जब दक्षिणकी यात्रापर
निकले तब सिंधवीने उन्हें तमिल भाषा सिखाई। अगस्त्य मुनि (दक्षिणमें)
मध्य-प्रदेशमें आ पहुँचे और वहाँ अपना आश्रम बनाकर रहने लगे। वहाँ उन्होंने
एक 'तमिल-अनुशीलन-समिति' स्थापित की। इस समितिके कार्यमें कई लोग उनकी
सहायता करते थे। उन दिनों मयुरामें जो राजा राज्य करता था वह पाण्ड्य वंशका
था। उसके कई बरबारी जब अगस्त्यने निकट सम्पर्कमें रहते थे। एक बार
इस पाण्ड्य राजाके मनमें यह विचार आया कि राजाका प्रोत्साहन पाकर भाषाकी
उत्पत्तिका काम अधिक सफलताके साथ चल सकेगा। अगस्त्य मुनिको भी बात
प्योच गई। अनुशीलन समिति अब "संघ" नाम से मयुरा आ पहुँची। अगस्त्य
भी वहाँ आकर रहने लगे। वह मयुरा नगर वर्तमान मयुरा नगरसे बहुत दूर
दक्षिणमें था। पाण्ड्य राजाओंमेंसे एकके मनमें आया कि राजधानी समुद्रके किनारे
रखे तो अच्छा होगा। वह अपनी राजधानी मयुरासे हटाकर क्वाटपुरम् (वा
क्वाटपुरम्) नामक समुद्र तटवर्ती नगरमें ले गया। तब मयुराका प्रथम संघ
समाप्त हुआ और क्वाटपुरम्का मध्यम संघ जबवा द्वितीय संघ स्थापित हुआ।
इस राजधानीके बारेमें भी कुछ लोगोंका विश्वास है कि मयुरा जल-मग्न हो गया तब
प्रथम संघका भी अन्त हुआ क्वाटपुरम्में गई राजधानी बनी तब द्वितीय संघकी
स्थापना हुई। कहते हैं कि प्रथम संघका ४४४० वर्षों तक रहा और द्वितीय
संघका ३० वर्षोंतक। इस वंश-परिमाणमें अतिशयोक्ति हो सकती है पर क्वाट-
पुरम्का जल्दब समापन और महाभारतमें हुआ है। तुम्हीवाचके अनुसार शम्भु
(सिंधवी) कुम्भज (अगस्त्य) के पास भेठा मुगमें गए। वृषि लीटते हुए

विजयी रचकारव्यमें सीताके बिरहसे व्याकुल श्रीरामचन्द्रजीसे मिले। इस दृष्टिसे मानना ही पड़ना कि अमरस्य मुनि श्रेतायुगमें ही दक्षिणमें पहुँच गए थे और तमिल भाषाकी उन्नतिको प्रयत्न करने लगे थे। इसी आभासपर मानना होना कि क्पाटपुरम् यदि अधिक नहीं तो तीन बार हजार वर्ष पुराना तो अवश्य ही है। कुछ समय बाद क्पाटपुरम् भी अस्त-मत्त हो गया। उसके साथ द्वितीय संघ और तृतीय संघकाकला भी अस्त हुआ।

जब क्पाटपुरम् पानीमें डूब गया तब पांड्य राजाओंकी नई राजधानी कथमान मयुरा नगरमें स्थापित हुई। पहले इन नगरवा कोई दूमरा नाम था परन्तु सरकारीन राजाने अपनी पुत्रनी राजधानीका नाम ही इस नई राजधानीको दिया। यहाँ तृतीय या अन्तिम संघकी स्थापना हुई। कहते हैं कि यह संघ १८३० वर्षों तक सक्रिय रूपसे भाषाकी सेवा करता रहा। ऐतिहासिक प्रमाणोंसे विहित होता है कि यह संघ ईसाके बाद दूसरी सदी तक चलता। संभव है उस समय पाण्ड्य राजाओंपर कोई महान संकट आया हो और इस कारणसे तृतीय संघका अन्त हो गया हो।

इस तरह प्राचीन तमिल साहित्यके तीन संघ-काल माने जाते हैं—प्रथम संघ-काल माध्य (द्वितीय) संघ-काल और अन्तिम (तृतीय) संघ-काल।

प्रथम संघ-कालकी कोई रचना उपलब्ध नहीं है। कहा जाता है कि अमरस्य मुनिने तमिल व्याकरणकी रचना की थी। उसका नाम “अगतियम्” है। उसके साहित्यमें इस “अगतियम्” से उद्धृत कई अंश संघ-संघ पाये जाते हैं। इन उद्धरणोंसे विहित होता है कि यह प्रथम संघकालकी रचना है।

दूसरे संघकालकी केवल एक रचना अब उपलब्ध है। उसका नाम है, “तोल कापियर” का तोलकापियम्। “तोलकापियम्” व्याकरणग्रन्थ है। “तोलकापियर” का अर्थ है—“तोलकापियम् वाले”। इसके रचयिताके सम्बन्धमें कोई जानकारी प्राप्त नहीं है। माना जाता है कि ये जातिके ब्राह्मण थे और अमरस्य मुनिके शिष्य थे।

“तोल कापियम्” शब्दके “कापियम्” को कुछ लोग “काव्य” का रूपान्तर मानकर “तोल कापियम्” का अर्थ प्रथम या पुत्रना काव्य करते हैं। इन आभासपर वे यह निश्चय करना चाहते हैं कि तमिलके प्रथम काव्यमें ही संस्कृत शब्दना योग हुआ है उनके पूर्व तमिल भाषामें कोई रचना ही सम्भवतः नहीं रही। यह निश्चय कुछ ठीक-सा नहीं लगता। “कापियम्” शब्द “काप्यु”— और “इयम्” इन दो शब्दोंसे बना हुआ सामासिक शब्द है। इसका अर्थ होता है “निवास रीति” “तोलकापियम्” का अर्थ है प्रथम या प्राचीन निवास रीति।

तमिल भाषामें 'व्याकरण' को 'इत्मकणम्' कहते हैं। पर इत्मकणम् का क्षेत्र व्याकरणके क्षेत्रमें अधिक विस्तृत होता है। "इत्मकणम्" की उत्पत्ति संस्कृतके "सञ्जगम्" सभ्यते हुई है। "व्यक्तिसम्" और "तोलकापियम्" दोनों "इत्मकणम्" हैं। तमिल इत्मकणम्के तीन विभाग हैं—अक्षर विभाग अक्षर विभाग और विषय विभाग। प्रथम दो विभाग तो संस्कृत तथा अन्य भाषाओंके व्याकरणोंमें भी हैं पर विषय विभाग तमिलका अपना एक विशेष विभाग है।

तमिल साहित्यमें मानव-वस्तीके पाँच भव माने गए हैं—(१) कुटुंबी—अर्थात् पहाड़ी प्रदेश (२) मुस्ली—अर्थात् वन प्रदेश (३) मस्बम—अर्थात् ज्वर भूमि (४) नेप्पल—अर्थात् समुद्रतीर और (५) पामै—अर्थात् मरु प्रदेश। इन पाँचों प्रदेशोंके निवासियोंके आचार-विचार और व्यवहारकी अलग-अलग रीतियाँ थीं। इन प्रदेशोंके विभिन्न व्यापारोंका वर्णन साहित्यमें किस प्रकार हो किन्तु व्यापारोंका वर्णन ही आदि "इत्मकणम्" के तीसरे (विषय) विभागाका विषय है। साहित्यिक विषयके दो भाग माने गये हैं—अहं और पुरम। अहं का अर्थ भीतरी" है। मनुष्यके अन्तःकरणमें उत्पन्न होनेवाले प्रेम विस्वात अथवा शोक भय आदि भावोंका वर्णन इस 'अहं' नामक भागमें रहता था। "पुरम" का अर्थ बाह्य है। इसमें मनुष्यके प्रेमात्मक युद्ध शासन आदि कार्य कलाओंका वर्णन रहता था। इन जैसी बातोंका निरूपण ही तोलकापियम्के तीसरे विभागाका विषय है और इसी परसे रचनाका नामकरण हुआ है।

तमिलमें स्वरको जीवाक्षर और व्यंजनको कायाक्षर कहते हैं। ये नाम बहुत ही सार्थक हैं। स्वरोंमें 'स्व' नहीं है अनुस्वार और विश्व नहीं है। 'ए' और 'ओ' बीज हैं—इन दोनों अक्षरोंके 'स्व' रूप भी तमिल भाषामें हैं। तमिल भाषामें एक विशेष स्वर () है जिसका उच्चारण अक है। यह आधुनिक उच्चारण है पर मान्य पड़ता है कि प्राचीन कालमें यह स्वर व्यंजनके आने या पीछे आकर उस व्यंजनके उच्चारणमें कुछ अंतर पैदा कर देता था। तमिल ब्रह्ममात्रामें संस्कृतके सभी वर्ण नहीं हैं। उन सभी वर्णोंको सूचित करनेके लिये तमिल लिपिमें निकली-पुल्लुती अक्षर नामक लिपि प्रचलित हुयी है। इस लिपिके प्रचारका प्रभाव तमिल स्वर अक पर इतना पड़ा कि इसका जोप-सा हो गया।

तमिल वर्णमात्रामें व्यंजनोंकी संख्या बहुत कम है। नामकी ब्रह्ममात्राके क वर्ण च वर्ण ट वर्ण त वर्ण और प वर्ण—इन पाँच वर्णोंके पश्चात् व्यंजनोंके स्वानुस्वर केवल दस व्यंजन हैं—ह्रस्व वर्णका प्रथम और अन्तिम अक्षर व्यंजन है। तमिल भाषाके ये व्यंजन इस प्रकार हैं:—अ इ, ए, ओ, उ, ए, अ, ए, अ और य। इनमें अ, इ, ए, उ और य के सम्बन्धमें कोई कठिनाई नहीं है। पर क च ट त और प का उच्चारण ब्रह्म प (और कभी-कभी ह्र) ए इ व और व ही सज्जा है। निम्न

अक्षरवा कब कैसा उच्चारण होगा इसके लिए भी कुछ नियम हैं। तमिलमें य र, ल और व ये वर्ण तो हैं पर वषा य न और ह नहीं हैं। अन्धकारक प्रभावके परिणाम स्वरूप अब ये व्यंजन भी तमिलमें प्रचलित हो गए हैं।

तमिलमें चार नए व्यंजन हैं जो हिन्दीमें प्रचलित नहीं हैं। वे हैं प छ र और न ।

य इन्डि भाषाओंका एक विषय व्यंजन है। आजकल यह अक्षर टेन्गु और कन्नड़ भाषाओंमें नहीं चमकता है। केवल तमिल और मलयालम भाषाओंमें प्रचलित है। य के उच्चारणमें जो हल्का-सा म्भार है उसके स्थानपर यक्षर जानेपर इस अक्षरका उच्चारण हो जाता है। तमिल अक्षरवा अन्तिम अक्षर यही है। इस अक्षरको मूचित करनेके लिए अब भाषाओंमें अक्षर नहीं है, इसलिए इसके स्थानपर अक्षरवा उपमाय किया जाता है। "तमिल" शब्दका शाब्द रूप "तमिय" है।

तमिल में हिन्दीका छ और मपठीका छ दोनों प्रचलित हैं।

तमिलमें एक मात्र "र" होता है। इसका उच्चारण र के उच्चारणसे कुछ अधिक पस्य है पर "रं" नहीं है। इस व्यंजनकी एक विशेषता है—इसके डिलका उच्चारण "ट्ट" होता है।

तमिलमें एक विशेष "न" है। "त" के बाद जानेवाले न और इस "न" के उच्चारणमें अधिक भेद नहीं है। पर इसके लिए नियम है कि कियु न का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

तमिल साहित्यके तीन विभाग हैं—पद्य इरी और नाटकम्। मोटे तौरपर इयलको काव्य माना जा सकता है। इरी संगीत है और नाटकम नाट्यका समानार्थी है। एना माना जाता है कि प्राचीन कालमें तमिलमें गीत साहित्य और नाटक साहित्यकी भी बहुत उन्नति हुई थी। जब चैन और बीड घमोंका प्राबल्य हुआ तब इन दोनों साहित्योंका नाश हुआ। संगीतकी एक प्राचीन परम्परा भी जो अब नहीं रही। इन परम्पराका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थोंमें मिलता है।

तमिल प्रदेशके चोल पांड्य और चेर—य तीन प्राचीन राजवंत बहुत प्रसिद्ध हैं। आजकल तंजीर और निगिचिरापल्ली जिलोंके नामसे प्रसिद्ध कावेरी नदीके पामका प्रदेश चोल राज्य था। इन प्रदेशके दक्षिणमें आजकल मद्रुप रामनापपुरम् और तिरनेल्वेनी नदुमानेवासे जिन्नाका प्रदेश पांड्य राज्य था। इन दोनों राज्योंके पश्चिममें आजकलके कैरल प्रदेशके दक्षिणमें चेर राज्य था। ये तीनों प्रबल राज्य थे इनके अमावा अग्य कई छोटे मोटे राज्य थे। इन राजाओं और नहुपराजाका आशय पाकर कवियों और विद्वानोंने तमिलकी शीवृद्धि की। तमिल मंत्र मद्रुप नदरमें था। हर कवि यह चाहता था कि उसकी कविताको लंबकी मायना प्राप्त हो।

प्रथम संवकामके अवस्थ-रुत "अपत्तियम्" के केवल कुछ उद्धरण अब प्राप्य हैं। द्वितीय संवकामका केवल "तोलकापियम्" इत "तोलकापियम्" पुरा प्राप्य है। तृतीय संवकामकी रचनाओंमें "एट्टु तोरी" "पत्तु पाट्टु" और "पदिनेन् कीप् कणक्कु" प्रधान हैं। "एट्टु तोरी" में आठ रचनाओंका संकलन है। "पत्तु पाट्टु" में दस रचनाओंका और "पदिनेन् कीप् कणक्कु" में अठारह रचनाओंका संकलन है। इन रचनाओंमें कई कवियोंकी बीर और शृंगार रस प्रधान कविताओंका संग्रह है। इस संवकामकी सर्वोत्तम रचना "तिरुक्कुरल" है। इसके रचयिता "तिरुवत्तुवर" हैं। "तिरु" धर्मका अर्थ "श्री" है। अर्थात् एक भिन्न जातिका नाम है। यह चमार जातिके पुरुष मानी जाती है। न प्रथम वाला अर्थ सूचित करता है। न के स्थानपर बादर सूचित करनेके लिए र प्रथम जोड़ा जाता है। "तिरुवत्तुवर" धर्मका अर्थ श्री चमार जाति-वाले माना जा सकता है। यह बिहित नहीं है कि उस कविका अक्षरी नाम क्या था। कविके नामकी विशेषताके अनुसार ही रचनाका नाम भी है। "कुरल एक कन्दका नाम है। रोहके यदि रो करन माने जायें तो कुरल" के डेढ़ ही अर्थ होंगे। "तिरुक्कुरल" का अर्थ "श्री कुरल कन्द" है। कविने अपनी रचना पूरी करके संकेत सम्मुख पैर की। संकेत उस रचनाकी माय्यता देने योग्य नहीं माना। ऐसी किम्वदन्ती है कि बीबी प्रेरणासे इस उत्तम रचनाको संवकी माय्यता प्राप्त हुई।

करीब दो हजार वर्ष पूर्व रचित इस तिरुक्कुरलका सबसे आमतक बराबर बादरपूर्ण अध्ययन किया जाता है।

करीब दस या बारह सदी पूर्व बहुतेसे ईसाई दक्षिण भारतमें जा बसे थे। उन लोगोंने इस रचनामें ईसा मसीहके बिचारोंका प्रतिबिम्ब पाया। उन लोगोंने तिरुवत्तुवरको ईसाई माना। बीड़ोंने उस महान कविकी बीड़ माना और बैनिपोंने चीन माना। सीबोने चीन माना और बीप्नबोने बीप्नब। महात्तक कि नास्तिकोंने उन्हें नास्तिक माना। इसमें बिन बातोंका प्रतिपादन हुआ है वे मनुष्य नामके लिए माय्य हैं। तिरुक्कुरलमें न किसी धर्मका निरूपण हुआ है न किसी धर्म-विशेषकी विशेषताओंका। इसमें मनुष्य नामके किमाकलापोंका निरूपण हुआ है।

तिरुक्कुरलके तीन छंद हैं—धर्म अर्थ और काम। इन तीनों क्षेत्रोंमें मनुष्यका आचरण जब पवित्र और पुर्ण बनता है, तब वह मोक्ष प्राप्त करता है। यह मोक्षकी स्थिति अवर्तनीय है। केवल स्थानुभूतिये ही इसका अनुभव किया जा सकता है। कबीरने आत्म अनुभव' ज्ञानकी जो बात कही है वह इस मोक्षकी बातसे मिलती जुलती है। धर्म छन्दमें गृहस्थ धर्म और सति धर्म दोनोंका निरूपण हुआ है। अर्थ छन्दमें राज्य शासन सेना संचालन मन्त्रीके कर्तव्य कर आदिका निरूपण है। काम

अधर्मों का प्रेमके सभी व्यवहारोंका निरूपण है पर लोक शास्त्र या क्रम शास्त्रके नामसे प्रचलित ग्रन्थोंका-सा इसमें कुछ भी नहीं है। हर अङ्कके कई अध्याय हैं और प्रत्येक अध्यायके इस कुरल (नामक छन्द) है। तीनों अङ्कोंके कुल १३३ अध्याय और १३३० कुरल (नामक छन्द) हैं। पहला कुरल है —

अथ मुदङ्गेय लेखाम् — आदि
अथवा मुदङ्गेयुक्तम् ।

अथवाही लेख ही अथवाही प्रचलन है। आदि अथवाही लेख ही लेखका प्रचलन है।

इस कुरलके आधारपर कुछ लोगोंकी कल्पना है कि कश्मिरी भाषाका नाम 'आदि' और लिङ्गका नाम 'अथवा' है। इस छन्दमें कश्मिरी अपने माता-पिताका स्मरण किया है। पर "आदि अथवा" का अर्थ अनादि परब्रह्म मानना ही उच्चत मान्य पड़ता है। यदि "बौद्ध विद्ये वृक्षी फिर" के आधारपर तुम्हीरासकी माताजीका नाम "वृक्षी" माना जा सकता है तो इस कुरलके आधारपर "वृक्ष-वृक्षवर" के माता-पिता भी आदि और अथवा माने जा सकते हैं।

वृष्टिकी महिमा पाठे हुए कवि कहते हैं —

तुष्पाङ्गु तुष्पाय तुष्पाङ्गु—तुष्पाङ्गु
तुष्पाय तुष्पु मयै ।

इसका सारांश इस प्रकार है—वृष्टि आहारके योग्य सब पदार्थोंकी सृष्टि करके स्वयं ही आहार बन जाती है।

इस रचनाकी बेहके समान ही आदर प्राप्त है। अथवा यह तमिल बेह कहलाता है। जो-आई तो अथ पूर्व अथिभ्य भारतमें इन्की बेहके कास्टेण बेस्की नामक एक ईसाई धर्म प्रचारक रहते थे। उन्होंने इस रचनाका अतिन भाषामें अनुवाद किया। आज इसका अनुवाद अंग्रेजी फ्रेंच जर्मन तथा संस्कृतमें हुआ है।

संघ जालीन कश्मिरीमें कश्मिरी "बौद्ध" का नाम उल्लेखनीय है। अब "बौद्ध" शब्द ब्रह्मजालके प्रति आदर सूचित करनेके लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द है। ऐसा मान्य होता है कि तमिल भाषामें "बौद्ध" नामकी दो-चार कश्मिरीभाषी रही होंगी। इस कश्मिरीके नामसे प्राप्त रचनाओंमें टीलीका अन्तर पाया जाता है। "पुर नानुष "कुल्लोषी" "नद्विषी" "अथानानुष" आदि ग्रन्थोंमें इनकी कश्मिरी पाई जाती हैं। कहा जाता है कि यह "आदिमान" नामक राजाके आश्रयमें रची थी। इनकी रचनाओंमें राजाका पण्यमान भी है और सर्व-साधारणके उपयुक्त नीति भी है। इन्होंने कहा है "आदि हरणोपिय बेरिस्की अर्थात् आदि तो इस केवल हो ई" वाता उच्च आदि का है और न बेनेवाण (अर्थात् अन्तुष) निम्न आदिका है। इनका आदेश है "बौद्धिस्का अरिष कुडि हरणत्वेच्छम्"

अर्थात् वहाँ मन्दिर न हो ऐसी बरतीमें विश्वास मत करो। तमिल देशमें कोई मगर या गाँव ऐसा नहीं जिसमें मन्दिर न हो। तमिल लोगोंने जहाँ-जहाँ गई बस्ती बसाई है, जहाँ-जहाँ मन्दिर निर्मित करनेका प्रयत्न अवश्य कर लिया है।

कहा जाता है कि भगवान् कुमारने इस कवयित्रीको दर्शन दिये थे। एक बार बीबी नहीं था रही थी। रास्तेमें एक जामुनके पेड़पर एक बालक बैठा था। उससे कवयित्रीने कहा— बेटा कुछ जामुन तो निरावो मैं खाऊँगी। मडकेने पूछा—/नानी तुम गरम जामुन खाओगी या ठण्डे? कवयित्रीने कहा— बेटा क्या तुम विस्मयी करते हो? नहीं जामुन भी गरम या ठंडा होता है? मडकेने कहा—/नानी! मैं अपनी नातीसे विस्मयी न करूँ तो और किससे करूँ? अच्छा सो मैं तुम्हें गरम जामुन खिलाऊँगा। यह कहकर उसने पेड़की एक शाखा इस तरह हिलाई कि पके-पके जामुन जमीनपर टप-टप पिरने लगे। बीबीके हाथमें एक भी जामुन नहीं गिरा। जामुन पके थे इसलिए उनपर मिट्टी लग गई थी। बीबी एक-एक फलको चुन चुनकर और फूँक-फूँककर खाने लगी। लड़केने पूछा—/नानी! जामुन है न गरम? नातीने कहा—/कहाँ बेटा! ये तो ठण्डे ही हैं। मडकेने कहा—/नानी मठ क्यों बोझी हो? यदि जामुन गरम नहीं है तो फूँक फूँककर क्यों खाती हो? बीबी निश्चर हो गई। यह मनमें सोचने लगी—मुझे अपने ज्ञानका बड़ा दर्ब था। आज इस बालकके सामने मैं मूर्ख सिद्ध हुई। यह बालक सबकुछ ही प्रतिभाशाली है। उन्होंने सिर उठाकर पेड़की ओर देखा तो उन्हें उस पेड़पर कुमार भगवान् (बाल-मुद्गहृद्यम्) के दर्शन हुए।

सब कासके एक और प्रसिद्ध कवि कपिलर है। कपिल नामके साब आबर सूचक र प्रत्यय जोड़कर बनाया गया 'कपिलर' शब्द तमिलमें बहुत प्रचलित है। ये कवि पारि नामक एक प्रसिद्ध वाताके आश्रयमें रहते थे। पारिकी वातघीलठा पारि और कपिलरका सम्बन्ध तथा पारिके बाद उनकी रच्यारके विषयके लिए कपिलर द्वारा किए गए महान प्रयत्न आदिकी कई रोचक कथाएँ तमिल प्रदेशमें प्रचलित हैं।

सब काशीन अथ कवियोंमें लक्ष्मीर, परावर, और कविजन वृषुधनारके नाम उल्लेखनीय हैं।

सब काशीन काव्योंके नाम तो बहुत विनोसे प्रचलित थे पर वे काव्य करीब पचास या साठ वर्ष पूर्वतक उपलब्ध नहीं थे। तमिल प्रदेशमें ताड़के पेड़ बहुत हैं और ताड़के पत्तेपर मीड़-मिखनीसे लिखनेकी प्रथा अनादि कालसे प्रचलित है। आजकलके कलम और कागजके आनेसे यह प्रथा बहुत कम हो गई है पर एकदम छठ नहीं गई। तमिल जायाका सीभाग्य है कि इन बीसवीं सदीके आरम्भमें महामहोपाध्याय श्री ड के स्वाभिनाथ अम्बर नामक उत्तम साहित्यकार हुए। तमिल

साहित्यमें इनका करीब-करीब वही स्थान है जो हिंदी साहित्यमें आचार्य श्री महावीर प्रसाद त्रिवेदीजीका है। इनके अनवरत प्रयत्नोंका ही परिणाम है कि अनेक प्राचीन कविताएँ प्रकाशित हो सकीं। अपने अनभवोंका उत्सेख करते हुए उन्होंने एक बार कहा था—“यह सिद्ध होता है कि तमिल देशमें अनेक प्रकारकी कसाएँ बाँधी जिनसे सम्बद्ध समूह साहित्य था।

ताड़ पत्रोंमें सुरक्षित बचा-साहित्यको खोज-खोजकर प्रकाशित करना आवश्यक है। इन पत्रोंकी खोजमें जब मैं गया तब मैंने देखा कि पहली बार मैंने जो पाया था उसका बहुतांश दूसरी बार जानेपर गप्ट हो गया है। उस ताड़-पत्रका महत्व समझकर उसकी रक्षा करनेवाले उस समय नहीं थे। कुछ तो जर्मन हो गये और कुछ पत्र बिखराई ही नहीं पड़े। इन बातको ध्यानमें रखते हुए मैंने कहा पढ़ता है कि इस समय जो कुछ उपलब्ध है, उसको यत्नपूर्वक सुरक्षित रखा जाय और विद्वानों द्वारा उसका अनुसंधान करवाकर उसे प्रकाशित करवाया जाय तो अच्छा होगा।”

ब्रिटिश सरकारने श्री स्वामिनाथ जय्यरका महामहोपाध्यायकी उपाधिसे विभूषित किया था। जगता उनके प्रति अपना आदर व्यक्त करनेकी कृष्टिसे उन्हें “ताटा” (बाबा) कहकर पुकारती थी। इस महानुभावकी हवासे ही हमें संवत्सलीन अनेक रचनाओंके रसास्वादन का अवसर प्राप्त हुआ है।

प्राचीन तमिल साहित्यके पाँच महाकाव्य और पाँच छन्दु काव्य प्रसिद्ध हैं। कई लोग इन्हे संवत्सलीन रचनाएँ मानते हैं। पर महाकाव्य ये हैं—शिल्लप्पविकारम्, “मणि मेवली जीवक चिन्तानलि बलयपति और “कृष्णकेरी”। इन काव्योंके समय तक तमिल प्रदेशमें बौद्ध और जैन धर्मोंका पर्याप्त प्रचार हो चुका था। इन काव्योंमें उन धर्मोंका प्रभाव प्रकट होता है।

शिल्लप्पविकारम् नामक काव्यके रचयिता कविका नाम “इलंगो” है। “इलंगो” सम्भवतः अर्ध “छोटा राजा” है। यह कवि चेर राज्य (आज कर्कटे केरल राज्यके दक्षिणका भाग) के राजा “चेरल चेंनुट्टवन” का छोटा भाई था। कहा जाता है कि स्वयं चेरल चेंनुट्टवन तो ईश्वर था पर उसका भाई कवि “इलंगो” जैन था। इनके गृहस्थ जीवन त्यागकर संन्यास ग्रहण किया तब कोय इन्हें “इलंगो जटिबळ” कहने लगे। इन “शिल्लप्पविकारम्” काव्यकी विशेषता यह है कि इसमें तत्कालीन भोज पाण्ड्य और चेर-चीना राज्योंका वर्णन है। इस काव्यकी कथावस्तु अत्यन्त लोकप्रिय है। संक्षेपमें इस काव्यकी कथा वस्तु इस प्रकार है—

समुद्रसे कावेरी नदीका बहाव संगम होता है वहाँ “पुहार” या कावेरी पुष्पादित्तम् नामक एक प्रसिद्ध मन्दिरबाहू था। (उस स्थानपर अब कावेरी पुष्पादित्तम् नामक छोटा-सा ग्राम है।) वहाँके एक धनी वैश्यके पुत्र कोवकन

अभियोक्ता के मिलकर सामना करते थे। इस उद्देश्यमें उन्हें बड़ी सफलता मिली। जब तमिल प्रदेशमें बौद्धोंकी संख्या नगण्य है। यद्यपि जैनियोंकी संख्या बैसे कुछ अधिक है पर जनसंख्याकी दृष्टिसे अगुपतत वह बहुत ही कम है। भक्ति कालके छंद और वैष्णव कवियोंने अपनी अमृतवाणीकी बर्णिका जनतामें नई जागृति पैदा की। ऐसा माना जाता है कि संघ कालमें ही कुछ भक्त कवियोंकी रचनाएँ शुरू हो गई थी।

भक्तिकालके छंद कवि "नायनमार" और वैष्णव कवि 'आळवार' कहलाते हैं। "नायनमार" का जब पिता लोप भवना मेटा गय है। "आळवार" का अर्थ पावन करनेवाले है। कुछ लोग "आळवार" के भाष्यकार "मानकर" उन महान कवियोंको भक्ति रसमें डूबनेवाले मानते हैं। पर "आळवार" दास्य ही छंद है।

बैसे ही नायनमार ६३ है। पर इनमें चार बहुत प्रसिद्ध हुए हैं—माजिकक बाचकर, तिरु व्वाणसम्बधर, अय्यर और मुन्नरर।

यद्यपि नायनमारोंमें पुराने माजिकक बाचकर है। कुछ लोग इनको संघ कालीन मानते हैं। ये जातिके ब्राह्मण थे। ये पाण्ड्य प्रदेशके किसी राजाके मन्त्री थे। अपना कुछ भोग त्याग कर सिद्ध मन्त्रियोंकी यात्रा करते फिरते थे। जगह जगह मन्त्रियोंके अविष्टाता शैलोंकी स्तुति पाते थे। जन्ही गीतोंका संकलन "तिरु बाचकम्" के नामसे प्रसिद्ध है। तिरु का अर्थ तो भी है बाचकम् रचनाके नामसे कविका बाचकर (माजिकक विद्येपय युक्त) नाम हुआ या कविके नामसे रचनाका यह नाम हुआ—यह एक समस्या ही है। इनकी एक और रचना "तिरु कोवैयार" है। इसमें सूक्तियोंकी तरह परमात्माका प्रेमिकाके रूपमें और जीवात्माका प्रेमीके रूपमें बलन हुआ है। तमिल और उसका साहित्य " नामक अपने ग्रन्थमें श्री पुरुषम् सोमसुन्दरने लिखा है कि एक प्राचीन तमिल काव्यमें सूफी मतकी यह छाया आश्चर्यजनक है।

तमिलके भक्ति-रस-युक्त गीतोंमें "तेवारम्" और "तिरुवाचकम्" का स्थान बहुत ऊँचा है। दक्षिण भारतके सभी सिद्ध मन्त्रियोंने इन गीतोंका ध्यान प्रायः प्रति-दिन होता है। यद्यपि शास्त्रीय संगीत और इन गीतोंका संबंध बलुनः एक ही है तो भी इन दोनोंके गानकी रीतिमें कुछ अन्तर अवश्य है। तमिल प्रदेशके मन्त्रियोंमें प्रति वर्ष दस दिनका मेला लगता है। उन दिनोंमें प्रति दिन दो बार—सबेर और रातको मन्त्रियोंकी मूर्ति जुलूममें लाई जाती है। इन जुलूममें प्रधान मूर्तिके पीछे वेद पारायण करनेवाले जाते हैं और उनके पीछे भक्ति-आद्ययुक्त "तेवारम्" आदि गीत गानेवाले जाते हैं। इन गीतोंका अर्थ कर लोग मन्त्रियोंमें विपरीत हो जाते हैं। शास्त्रीय संगीतके अर्थमें मनमें भक्ति-उद्भावनाकी अपेक्षा कानोंकी ही

अधिक ज्ञानम् प्राप्त होता है। तिरवाचकम् तो मानिकन वाचकरकी रचना है—
तेवारम् तिर ज्ञान-सम्बन्धर अप्पर और सुन्दरर की रचनाओंका सग्रह है।
“वेव हारम्” का तमिल रूप तेवारम् है। ये एक-सकल नायनवार त्रिन-त्रिन तीर्थ
स्वार्थोंकी यात्रा करके वे उन उन स्वार्थोंकी महिमा बराबर माया करते थे। इन
गीतोंके कारण वे स्वार्थ महिमास्मित हुए। इस कारणसे वे म्यान “पाइल पेद्रु
स्पकन्” अर्थात् गीत-भाण्ड स्पक कहलाते हैं। एम तथा मय्य भक्ति भावपूर्ण
गीतोंका सङ्ग्रह ही तेवारम् है। समयकी दृष्टिसे इस तवारम्के तीनों रचयिताओंमें
पहले अप्पर हुए, उनके बाद तिरज्ञान सम्बन्धर हुए और उनके बाद सुन्दरर।

अप्पर पहले जैन से पर बादकी से पैर बन गए। उस समयका राजा
जैन था। उसने अप्परको बहुत सजाया। बने ढीब धर्मके प्रति उनकी अपार
भयता थी। सांसारिक मुक्त-कुलीकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। अप्परको तिर
नायककरण” भी कहल है। इसका अर्थ है “धी जिन्हा राज”। उनकी कविताएँ
उत्तम कपीकी थी। उनकी कविताओंपर मन्त्र होकर एक बार तिरज्ञान सम्बन्धरने
उन्हें “अप्पर” अर्थात् “हे पिताजी” कहकर पुकारा इसलिए उनका अप्पर नाम पड़ा।
इस कविकी प्रसिद्ध उक्ति है “मामार्जुम कुडि इलोम ममनयंजोम्” अर्थात् हम किसीकी
(अधीनतामें रहनावासी) प्रजा नहीं हैं हम यमसे डरते नहीं हैं। परन्तु सौ सार पूर्वके
कविकी यह उक्ति स्वतन्त्रता-भाण्डिके आन्दोलनमें एक उत्तम मारेके काममें आई।

तिरज्ञान सम्बन्धरके सम्बन्धमें कहानी है कि इनकी माता अपने सिधुकी
एक ठाकाके चिनारे छोड़कर उसमें स्नान करने गई। सिधु भूजके मारे बहुत
दीया पर माताका ध्यान उस ओर नहीं गया। वे स्नान करनेमें ही मग्न थीं। उस
स्वयं भगवतीने आकर सिधुकी स्तन-पाल कराया। भगवतीके स्तनोंका पाल करते
ही वह सिधु मातृपूज गीत गाने लगी। साक्षात् भगवतीसे उसका सम्बन्ध हुआ
इसलिए सिधुका नाम सम्बन्धर हुआ। ये जातिके बाह्यसे वे और इन्होंने बराबर
सर्वोपाय अध्ययन किया था। तमिलके दो वे प्रकाश विद्वान थे ही। इनकी
रचनाओंमें स्वामिमतका भाव सङ्गता है।

अप्पर और ज्ञान सम्बन्धरके कई सौ वर्ष बाद सुन्दररका काल आता है।
वे स्वयं अच्छे कवि थे। अपने समयके पूर्व भी कवि हुए, उनकी कविताओंकी रचाका
उन्होंने प्रबन्ध किया।

लेक्कवार नामक एक और कवि हुए हैं जिन्होंने परिय पुरायम् (बृहत्
पुराण) की रचना की। इस पुरायणमें सभी पैर कवियोंका जीवन वृत्तान्त है।

लिस्मूठर नामक एक अन्य कविने “तिर मन्दिरम्” (श्रीमन्त्र)
नामके एक स्तुति ग्रन्थकी रचना की। इस स्तुतिमें शिव-महिमाकी तीन हजार
कविताओंका सग्रह है।

प्राचीन दैव मन्त्रोंका नाम लेते हुए मन्त्र का नाम लेना आवश्यक। इसकी कोई रचना उपलब्ध नहीं है पर तमिल प्रदेशके दैव-मन्त्र सन्तोंमें इसका स्तान बहुत ऊँचा है। इनकी कहानीके आधारपर उन्नीसवीं सदीमें सोपाल हण्ण भारतीय नामक साहित्यकारने मन्दन चरित्चरम् (मन्द-चरित) नामक एक चरित-ग्रन्थ लिखा जो बहुत ही लोकप्रिय हुआ। मन्त्र कातिका अक्षुप्त था। अक्षुप्त कातिका आराध्य-देव ब्राह्मणोंके देवसे भिन्न था। पर अक्षुप्त मन्त्रकी यज्ञा "ब्राह्मणोके देव" विश्वम्बरम्के गठराजपर हुई। वे विश्वम्बरम् जानेकी अत्यन्त वातुर थे। एक ब्राह्मण जमींदारके अधीन खेतीका काम करते थे। ब्राह्मण जमींदार भला अक्षुप्त बासको विश्वम्बरम् जानेकी अनुमति कैसे देते। इनके पक्षके मन्त्र अपना पवित्र उद्देश्य छोड़नेको भी तैयार नहीं थे। वे अपने मामिकजी सचाईके साथ सेवा करते थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि मैं कल तो अवश्य ही मामिक की अनुमति पाकर विश्वम्बरम् जाऊँगा। विश्वम्बरम् जानेके लिए वे प्रति दिन कल कल कहते थे इस कारणसे उनका नाम "विव नाळी पोवार" पड़ा। "नाळी" का अर्थ तमिलमें "आपामी कल" है और "पोवार" का अर्थ "बाएँ" है। अर्थात् उनका नाम ही "कल बाएँकी" पड़ गया। उनका चरित् चरव और अहिंसाकी विषयका मुम्बर प्रमाण है।

दैव मन्त्रोंमें कुछ महिलाएँ भी थी।

"आळवार" नामक वैष्णव मन्त्र कवियोंकी संख्या थारू है। इन थारू मन्त्र कवियोंकी रचनाओंका संग्रह "नालायिर प्रबन्धम्" (चार हजार प्रबन्ध) कहा जाता है। पौर्ण्व आळवार "पूरताळवार" (भूतताळवार) और "पेवाळवार" प्रथम तीन आळवारके नामसे प्रसिद्ध हैं। नालायिर प्रबन्धम्का हर प्रकरण (अध्याय) "तिद्वन्त्यावि" नामसे प्रसिद्ध है। ये तीनों आळवार उक्त प्रबन्धम्के प्रथम तीन तिद्वन्त्यावियोंके कवि हैं। इन तीनोंका जन्म क्रमशः कांची पुरम महा बलिपुरम और महलापुरममें हुआ। जिस दिन पौर्ण्व आळवारका जन्म हुआ था उसके दूसरे ही दिन पूरताळवारका जन्म हुआ और तीसरे दिन पेवाळवारका जन्म हुआ। ऐसा माना जाता है कि ये तीनों आळवी सदीमें हुए थे।

इन तीन आळवारोंके सम्बन्धमें एक रोचक कहानी इस प्रकार है—मद्रासके करीब डेढ़ सौ मील दक्षिण-पश्चिमकी विषामें "विव कोविलूर" नामक एक प्रसिद्ध तीर्थ है। पौर्ण्व आळवार एक दिन इस तीर्थमें रास्तोंपर चल रहे थे। उस समय जोरका पानी बरसने लगा। वे एक छापड़ीके अन्तर प्युँच गए। वह छापड़ी बहुत ही छोटी थी। उसमें उनके सेटने भरके लिए स्थान था। वे सेटे ही थे कि एक सज्जन वहाँ आ प्युँच। आगत महाशयसे पूछनेपर मालूम हुआ कि वे पूरताळवार थे। स्वानामाजके कारण दोनों बैठे रहे और बैठे-बैठे ही दोनों भक्तवत् चर्चा

करन कर्म। इस बीचमें एक और सज्जन वहाँ आ पहुँचे। वे देवाढ्यार थे। शोपड़ीमें तीन लोमोके बैठनेके लिए स्थान नहीं था इसलिए तीनों खड़े-खड़े भयवत् चर्चामें मग्न हो गए। इधर ये तीनों महात्मा भयवत्चर्चामें तल्लीन थे और उधर कृष्टिक कम होकर कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहा था। अचानक उन आश्रीमें एक अपूर्व ज्योति दिखाई दी। यह ज्योति भयवान् विष्णुकी थी। तीनों आढ्यारोंने एक साथ भयवान् विष्णुके दर्शन पाये। इस अपार आनन्दमें हरएकने मी-मी गीत रचे। ये ही गीत तिरुवन्तादि कहलाते हैं।

कुछ क्षीय ऐसा मानते हैं कि देरियाढ्यार छठी सरीमें हुए थे। परन्तु उनको आठवीं सरीमें हुआ मानना ही उचित होगा। वे रामनाथपुरम् शिखरे भी तिरुत्तपुरुरके निवासी थे। वे "बट्टर पिरान (ब्राह्मण-महाराज) और "विष्णु सिद्धर भी कहलाते थे। उन्होंने श्रीहृष्यकी ही अपना इष्ट देव माना। उनकी कविताओंमें श्रीहृष्यके वंदनका बहुत ही सुन्दर बलन हुआ है। इनका बंधा वा—भयवान्को पूजार्थ (पुण्य हार) और पामार्थ (कविताका हार) वर्णित करना। एक दिन वे फूल लने पुण्य बाटिकामें पहुँचे। वहाँ लड़कामें पाम उन्हें एक गिनु पड़ा हुआ मिला। अपने घर लाकर उन्होंने उनका पालन पोषण किया। वही शिशु जाने चलकर "आण्डाळ" नामक आढ्यार हुई।

"आण्डाळ" का अर्थ है वह शिशुने पालन किया। अतिम ठ म्नी सुषक प्रत्यय है। भयवान्को फूलोंकी माला अपन करते-करते आण्डाळका भयवान्ने प्रेम हो गया। वह भयवान्की ही अपना पति मानती थी। भयवान्को अर्पण करनेके लिए जो फूलकी माला तैयार करती थी उसको स्वयं पहले पहनती थी और उसके बाद भयवान्को पहनाती थी। इस बातका जब पता चला तब पहल तो लोगोंने उसपर आक्षेप किया। पर शीघ्र ही विदित हो गया कि भयवान्को उसकी पहनी हुई माला ही पसन्द है। तबसे आण्डाळका नाम "शुद्धि कोहुत नाञ्जियार" (पहनकर देनेवाली नाञ्जियार) पड़ा।

पादि कोहुताळ नर्वा शाले—पूजार्थ

शुद्धि कोहुताळ छोल्लु ।

अर्थात् कविगणें तो गा करके पहनाई (पढ़ाई) और फूलकी माला करने के पहनाई।

तिरुमयी आढ्यार एक और आढ्यार थे। वे सेनापति थे। वे शीघ्र पकल अन्तर के समकामीन थे। तिरुमयी श्री अण्णक कनिष्ठ मित्र थे। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि दक्षिण भारतमें—विशेष रूपसे तमिल प्रदेशमें शीघ्र और शीघ्रमें स्वयं बहुत कम हुए। उन शालोंका सामान्य उद्देश्य वा—शुद्धि

और वैन धर्मका लडन करना। तिसमें आठवारने इधेँ मवतारोंकी और विशेष रूपसे रामवतारकी महिमा गाई है।

आठवारोंमें गम्माळवारका स्थान बहुत ऊँचा है। इनकी कविताओंकी "तिस्त्वाय मोषि" (भीमुख बचन) कहते हैं। इनका जन्म तिस्रोत्सेली विछेके आठवार तिरनगरी नामक नगरमें हुआ। कहा जाता है कि बालकपनमें इन्होंने हमळीके पेड़के नीचे बैठे-बैठे कठिन तपस्या की और इनपर भगवान हरिकी कृपा हुई। इनकी कविताएँ सुमधुर और तत्त्वज्ञानसे पूर्ण हैं।

आठवारोंमें अन्तिम कुळरोत्तर आठवार वे। वे केरलके राजा वे। उनकी कविताओंमें राम और कृष्ण दोनोंकी स्तुति है। इनकी मुख्य माळा "नामक संस्कृत पद्यावली बहुत प्रसिद्ध है। इनका काक बसवी सरी माना जाता है।

अन्य चार आठवारोंमें "मधुर कवि आठवार" तिस्त्वायाआठवार" "तोण्टरिण्णोडि आठवार" और "तिर मइपी आठवार" की यचना होयी है।

आठवारोंका काक बसवी सरीके करीब समाप्त होता है। इसके बाद मैण्डव सम्प्रदायक "आचार्यों का काक आरम्भ होता है। आठवार लोग उत्तम कवि थे ज्ञानी थे और भववासके वर्धन पाये हुए थे। आचार्य छीप टीकाकार थे। वे आठवारोंके विचारोंका जन साधारणमें प्रचार करते थे। आचार्योंमें प्रथम "नादमुनि" थे उनके बाद यामुनाचार्य और उनके बाद "रामानुजाचार्य" हुए। नादमुनिने ही आठवारोंके पीठोके ब्रह्मचर विष्णु प्रबन्धम् के नामसे सम्पादन किया था। यामुनाचार्य नादमुनिके पीठ थे। वे बचपनसे ही बड़े प्रतिभावाली थे। कहते हैं कि बोल राजाके यहाँ एक पंडित था। उसने तत्कालीन सभी पंडितोंकी परास्तकर दिया था। वह उन सभीसे कर बगूल करता था। जब उसके आदमी यामुनाचार्यके पुरसे कर माँगने आए, तब सयोग्य गुरु अनुपस्थित थे। यामुनाचार्यने कर देनेसे इनकार कर दिया। इतपर पंडित बहुत ब्रुट हो गया और यामुनाचार्यकी बराने-अमराने लगा। पर यामुनाचार्य बरा भी बिचलित नहीं हुए। उन्होंने कहा कि धारुचार्यमें मुझे परास्त करके ही आप कर बगूल कर सकते हैं। इसपर बोलीमें धारुचार्य हुआ और पंडित महोदय परास्त हुए। बोल राजाकी राजी पहलेसे ही उस पंडितसे अप्रसन्न थी। वह यामुनाचार्यसे बहुत प्रसन्न हो गई। वह उनकी अपने पास बुलाकार उनकी पीठ सहलायी हुई बोली—तू "आठ-बंदार" है अर्थात् "पाकनेके लिए आया हुआ" है। तबसे यामुनाचार्यका नाम "आठबंदार" पड़ा। श्री आठबंदार संस्कृतके भी अच्छे विद्वान् थे।

सभी आचार्योंमें रामानुजाचार्य सबसे अधिक प्रतिष्ठ हैं। वे विद्विष्टाईतके प्रवर्तक हैं। शंकराचार्यने ब्रह्मसूत्र उपनिषद् और भगवद्गीताका ज्ञाप्य रचकर अद्वैत तत्वका प्रतिपादन किया था। रामानुजाचार्यने भी उन्ही तीनोंका ज्ञाप्य

रचकर विधिपटाईतका प्रतिपादन किया। रामानुजाचार्यके बाद मध्वाचार्यने भी इन्हीं तीनोंका भाष्य रचकर ईत तत्त्वका प्रतिपादन किया।

रामानुजाचार्यका जन्म श्री पेरम्बुडूरमें हुआ। यह मद्रास बाहरके पश्चिममें करीब पचीस मीलपर है। विद्या प्राप्त करनेके लिए वे कांचीपुरम् गए। विद्या शालमें ही उनका अपने गुरुस मठभद्र ही गया। ब्रह्मसूत्रके ये अपने गुरु द्वारा बताये गए शर्षका सहन करते थे। गुरु इस बातको लेकर विष्यसे बहुत रुष्ट हुए और उन्होंने विष्यको मार शालने तकका प्रयत्न किया पर रामानुजाचार्य किसी तरह बच गए। कई वर्ष बाद जब उनकी कीर्ति चाहीं और पैरु कई तब तो गुरु महाराज उनके अनुयायी बन गए।

रामानुजाचार्यकी कीर्तिसे परिचित होनेपर नारमुनिने उनसे मिलना चाहा। उन्होंने अपने एक शिष्यको कांचीपुरम् इसलिए भेजा कि वह रामानुजाचार्यकी बुला जाए। पर उन दोनोंके पहुँचनेसे पहले ही नारमुनिका देहान्त हो गया था। देहान्तके बाद भी उनके एक हाथकी तीन उँगलियाँ मुड़ी ही रह गई थीं। इसका मर्म किसीको मामूम नहीं हुआ। रामानुजाचार्य जब थीरपम् पहुँचे तब यह देखकर वे समझ गए कि नारमुनिकी तीन इच्छायें पूरी नहीं हुईं। उन्होंने कहा—“नारमुनिकी बड़ी इच्छा थी कि ब्रह्मसूत्र उपनिषद् और भगवद्गीताका भाष्य रचा जाए। उनकी इन तीन इच्छाओंको पूरा करना उनके शिष्यका कर्तव्य है। इन तीनोंका भाष्य भव भी लिखूँगा।” उनकी इस प्रतिज्ञाके बाद नारमुनिकी वे तीनों उँगलियाँ सीधी हो गईं।

नारमुनिके शिष्यके साथ श्री रामानुजाचार्य कांचीपुरम्में रहते थे। दोनोंकी पत्नियोंमें बार-बार झगड़ा हो जाता था। इसपर नारमुनिके शिष्य तो थीरपम् चले गए और रामानुजाचार्य गृहस्व-जीवन त्यागकर संन्यासी बन गए। वे बहुत दिनों तक थीरपम्में रहते रहे। वहकि मन्दिरके दैनिक कार्यक्रमोंका उन्होंने मुख्यवस्थित प्रबन्ध किया। वे अपने विधिपटाईतका ज़ूब प्रचार करते थे। अपनी विद्वत्ताके प्रभावसे उनके अईतवारियोंको उन्होंने अपना अनुयायी बना लिया था। उस समयका शीक राजा रामानुजके सिद्धान्तोंको नहीं मानता था। उसने रामानुजाचार्यको अपने पास बुलाया। पर रामानुज नहीं गए। वे जोक राज्यका छोड़कर मीमूरकी ओर चले गए और मैलकोट्टे नामक एक तीर्थस्वकमें रहने लगे। तन्नामीन राजाकी सहायता पाकर उन्होंने वहाँ श्री नारायणका मन्दिर बनवाया। आज भी इस मन्दिरके वार्षिक महोत्सवमें मीमूरके महाराजा सक्रिय सहयोग देते हैं।

रामानुजके दो प्रधान शिष्य थे। एकका नाम था “वेशान्त देविचर” और दूसरेका “मन्नाक मामुनि”। यद्यपि दोनों एक ही गुरुके शिष्य थे और

विशिष्टाईयके सिद्धान्तको मानते थे फिर भी दोनों ही भिन्न सम्प्रदाय बनाए। वेदान्त वैशिकरने 'बड़ कर्त' (उत्तरी कला) सम्प्रदाय बनाया और मनवान्त मामुनिने तेग कर्त (दक्षिणी कला) सम्प्रदाय बनाया। वेदान्त वैशिकर वेदोंको महत्त्व देते थे। वे वेद पाराम्यके समर्थक थे। मनवान्त मामुनि आठवारीके दिव्य प्रबन्धको महत्त्व देते थे और मन्त्रियोंमें भ्रुषीका पाठ करानेके पक्षपाती थे।

इसमें संदेह नहीं कि दक्षिणमें शैवों और वैष्णवोंके बीचमें संघर्ष हुए। परन्तु वैष्णवोंके इन दोनों सम्प्रदायोंके बीचमें कम संघर्ष नहीं हुए। इन सबपैकी प्रतिष्ठा नि कहीं-कहीं आज भी सुनाई पड़ती है।

इन मन्त्र कवियोंके साथ-साथ अन्य अनेक कवि अपने अपने ढंगसे काव्यकी रचना करते थे। इनमें "शयम कोम्बार" (शय-भाष्ट) नामक कविका नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने "कलिंगतु परणि" नामक काव्य रचा। "परणि" हिन्दीके रासो के समान मानी जा सकती है। इसकिए "कलिंगतु परणि" को ही "कलिंग रासो" मान सकते हैं। मालूम पड़ता है कि अभागा कलिंग रास्य उत्तर दक्षिण दोनों ओरसे शत्रुओंका लक्ष्य बना। तमिल देशके राजाजोने कलिपपर को आक्रमण किया उसीका वर्णन "कलिंगतु परणि" का विषय है। इस कविका अनुकरवकर अन्य कवियोंने भी "परणि" काव्य रचे।

म्याण्डवीं सदीमें तमिल साहित्यके चमकते हुए लक्ष्य कम्ब का उदय हुआ। वे चौक राम्यके निवासी थे। तंजावर जिलेके तेरिक्कन्नूर नामक गाँवमें उनका जन्म हुआ था। उन्होंने अपनी मातृभाषाके साथ-साथ संस्कृतका भी पढ़ा आध्ययन किया था। उनके "महद्यप्य" नामक दस्ताका आशय मिला था। इस आशयवताकी प्रशंसा उन्होंने अपनी रामायणमें की है। उनके जीवन-कालमें उनकी कीर्ति फैल गई। बड़े-बड़े राजा-महाराजा उनके आपमनसे अपनेको श्रेय मानते थे। उन्होंने अपनी रचनाके लिए कबा वस्तु तो वास्मीकिते ही पर उसको ऐसे सचिमें डाला कि उनकी रामायण वास्मीक रामायणसे एकदम स्वतन्त्र-सी बन गई। कम्बके पूर्व भी तमिलमें रामायणकी रचना हो चुकी थी। संवकालकी एक तमिल रामायणका उल्लेख भी हुआ है। किसी और कविकी रामायणका भी उल्लेख है। पर कम्बकी रामायणक सामने वे सारी रचनाएँ सुसौंदर्यके बावके लक्ष्य तुल्य बन गईं। आज तिरुव साहित्यमें कम्ब रामायणको एक आदरणीय स्थान प्राप्त है।

रामायणकी रचनामें कवि कम्बने इस बातका ध्यान रखा कि वह पूर्ण रूपसे तमिल काव्य हो। अयोध्याका वर्णन ही किसी तमिल नवरका-सा हुआ है। सरसुका वन नाम मावके लिए सरसुका है—पर सचमुच है कावेरीका। तमिल भाषाके वर्तमान कवियोंमें सुप्रसिद्ध नामकम्ब रामकिणम विश्वैने इस सम्बन्धमें कहा है —

“संस्कृतमें भी रामायण है और तमिलमें भी है। तमिल रामायणकी रचना संस्कृत रामायणके आधारपर ही हुई है। दोनोंमें रामायणकारकी ही कहानी है। पर तमिल रामायण संस्कृत रामायणमें एकदम भिन्न है। अक्षरकारके सङ्क्षयमें संस्कृत रामायणमें एककी प्रत्येक बातमें कम्बकी कृति वास्मीकिकी कृतिमें भिन्न है। वास्मीकिक रामायणमें जिस रामका सामान्य मानवके रूपमें वर्णन हुआ है, वह कम्ब रामायणमें आदि-मध्यान्त-उद्दिष्ट परमात्माके रूपमें वर्णित है। जहाँ संस्कृत रामायणमें सीता स्वयं श्रावण केन्द्र परककर उठाई गई जब अपमानित की गई बताई गई है, वहाँ तमिल रामायणमें मत्ती सीताको छूनेका साहस किनीमें नहीं था ऐसा वर्णित है। वास्मीकिक-रामायणमें अहिंसात्मक जान-बूझकर अपना सतीत्व नष्ट करनेवासी बताई गई है। कम्बकी रामायणमें वह निर्मल मनवासी शोष-उद्दिष्ट-मत्ती साम्बिकीके रूपमें वर्णित हुई है। वास्मीकिक रामायणमें बताया गया है कि जब लक्ष्मण सुग्रीवसे मिलन दिक्किल्ला गए तब रामके हाथों मृत्यु-श्रावण बालिकी पत्नी ताप मघपान करके सुग्रीवक माथ कामबीड़ा करती थी। पर तमिल रामायणमें बताया गया है कि वही ताप लक्ष्मणका शोष श्रावण करनेके लिए बैद्यके सारे लक्ष्मणसे युक्त होकर आई और रामको देखकर लक्ष्मणने रोषा—हमारी माताएँ भी अब (पिता बपरके देशलक्ष बाह) एसी ही रहती होंगी। इस तरह वास्मीकिक रामायणका हर पात्र भावपूर्णता और औचित्यक अनुसार तमिलके सचिमें बाला गया है।”

तमिल मायाका पोषण केवल राजा-महाराजाधिनो ही नहीं बल्कि धार्मिक मठों और मठधीनोने भी किया है। एसे मठोंमेंसे एक है “त्रिकल्पनन्दाक काशीवासी मठ”। संश्रित त्रिकल्पनन्दाक नामक गाँवमें यह मठ स्थित है। उस मठके प्रथम मठाधीन करीब सड़करके समयमें काशीमें जाकर रहते थे। इसलिये उस मठका “काशीवासी मठ” नाम पड़ा। कहा जाता है कि उस मठधीनने काशीमें कम्ब रामायणक प्रवचनोंका प्रबन्ध किया था और सम्भव है तुलसीदासपर उन प्रवचनोंका प्रभाव पड़ा हो। इसके लिए प्रमाणस्वरूप यह कहा जाता है कि आर्य सत्यदासमें विवाह या स्वयंवरके पूर्व घर-बधुको करवत माँगक-विवाहमें मिलनेका—एक तुलसीका दलनक—अवसर मिलता है। वास्मीकिक रामायणमें अनुप-यसक पूर्व सीता और रामके मिलनेका कोई बचन नहीं है। त्रिकल्पनन्दासमें पहले मायक-नायिका एक दूधरका देखन है—रूप-गुणोंमें मोहित होते हैं और उसके बाद विवाह-सूचक बंधन है। कम्बन अपन देशाचारके अनुसार स्वयंवरक पूर्व ही राम और सीताको परस्पर बधनका मौका दिया। तुलसीदास भी राम और सीताका ऐसा मौका दिया है। उन्होंने सीता और रामको एक ही समय पुष्पवातिकामें पहुँचाया है। तुलसी और कम्बकी रामायणमें कई अन्य स्थानोंमें भी विशेष प्रकारकी समानताएँ पाई जाती हैं।

यहाँ इस बचनमें हमें मही पड़ता है कि कम्बका तुलसीपर प्रभाव पड़ा था या नहीं। इतनी बात अबदय है कि वास्मीकिक कम्ब और तुलसीकी कृतियोंका

टीका इतनी अच्छी है कि लोगोंका यह विद्वान है कि स्वयं विश्वत्सुवर्गने नया अन्व लेकर परिमेकखगर नामसे अपनी ही रचनाओंकी टीका की है।

“तन्त्रिनाकिनियर” एक प्रसिद्ध टीकाकार थे। वे काम्यके अच्छे पारखी थे। आपने वैदिक ऋषि और वैदिक श्रमोंके सिद्धान्तोंका अध्ययन करके तीनों श्रमोंके सुष्ठु तर्कोंका परिचय प्राप्त किया। इन्होंने “ठोड काम्यियम्” और “किन्तामनि” आदि कई रचनाओंकी टीकाएँ लिखी हैं।

पेरिय वाण्णान पिळ्ळै”ने आठवारोंके ताकाविर प्रबंधमूखी टीका लिखी है। उनकी भाषा तमिल और संस्कृत मिश्रित मणिप्रवाल (खिचड़ी) षैलीकी थी।

तमिल साहित्यमें “विद्व कवियों की (विद्व कवि) एक परम्परा बनी है। इन विद्व कवियोंको हिन्दी साहित्यके अन्त कवियोंके समान माना जा सकता है। इन कवियोंकी भाषा सुसंस्कृत उच्च शैलीकी न होकर जन-भाषाएँकी बोलीकी शैलीकी थी। सिद्ध कवि एकेस्वरवादी थे। वे बिबबो ही पढ़ाया मालते थे। वे योग साधनापर अधिक जोर देते थे। कई सिद्ध कवि अपनी करामातोंके लिए प्रसिद्ध थे। कई कवि रासायनिक प्रयोगोंमें अधिक रुचि रखते थे। वे बाह्याचारोंका खंडन कर अपने मनसे ध्यान करनेकी सिखा देते थे। ऐसा माना जाता है कि सिद्ध कवियोंकी परम्परा अद्यत्स्यके कालसे ही बनी आई है। स्वयं अद्यत्स्य एक सिद्ध कवि माने गए हैं। अठारहवीं सदीमें “वायुमानवर” नामक एक कवि हुए थे। उनकी एक रचना “सिद्ध गणम्” है। उनमें उन्होंने सिद्ध कवियोंका परिचय देते हुए नाम सम्प्रदायके कई हिन्दी कवियोंका परिचय दिया है। तमिल भाषाके सिद्ध कवि अठारह हैं। इनमेंसे “पाम्पाट्टि सिद्ध” कुडुम्ब सिद्ध” अहर्ष सिद्ध” और “नविपुकर” वे बहुत प्रसिद्ध हैं।

सिद्ध कवियोंकी खर्चा करते हुए यह बताया उचित होना कि तमिल प्रवेचमें “सिद्ध वैद्य” नामक चिकित्सा पद्धति प्रचलित है। यह पद्धति वायुर्बुधते मिल है। इस पद्धतिके प्रवर्तक सिद्ध कवि माने जाते हैं।

पणिक भाषामें अनादि कालसे ही गिण और जिकपुवा या शैव श्रमका प्रचार रहा। पर अठारहवीं सदीमें इस शैव श्रमकी एक नई पद्धति शुरू हुई। इस पद्धतिके प्रवर्तक मेयकण्ठदेव (सत्य-अष्टादेव) तंजीर जिनेमें पैदा हुए। उन्होंने गिण श्रम कोषम् नामक ग्रन्थ रचकर उसमें शैव सिद्धान्त ध्यात्मका प्रतिपादन किया। गिण ही पति है वह आदि मध्य और अन्तरीह्य पढ़ाया है उस परब्रह्मकी सन्निध लगी है— आदि इन सिद्धान्तकी प्रमुख बातें हैं। जैसे मूर्धसे उत्पन्न ज्योति जीव राधिकी मूर्ति स्थिति और अय करती है, जैसे ही पति (गिण) ने उत्पन्न सती ही मूर्ति स्थिति और अयका कार्य करती है। सारी जीव राधि पशु है। यह पशु “पाशम्” में पककर पतिके पास पहुँचनेमें असमर्थ हो जाता है।

इस सब सिद्धान्तका प्रचार करनेके लिए अनेक मठ स्थापित हुए, जिनमें तीन बहुत प्रसिद्ध हैं। तिरुवनन्तूरु काशीवासी मठ का तो उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। तिरुवाडुपुरै आधीनम् और इरुमपुरम् (धर्म पुरम्) आधीनम्—ये दो मठ और हैं। इन तीनों मठोंमें सब सिद्धान्तके प्रचारके साथ-साथ तमिळ साहित्यकी और आस्तिक धर्मकी बड़ी सेवाएँ की हैं।

सब सिद्धान्तके समझनमें अनेक पुस्तकें लिखी गईं, जिनमें मुख्य ये हैं —

“सिख ज्ञान सिद्धर” इसके लेखक अरुण नन्दि सिवाचार्य मेयळंड वैद्यरके शिष्य थे।

“सिख प्रकाशम्” इसके लेखक उमापति सिवाचार्य बण्णव कुळमें उत्पन्न हुए। सब धर्म स्वीकार करके उन्होंने उसपर कई ग्रन्थ लिखे। “शेकिळ्ळार नायनार पुराणम्” “कोइळ पुराणम्” आदि उनकी रचनाएँ हैं।

तमिळ साहित्यमें “व्याकरण सम्बन्धी कई रचनाएँ हुईं, उनमेंसे कुछ मुख्य रचनाओंका परिचय यहाँ दिया जाता है —

माप्यल्लङ्कारिकै — यह छन्द शास्त्र है। इसने लेखक अमृत सागरर वाय्डी सदीके हैं।

नन्नुळ — अत्युत्कृष्ट व्याकरण ग्रन्थ है। इसके लेखक पञ्चनि मुनिवर वेय्डी सदीके हैं।

वीर शोभियम्” कुछ सिख नामके लेखकने यह व्याकरण “वीर शोभन नामक राजाके नामपर व्याय्डी सदीमें रचा था।

प्राचीन भक्त कवियोंकी यह परम्परा जूनीसदी सदी तक चली आई थी। ताम्बानवर सब भक्त कवि अठारहवीं सदीमें हुए थे। गूडुस्वामय बलानके बाद खुल्लाने सन्यास ग्रहण किया और सब शर्तोंका पर्यटन किया। उनकी कविताएँ उत्तम श्रेणीकी हैं।

उन्नीसवी सदीमें “रामलिय स्वामी नामक छठ कवि हुए। वे यीवना बन्धामें ही सन्धामी हो गए थे। वे समन्वयवादी थे—मन धर्मों और सम्प्रदायोंके समन्वयके पक्षपाती थे। इनका पंथ “समरस सन्धार्ग पथ” कहलाता है। कहते हैं कि एक कमरेमें जाकर उन्होंने बरबाबा बन्द कर लिया था। फिर जब वह खोला गया तब वे बड़ी लड़ी पाये गए। उनकी रचना “धरुटा जा” है।

तमिळ साहित्यमें कई मुसलिम कवियोंकी रचनाओंको आदरपूर्वक स्थापन मिला है। इनमें “उमर पुलवर” और “सन्धाडु पुसवर” (अबाद) प्रसिद्ध हैं। शीरककादि नामक मुसलिम अमीर तमिळ कवियोंका बड़ा आदर करते थे। उनका नाम “सैयद काबर” था जो तमिळमें “शीरककादि” बन गया।

तमिल साहित्यकी वर्धा करते हुए "बीर मा मुनिवर (बीर महामुनिजी) का नाम लेना आवश्यक है। वे इटली देखके-वे बीर ईसाई धर्मका प्रचार करनेके लिए सन् १७०६ ई में दक्षिण भारतमें आए। उनका नाम "कास्टेष्ट बेस्की वा। उन्होंने तमिल भाषाका अध्ययन कर उसमें अच्छा पाठ्यरथ प्राप्त किया। उन्होंने "तेम्बावनि" नावतूर कळम्बकम्" तोल्लु विळ्ळकम्" आदि ग्रन्थ रचे।

बहुपर संगीतक सम्बन्धमें दो बातें बताना आवश्यक है। आजकल दक्षिण भारतमें प्रचलित संगीत क्लासिक संगीत बहुलाटा है। इसकी पद्धति बीर बीली उत्तर भारतमें प्रचलित संगीतसे एकदम भिन्न है। बहुत प्राचीन कालमें तमिलका अपना एक संगीत क्रम था अनेक प्रकारके बाजे थे तथा अनेक प्रकारके राग प्रचलित थे। बीर और बौद्ध धर्मके कट्टर प्रचारकोंके कारण तमिल संगीत सम्बन्धी साहित्य तथा वाद्य यन्त्र कुप्त-श्राय हो गए। कुछ सदी पूर्व संगीतका जब उद्धार हुआ, तब राजकी गये संस्कृतवाच्य नाम प्रचलित हुए। अथि उत्तर माछके रागों और दक्षिणके राजकी नामकी समापता पाई जाती है ता भी अथय एकदम भिन्न है। उदाहरणके लिए तमिलका घैरबी नामक राग उत्तर माछीय "नैरबी" से एकदम भिन्न है। उत्तरकी घैरबी नामक राग उत्तर माछीय "तोकि" नामक रागमें अते है पर गानेकी—बलापकी पद्धति भिन्न है। अब प्राचीन संगीत साहित्य सम्बन्धी बीय शुक हुई है।

तमिल प्रवेशोमें मद्यपि तेवारम् विष्णुपत्त आदि तमिल नीचोका प्रचार बराबर रहता आया तो भी उनका क्षेत्र मन्दिर-मठ आदि धार्मिक क्षेत्रों तक ही सीमित था। संगीत समाजों विवाह आदिमें अधिकतर तेलुगु या संस्कृतके नीत ही माये अते थे। प्रसिद्ध संगीतकार त्यापराज तमिल प्रवेशमें पैदा हुए थे। वे बही रहते थे फिर भी मुनकी सारी रचनाएँ तेलुगुमें हुई थीं। उनके कुछ बीत संस्कृतमें भी है, पर तमिलमें उनका कोई नीत नहीं है। अद्यतनी सदीमें बोवाल इप्पल मारली नामक एक कवि हुए। वे त्यापराजकी पद्धतिपर तमिल भाषामें "कीर्तन" रचने लगे। उनके लम्बानार अरिज कीर्तन बहुत प्रसिद्ध है। अब तमिल वीतोंकी बहुत उत्पत्ति हुई है।

उन्नीसवी सदीमें अब सारे देशपर ब्रिटीशका शासन स्वानी रूपसे जम गया तब देशकी सभी भाषाओंका एक नया ही बुग मारम्भ हुआ। शिक्षाका एक नया क्रम प्रचलित हुआ। उसके लिए नय इनकी पाठ-पुस्तकों (readers) की आवश्यकता हुई। नये इंग्ले ध्याकरणकी आवश्यकता हुई कविताका रूप बदला विषय बढ़ा और शैली भी बदली। मन्त कविताके लिए कोई स्थान नहीं रहा। नये समाचारपत्र निकलने लगे। नये इंग्ले उपन्यास निकलने लगे। नये पुरानी पाठ्यपुस्तकें अतिशय भाषाके स्वातन्त्र्य परक नुम्बर भाषाका प्रचार बढ़ा। तमिल भाषामें शीघ्र ही अपनेकी जिस नये वातावरणके अनुकूल बना लिया।

तमिल भाषामें मीनाक्षी सुन्दरम् पिळ्ळै मये युगके प्रवर्तक माने जाते हैं। ये स्वयं उत्तम श्रेणीके विद्वान् थे। इनकी प्रेरणा पाकर अनेक लक्ष्यबद्ध भाषाके लेखक बने। उन लेखकोंमें म केवल उत्तम साहित्यकी ही रचना की बल्कि कई प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार किया और तमिल यक्षकी कई शैली बलाई।

उन्नीसवीं शतीके उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शतीके प्रथम दो दशान्तरिके साहित्यकारोंमें वीर नामकम् पिळ्ळै, सूर्य नारायण शास्त्री सुन्दरम् पिळ्ळै राजम् अय्यर, माधवय्या महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यर, व वें मु अय्यर और सुब्रह्मण्य भारती बहुत प्रसिद्ध हैं।

वेदनायकम् पिळ्ळै ईसाई वे और त्रिका मुसिफ थे। उन्होंने आधुनिक रूपके 'प्रताप मुहम्मियार चरित्तरम्' नामक सर्वप्रथम तमिल उपन्यासकी रचना की। उनकी अन्ध कई रचनाएँ भी हैं।

"सूर्य नारायण शास्त्री" तमिलके बड़े विद्वान् थे। उनके तमिल प्रेमकी पहचानका अनुमान इस बातसे किया जा सकता है कि उन्होंने अपना नाम 'परिचिमाश कर्नीय्यर' कर लिया। "सूर्य नारायण शास्त्री" का बहु शुद्ध तमिल रूप है।

तमिल मोक्षिबल्लार" नामक उनकी तमिल भाषा सम्बन्धी रचना बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने इतिहास विज्ञान आदिपर कई पुस्तकें लिखवाईं।

सुन्दरम् पिळ्ळैने मनोन मनीयम्" नामक एक नाटक लिखा। "तिरु बाल तन्मय्यर" नामक प्राचीन शिवभक्त कविका काल निर्भय तिरुविदाकूर (ट्रिबनकोर) के राजवंशका इतिहास आदि उनकी अन्ध रचनाएँ हैं।

"राजम् अय्यर" बड़े उत्साही लक्ष्यबद्ध थे। उनपर स्वामी विवेकानन्दका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। उनके "कमलाम्बाक चरित्तरम्" को तमिल उपन्यास साहित्यमें बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ है। बत्तीस वर्षकी ब्रह्मचर्यमें ही उनका देहाण्त हो गया था।

श्री माधवय्या एक अन्ध उपन्यासकार और कहानी-लेखक थे।

महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यर तमिल ताठा (दादा) कहलाते थे। उन्होंने कई प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार किया। प्राचीन ताड़पत्तोंकी खोजमें उन्होंने बहुत कष्ट उठाया। कई प्राचीन रचनाओंकी प्रामाणिक प्रतियाँ प्राप्त कर वे उन्हें प्रकाशमें लाए। उनके अनेक दिव्य भाव भी प्राचीन ग्रन्थोंकी खोज और नव साहित्य सृजनमें कबे हुए हैं।

व वें मु अय्यर प्रसिद्ध वेद्यभक्त थे। बैरिस्टरीकी शिक्षा पानेके लिए वे त्रिम्पल्ल गए। वहाँ वे वीर साबरकरके सम्पर्कमें आए। भारतकी स्वतन्त्रताके लिए आतंकवादियोंके साथ मिलकर आन्दोलन करने लगे। अंग्रेज सरकार उन्हें कैद करना चाहती थी, पर वे किसी तरह बचकर पाण्डिचेरी चले गए। वहाँ अरविन्द-

शोष और मुहुर्याय्य भारतीके साथ रहने लगे। अंतमें उसके बीधीबारी बने। आप "देश भक्तानु" नामक तमिल दैनिक पत्रका सम्पादन करते थे। उनकी कई कहानियाँ बहुत लोकप्रिय हैं।

तमिलका सर्वप्रथम दैनिक पत्र "सुदेश मित्तिरनु" है। श्री मुहुर्याय्य अय्यर नामक प्रसिद्ध देशभक्तने यह पत्र आरम्भ किया। आज दैनिक तमिल पत्रोंमें उसका स्थान सर्वोपरि है।

अंग्रेजी शिलाका प्रभाव भारतवर्षमें तमिल भाषा-भाषियोंपर जितना पड़ा उतना अन्य लोगोंपर नहीं पड़ा। तमिल भाष्योंने अंग्रेजीकी बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त की। वे उसके ऐसे प्रेमी हो गए कि अनेक परिवारोंमें बरेलू बोक्-बालमें अनेक अंग्रेजी शब्द अनायास बीच-बीचमें आ जाते थे। सार्वजनिक क्षेत्रोंमें तो केवल ग्रामिक संस्थानोंमें और पुराण-ग्रन्थनों आदिमें तमिलका प्रयोग होता था। ऐसे अक्षरोंमें भी स्वागत भाषण परिवर्तन करना बड़ाई देना सम्भवतः समर्थक आदि अंग्रेजी भाषामें ही होते थे। तमिलमें बोलना तो आत्म-भारतके लिए हानिकर माना जाता था। ऐसी स्थितिमें मुहुर्याय्य भारती काशीपुरम्के कृष्णस्वामी शर्मा मुहुर्याय्य पिता व वे सु अय्यर, सत्यमूर्ति आदि देशभक्तोंने तमिल भाष्योंमें नव जीवन फूँककर तमिल भाषाको महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

• • •

सुब्रह्मण्य भारती

[कवि-परिचय]

भी देशधर्मों व्याप्त थे और उसी प्रकार नरम बलवाले भी सारे देशमें फैले हुए थे। बीसवीं सदीके आरम्भमें हमारा देश स्वराज्यका मन्त्र अपने बना। नरम बलवाले केवल प्रस्ताव पासकर अधिक अधिकारकी माँग पेश करते थे। आठपन्नाही पास तथा बलका प्रयोगकर स्वतन्त्रता पानेका प्रयत्न करते थे। इन दोनोंके बीचमें नरम बलवाले लोग जनतामें जागृति पैदा करके स्वराज्य पानेका प्रयत्न करते थे।

सन् १९१४ में यूरोपमें प्रथम महायुद्ध छिड़ा। उसका प्रभाव सारे संसारपर पड़ा—भारतपर भी पड़ा। उसी समयके स्वतन्त्रतावादी बलिदानियोंके अपने काम पूराकर भारत छोड़ने के। अगम्य उसी समय तिलक महापुरुष छह वर्षके कारावाससे मुक्त हुए थे। उन्होंने दिनोंमें एनी बसण्टने होम रूल आन्दोलन शुरू किया था। इन परिस्थितियोंका परिणाम यह हुआ कि देशमें एक नवीन एकात्म भाव जागृत हुआ। तिलक महापुरुष देशके सर्वोत्तम नेता बने। उनके नेतृत्वके कुछ समय पहले ही गांधीजी सक्रिय राजनीतिक आन्दोलनमें भाग लेने लगे थे। जब लोकमान्य तिलकका देहाण्ट हुआ तब मार्ग उन्होंने अपने नेतृत्वका भार गांधीजीको सौंपा।

तिलक महापुरुषके बलिदान भारतीय समर्थकोंमें मुझझुझु भारतीय प्रमुख थे। गांधीजी जब ब्रिटेन भारत आये तब भारतीय उनसे मिले उन्हें आशीर्वाद दिया। इस घटनाके कुछ ही समय बाद भारतीयका देहाण्ट हुआ।

जब भारतके सार्वजनिक जीवनमें जागृति उत्पन्न हुई, तब एनी बसण्ट, बिद्या भुवनेश्वरदास बनर्जी आदि नेताओंकी ज्योति मन्त्र पड़ गई थी।

ब्रिटेन भारतमें कविद्वय मुझझुझु भारतीय गांधी युगके आरम्भके लिए पूर्ण तैयारियाँ करनेवालोंमेंसे एक थे। अपने साप्ताहिक पत्रों और सुमधुर गीतोंके द्वारा उन्होंने जनतामें नया उत्साह पैदा किया—नई जान फूँकी। भारतीय जनता-कवि थे। यदि स्वतन्त्रताके लिए प्रयत्न करनेका प्रयत्न न होता तो भारतीयकी रचनाएँ सम्भवतः और ही ढंगकी होतीं। यह मानना पड़ेगा कि भारतीयने अपने गेहों और पीठों द्वारा अपने काँधपर जितना प्रभाव डाला उतना ही प्रभाव उस समयकी परिस्थितियोंमें भारतीयपर भी डाला।

जन्म और शिक्षा

ब्रिटेन भारतकी बलिदानियों सीमामें पूर्ण कालमें पाण्ड्य राजाओंका प्रभुत्व था। उसके बाद अटक छोटे-मोटे राजा हुए। अन्तर्गत अटक के बाद वहाँ केवल कई छोटे-बड़े राजा रह गये जो राजा कहलाते थे। "एडुमापुरम्" एक ऐसी ही बलीबारी थी। यह स्वान्तिष्ठानके जिल्लेमें है। इस बलीबारीकी करीब पाँच-छह कावकी वादिक बामदनी थी। इस बलीबारीके किन्नराणि अम्बर नामक एक दरबारी थे। उनका गणित शास्त्रसे बड़ा प्रेम था। मुझझुझु

भारतीय चिन्तनस्वामी अय्यरके पुत्र ब। उनका जन्म मनु १८८२ में हुआ। बचपनमें लोभ उनको मुण्यम्या" नामसे बुकारते थे। जब वे पाँच सालके थे तब उनकी माताका देहान्त हुआ। उनके पिताले दूसरा ब्याह कर लिया।

चिन्तनस्वामी अय्यरकी बड़ी इच्छा थी कि मुण्यम्या" बड़ा मणितम बने और आई सी एम में उत्तीर्ण होकर बड़ जोहूदेवर बाने। पर भारतीयका मन बचपनसे ही कविताकी ओर प्रवृत्त हुआ। वे पितासे बहुत डरते थे। इस डरके कारण अपने समययत्क बालकोंके साथ बसते भी बहुत कम थे। किसी अप्रिय कविके बानेमें कहा जाता है कि वह बचपनमें ही कविता रचन लगा था उसमे बट्ट हाकर उनके पिताले खूब मारा कि वह जाग कविता न रच तो लड़का मार जाते-खाते अपने पितासे बोला —

“पपा पपा पिटी डक

तो मोर झूँतत बिल बाह मेक”

भारतीयकी भी कुछ ऐसी ही बात थी। पिताकी पुत्रको डींते कि क्या बात है? मुण्यम्या तु मणितपर ध्यान नहीं देता। तेरा तो बालकाल है यही सीखनका समय है” तो भारतीय पिताको बचाव देनेका माहम तो नहीं करते थे पर मन-ही-मन मुनमुनाते बाल काल पाक काक माक यह सब धाक है। मठसब यह कि अनुमानवास बच्चोके संग्रहका उनको बचपनमे ही बड़ा मौज था।

सिखा प्राप्त करनेके लिए यथामन्य उनको पाठमातामें बाधित किया गया। पढ़ाईमें वे बहुत ही लामान्य थे पर कविताएँ बराबर करते रहते थे। पाठपत्रममें विद्यार्थियोंको प्राचीन कवियोंकी रचनाएँ कष्टम्य करके बर्नमें मुताभी पढ़ती थी। भारतीय कवियोंकी रचनाएँ मुतानमें तो बममर्ष न अपनी ही एक-को कविताएँ मुनाते थे। इसपर अय्यापक और विद्यार्थी उनको ध्यंगमें “भारतीय” (भरस्वती—विद्यार्थी) कहा करते थे। एक बार भारतीय बर्नमें न कोई प्राचीन कविता मुना सके न अपनी ही रचना मुना सके। अय्यापकन कहा—“तू तो बड़ा बालमेव (एक प्राचीन कवि—इस शब्दका अर्थ है प्रत्ययका बाधक) है कविता क्यों नहा मुनावा?” लट भारतीय बचाव दिया— मुदगी विष ता कित्तीकी आज्ञामे बूटि नहीं करता। यह तो स्वेच्छामे ही बरसा करता है। यह मुनकर अय्यापक पुत्र भी हुए और भाव ही भाव नाराज थी। कुछ दिन बाद छात्रम उमो मुदको एक रूप मुनावा। सत्र कवितामें केसेके पेड़क माय-माय मुपाठीके पेड़का भी बचन था। अय्यापक बहुत प्रमन्न हुए। उन्होंने एक सभा बुलाई। उन्होंने पहले उपहाममें जी भारतीय की उपाधि दी थी बड़ी उपाधि अब उन्होंने बम्भीरठाके साथ ससमारोह मुण्यम्याको दी। तपीमे उनका उपनाम भारतीय ही अधिक प्रचलित हो गया।

माय्की सदा ही अन्य परम्पराका खण्डन करते रहे। प्राचीन कवियोंकी कविताओंका मतभेद समझ बिना ठोठेके समान रचना उन्हें पसन्द नहीं था। पर प्राचीन कविताओंका अध्ययनकर उनकी विद्यपताओंका परिचय प्राप्त करनेमें उनकी बड़ी रुचि रचि थी। वे काबितासके पुबारी ठो ने ही ब्रिज कवियोंकी रचनाओंके प्रति भी उनके मनमें बड़ी रचि थी। उन्हें बिद्येय कसे सेली और कीट्स (Shelly and Keats) की रचनाएँ बहुत पसन्द थी। उन्होंने एट्ट्यापुरम्में “सक्तिमन संघ” की स्थापना भी की थी।

विवाह

सन् १८९७ में खोरह बपकी आयुमें माय्कीका विवाह हुआ था। उस समय उनकी पत्नी “वेस्लममा” केवल सात वर्षकी थी। उन दिनों तमिल शास्त्रोंमें विवाहका समारोह पाँच दिन तक रखा करता था। पहले दिन बरातका आगमन होता था दूसरे दिन विवाह संस्कार होता था और पाँचवें दिन विवाह समारोहका समावर्तन होता था। बीचके तीसरे और चौथे दिन सामान्य मनोरंजनका कार्यक्रम रहता था। शामको बर-बधू एक बूझरेके पाँचमें महाभर लगाया करते। वह कार्यक्रम नर्सपू कहलाता है। रातको भोजनके बाद बर-बधू झूकेपर बैठकर झूकते हैं। यह कार्यक्रम “ऊँरल” कहलाता है। इन अवसरोंपर बर और बधू दोनों पक्षकी महिलाएँ (कभी-कभी पुरुष भी) सम्मिलित होकर बुधिया मनाया करती हैं। इन अवसरोंपर गानेका कार्यक्रम अनिवार्य रूपसे रहता है और बधूका गाना तो होता ही है। माय्कीके विवाहमें बेभारी सात वर्षकी बधू या नहीं लकी। तो कविवरने सुरलत गीत रचकर अपने मुमजुर कण्ठसे गुनाया। आबकल पाँच दिनोंके समारोहकी प्रथा लठ ही गई है—पहले दिन बरका स्वागत और दूसरे दिन विवाह संस्कार होता है। विवाहके दिन “नर्सपू” “ऊँरल” आदि कार्यक्रम भी किसी-न-किसी तरह समय निकाल किया जाता है।

काशीवास

विवाहके कुछ दिन बाद ही माय्कीके पिताका देहान्त हो गया था। उनकी बूझरी पत्नीसे उनके दो लक्ष्मणें थीं। सोनह वर्षकी छोटी उम्रमें ही माय्कीपर सारे परिवारके धारनका भार आ पड़ा था। पिताकी कोई सम्पत्ति नहीं थी रात्राभवका विरवात नहीं था। वे किसी परीक्षामें उत्तीर्ण नहीं ने कि वही कोई नौकरी प्राप्त कर सकती। इसलिए वे इस बातका अनुभव करने लगे कि स्कूलो शिक्षा प्राप्तकर किसी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए बिना बुद्धुम्बके निर्वाहका भार उठाना कठिन हो जाएगा। परीक्षागत उन्होंने अपनी पत्नीको उसके नामके भेज दिया उनकी विनाया थी अपने बच्चोंके साथ अपने मायके चली गईं। उन दिनों माय्कीकी पत्नी

बायींमं रहती थी। उसके बुझानेपर माय्या काधी जके गये। फूझी निस्तवान भी इतकिए अपने मदीयका बहु बड़े प्रेमसे कासन-पासन करने कथी।

उन दिनों तमिल युवकोंमें बुर कम्बी चोटी रखनेकी प्रथा थी। बाबकम तो पाश्चात्य ढंगपर बाक कटवानेकी रीति बस पड़ी है। तमिल प्रेम्हके हाहाक कौम बाब भी मूँछे नहीं रखा करते। भारती तो बस परम्पराके निराधी थे ही। अतः काधी पहुँचकर वे पाश्चात्य ढंगसे केशोंको बढ़ाने लगे। बीरवासुबक मूँछे भी बढ़ाने लगे। उनके फूफाजीको यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मन्मूबक माय्याकी अपने साम बैठकर खाना खानेसे मना कर दिया। भारतको इस बातसे निरुपेय पुत्र नहीं हुआ। फूफाजीके खानेके बाद या कभी-कभी पहले भी अपने मोहनसे निवृत्त होकर पढ़ाईके कामपर वे जके कामा करते थे।

भारतीके फूफाजी प्रतिदिन बड़ी निष्ठाके साथ "मटपज" भगवानकी मूर्तिकी पूजा किया करते थे। बहु मन्से पूज अक्षत मनेच बादि सामधी बना करते और ध्यात आवाहन बादि सोझीं उपचारोसे युक्त पूजा करते थे। उन उपचारोंमें भक्ति-गीत गुगानेका भी एक मन् रहता है। इसके लिए उन्होंने "बोडुबार" (पाठक या बापक) नामक बादिके एक युवकको नियुक्त किया था। उसका प्रतिदिनका काम था—पूजाके लिए पूज बना करके लाना और समयपर भक्तिगीत गाना। एक दिन वह पूजाके समय उपस्थित नहीं था। फूफाजी चाहते नहीं थे कि गीत गुगानेका मन् टूटे। वे बहुत बेचैन हो गए। उनकी पत्नीने उस समय उनसे कहा कि "मुप्यया तो बहुत अच्छा गाता है, उसीका जानेके लिए क्यों न बुलाया जाये?" माय्याको बुलाया गया। माय्याने ऐसे भावपूर्वक गये गीत गाकर गुगाना कि फूफाजी मन्मूबक-से हो गए।

जीवन संघाम :

काधीमें भारती सेष्टक हिन्दू कासेज में पड़ते थे। अन्य विषयोंके साथ-साथ उन्होंने संस्कृत और हिन्दीका भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। मैट्रिककी परीक्षामें वे प्रथम स्थानमें उत्तीर्ण हुए।

पढ़ाई पूरी करके भारती फिर एट्टमापुरम् पहुँचे। राजा साहबने उन्हें काधीसे घर पहुँचनेका जर्न देकर बुलाया था। राजा साहब उनको अपना दरबारी बनाकर सदा अपने पास रखना चाहते थे। भारती पहुँचेसे ही बड़े रेष-मस्त थे। काधीवासमें उनका मन रेष-प्रम और स्वतन्त्रताके भावोंसे और भी अधिक भर गया था। मैदिनी और गैरिबास्ती जैसे स्वतन्त्रताके पुकारियोंके वे मस्त बन गये। वे उनकी प्रवृत्तियों में रचन लगे। उन्हें राजा साहबका रेष-जायन और निरुपरोधी जीवन अच्छा नहीं लगा। वे राजा साहबके मुँहपर ही उनकी कड़ी आलोचना करने लगे। सदा अपनी प्रवृत्तियाँ ही गुननेके भारी राजा साहब

ऐसी आलोचना भला क्यों करते? भारतीयोंको राजा साहबके दरबाने पड़ा। आजीबिकाके प्रबन्ध उनके सामने भयंकर रूप धारण कर लिया। नगरके सेतुपति हाईस्कूलमें तमिल भाषाके शिक्षक बने।

उन दिनों हाई स्कूलमें भाषा शिक्षककी बड़ी बुद्धि थी। वे केवल अपनी भाषाकी जानकारी रखते थे—अन्य विषयोंकी जानकारी प्राप्त न कोई प्रयत्न नहीं करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि न स्कूलके न ही उनका आदर करते थे और न विद्यार्थी। भारतीय ऐसे भाषा शिक्षक हैं उन्हें कभी यात्राके कारण जीवनका कुछ अनुभव हो गया था। ताल्कालिक एक परिस्थितिका ज्ञान था। अँगरेजीकी भी अच्छी जानकारी थी। अतः सब उनका बड़ा आदर करते थे।

पत्रकार भारती

इसके कुछ समय पूर्व ही मद्रास शहरमें "सुदेश मित्र" (मित्र) नामक एक तमिल दैनिक पत्र निकलने लगा। उस समय मद्रास बो-लींग अँगरेजी दैनिक पत्र तो निकल ही रहे थे पर तमिल दैनिक पत्र एक था। श्री मुहम्मद अहमद नामक एक प्रसिद्ध वैद्यकज्ञानके यह पत्र आरम्भ पत्र दिनोंमें ऐसी भाषाओंके पत्र चलानेमें बड़ी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती विशेष रूपसे तमिल प्रदेशमें परिस्थिति और भी कठिन थी। तमिल भाषा पंडित थे वे वैद्य-विद्येकी स्थितियोंका परिचय प्राप्त करनाकी आवश्यकता नहीं रखते थे। जो ऐसी क्षमता रखते थे वे मातृभाषाकी सेवा करना कोई बौद्धिकी बात नहीं मानते थे। ऐसी परिस्थितिमें श्री श्री मुहम्मद अहमद मुहम्मद भारतीयोंकी और आह्वान हुआ। वे भारतीयोंके उत्साह बोधने के प्रयत्नमें प्रभावित हुए। यद्यपि वे भी पहले वैद्यकज्ञान के तो भी कुछ गरम स्व थे। उन्हें डर था कि भारतीयोंके यह पूरी स्वतन्त्रता दे दी जाये तो वे भाग जाकर कुछका कुछ लिख बैठेंगे। इसीलिए उन्होंने भारतीयोंके अपने तमिल उपसम्पादक बनाकर केवल विदेशी समाचारोंके अनुवाद तथा अन्य समाचारोंका प्रकाशन करवा दिया। अत्यन्त कठिनका भार भी भारतीयोंपर नही भारतीयों यह काम स्वीकारकर मद्रास शहरमें जाकर रहने लगे।

सब राजाकी स्तुति करते रहने या निरे अज्ञानके बने रहनेकी यह पत्र-सम्पादनका काम भारतीयोंके मनके कुछ अधिक अनुकूल था। पर यहाँ पर पूरा उत्साह नहीं मिला। विद्यार्थियोंका अत्याचार और स्वदेशवासियोंकी व और संकुचिततासे वे दुःखी थे—अपना सम्बन्ध मुनाफके लिए बालुत थे। अतः... इच्छाकी पूर्ति के बीच-बीचमें गीत रचकर तथा उन्हें सार्वजनिक समारोहोंमें कर देने थे पर समाचारपत्रों द्वारा अपने इन विचारोंको प्रकट नहीं कर पाते थे।

स्वदेशी लौका कम्पनी

इस बीजमें देशमें कई महत्वपूर्ण ऐसी बटनाएँ बटी जिनसे उनके उत्पाद को और भी अधिक बढ़ाया गया। भारतीय सन् १९४४ में मद्रास पहुँचे। सन् १९४५ में बंग-विभाजन हुआ। राजनैतिक क्षेत्रों में बन्दे मातर्म मन्त्रका रूप होने लगा। भारतीयोंने इस मन्त्रको लेकर बलक नीतियोंकी रचना की। सन् १९०६ में बी. बी. बिबम्बरम् पिळ्ळै नामक बंधुमंडल बहाबका कारावार शुरू किया। प्राचीन कालमें तमिल प्रदेशके बहाब दूर-दूर बेशोंतक पहुँचते थे। अंग्रेजोंके राज्यमें शुरू-शुरूमें भारतीयोंका एक भी बहाब नहीं था जितन भी बहाब थे सभी बिबेसियोके थे। भारतवर्षके समुद्रतीर बन्दरगाहोंके बीच भी कहीं कोई देशी बहाबका जाया गमन नहीं होता था। बिबम्बरम् पिळ्ळैने "सुत्तुकुडी (अंग्रेजीमें टूटिकोरिन) से सिहल (संका) के कोलम्बो नगरतक बहाब बलानका निश्चय किया। लार्डो रपमोंकी पूंजी लुकाकर "स्वदेशी स्टीम नैविगेशन कम्पनी" नामक संस्था कायम करके उन्होंने एक बहाब खरीदा। बहाब दोनों बन्दरगाहोंके बीचमें चलने लगा। चलताने इस नव प्रयत्नका बहुत समर्थन किया। पर बिबेसी ब्यापारियों और सरकारने कुछ ऐसा बन्ध रखा कि यह कारोबार बन्ध ही न सका। परिणामतः लार्डो रपमोंकी पूंजी डूब गई। बिबम्बरम् पिळ्ळैपर राजबोहका बोध लगाया गया। उन्हें कठिन कारावासका बन्ध दिया गया। उन्हें जलमें डूबकी तरह कोल्लू बलानका काम दिया गया। बिबम्बरम् पिळ्ळै भारतीयोंके मित्र थे। उनपर किय गए इन अपमानकारोंका भारतीयोंपर बहुत प्रभाव पड़ा।

"इन्दिया और "बाळ भारत"

सन् १९१९ में कलकत्तेमें राष्ट्रीय मञ्चसभा (काँग्रेस) का अधिवेशन बाबासाई लौगेजीकी अध्यक्षतामें हुआ था। भारतीय उसमें गए। अधिवेशनके बाद मद्रास कौटनके पुत्र डे सिस्टर निवेदितासे मिलन गए। इस मुलाकातका परिणाम यह हुआ कि भारतीय स्त्री-स्वातन्त्र्य तथा सर्व-जाति-समन्वयके समर्थक बने।

भारतीय अपने बिचारोंको प्रकट करके लिए बाहुर थे। कलकत्तेसे कौटनके बाद उन्हें इस बातका सुखबसर प्राप्त हुआ। स्वदेशी आन्दोलन शुरू प्रबल हुआ। स्वदेशी वस्तुओंका ब्यापार बलानके लिए एक "भारत मञ्च" स्थापित हुआ। तमिल और अंग्रेजीमें एक-एक साप्ताहिक पत्र निकालनेका निश्चय हुआ। उत्पादी बंधुमंडल बाबुमंडल आर्थिक सहायता देनेको तैयार हुए। भारतीय दोनों साप्ताहिक पत्रोंके सम्पादन और मञ्चकारके व्यवस्थापक बने। तमिल पत्र "इन्दिया और अंग्रेजी पत्र "बाळ भारत" नामसे प्रकाशित हुए। भारतीयोंका वैदिक "सुदेश मिस्त्रिज" पत्रसे सम्बन्ध छूट गया।

उन दिनों सामान्य जनताकी अभिवृत्ति सार्वजनिक कार्योंमें बहुत कम थी। कुछ पढ़े-लिखे लोग कांग्रेसके गरम बलका समर्थन करते थे। कुछ लोग छिपे-छिपे बोझा-बादलका संग्रह करनेके स्वप्न देखा करते थे। तिलक महाराजके विचारोंका समर्थन करनेका किसीको साहस नहीं होया था। भारतीयों ने यह काम अपने ऊपर लिया। अपने दोनों पक्षों द्वारा उन्होंने मज-जायतिका संघ फूँका था। सार्वजनिक समारोहोंमें नये-नये गीत गाकर आप लोगोंमें उत्साह पैदा करते थे।

उन दिनों महाशयके एक प्रसिद्ध शेषकृत भी श्री कृष्णस्वामी अय्यर थे। (यहाँपर अप्रासंगिक होमैपर भी यह कहना अनुचित न हीमा कि उन १९१० में ये शेषकृत काशीकी नायरी प्रचारिणी समाजके एक समारोहमें सम्मिलित हुए और उससे प्रभावित होकर उन्होंने घोषित किया कि हिन्दी ही भारतकी राष्ट्रभाषा बन सकती है और उसका बखिब भारतमें प्रचार किया जाना चाहिए। ये महामना भासनीयजीके आप्त मित्र थे। इनके पुत्र आज भी बखिब भारत हिन्दी प्रचार समाजके सचिव समर्पक हैं।) ये गरम बलके थे। भाषी अपने पत्रोंमें उनकी कड़ी आलोचना करते थे।

गरम बलके नेतासे भेंट

एक बार एक मित्र भाषीको श्री कृष्णस्वामी अय्यरके पास ले जाना चाहते थे। भाषी बलकेको ठीमार नहीं थे पर मित्रके अनुरोधसे उन्हें जाना ही पड़ा। मित्रने कृष्णस्वामी अय्यरसे केवल "एक सहीयमान कवि बहुर भाषीका परिचय कराया। उनके भीत मुनकर अय्यर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कविको (१०) व पुरस्कार देकर कविके बीतोंकी रस हृषार प्रतिदी जनघाई और उन्हें सारे उमिल प्रदेशमें भेंटवाई। बाबको जब कविके नामका पठा जगा तो श्री कृष्णस्वामी अय्यर बोले—“राजनीति अलग बात है साहित्य अलग। सम्पादक भाषीको मेरा कष्टन करकम अधिकार है पर कवि भाषीका बाहर करना मेरा कर्तव्य है। मुझे सम्पादक भाषीसे कोई डर नहीं है कवि भाषीके प्रति मेरी बड़ी यदा है।

सूरत कापिस

वन् १९०७ में सूरतमें जो काँग्रेस हुई थी उसमें भारतीय भी गये थे। महाशयके कई शबयुक्त उनके साथ गए। भाषीके मनमें पहुँचते ही तिलक महाराजके प्रति बड़ी यदा थी। सूरतकी यात्राके बाद तो तिलक महाराज उनके आराध्य देव ही बन गए। ये कहा करते थे—“जो नेता केवल अपने बखिबना काम रखा है अपने अनुयायियोंकी मुझ-मुविवाओंका काम नहीं रखा वह तो निरा नेता है। पर जो नेता सब अपनेके अधिक अपने आयायियोंकी विन्ता करता है, वह मनुष्य नहीं देवता है। सूरतमें प्रतिदिन तिलक महाराज हमारे आवाचमें

बातें और हर प्रतिनिधित्वे पूछते थे कि तुम्हें कोई तकलीफ तो नहीं होती है? किसी बातकी मानस्वकता हो तो निस्संकोच मानो। वे तो सबमुच देवता ही न !

तिसक महाराजसे भेंट

मूछ पहुँचते ही भारतीयका प्रथम प्रयत्न तिसक महाराजसे मिलनेका था। उन्होंने तिसकका नाम मुता या पर जलसे कभी मिले नहीं थे। मूछ छहर गया था बहानी भापासे भी वे परिचित नहीं थे। उनके पहुँचनेके कुछ समय पूरा ही नहीं बीरका पानी बरसा था। रास्तेपर चलना कठिन था। फिर भी वे सोत्साह निकल पड़े। बूटन तकके कीचड़में चलते हुए भारतीय कीचड़से मण्डपकी ओर गए। वहाँ एक स्थानपर उन्होंने देखा कि कुछ लोग पानी बहानके सिरे नाके काट रहे थे और एक सज्जन हलमें छला लिये उन लोगोंको मार्गदर्शन कर रहे थे। भारतीयने सीपही अपने इष्टदेवको पहचान लिया। न तो पानीकी ही परबाह की न कीचड़की। वहीपर बटते उन्होंने भूमिपर गिरकर इच्छत प्रणाम किया।

मूछ कीचड़के बाह सरकारने अपनी हमन नीतिकर आरम्भ किया। यद्यपि "इन्दिया" के सम्पादनका साध काम भारतीय ही करते थे—जारे सेखोंका उत्तर दायित्व उन्होंने वा तो भी सरकारकी कागज-यंत्रोंमें इस पत्रके सम्पादनक पत्रपर "धीनिबासन" नामक एक सज्जनका नाम छपता था। भारतीयका एक सेख आसपजनक माना गया सरकारने पत्रपर कागजी करवाई की। पत्रके सम्पादनके नाते इच्छ भुक्तता पड़ा "धीनिबासन" को। उन्हें पाँच वर्षके कठिन कारनामका पत्र दिया गया था।

पाण्डित्येरी प्रवास

छहर सरकार भारतीयको किसी-न-किसी तरह पकड़कर इच्छ देलके यत्नमें भी और उधर उल्लाही नवयुवकोंका प्रबल था कि भारतीयके सम्पादनकमें इन्दिया पत्र बचकर निकलता रहे। मद्रासे बलिचमें करीब एक सौ मीलकी दूरीपर समझके किनारे पुण्डित्येरी नामक एक नगर है। इसे पाश्चात्य लोग पाण्डित्येरी कहते हैं। यह उन दिनों प्रसन्न देसके अन्तर्गत था। (यद्यपि अब यह नगर "भारत-सर्व"में सम्मिलित हा गया है तो भी प्राम्भ देसक अमीतक उमे विधिगत भारतको भीप नहीं रिया है।) यह निश्चय हुआ कि भारतीयको पाण्डित्येरी भजा जाने और वे वहाँसे इच्छिमा पत्र निकालें। पहले तो इस विचारको स्वीकार नहीं किया गया। यह कहा गया कि मद्रास छोड़कर जाना पलायन माना जाएगा कायरता मानी जाएगी। पर अन्तमें निश्चय यही हुआ कि लोग जाहे जो कहें या समझें पर देसके हितके लिए पत्रको जारी रखना आवश्यक है और पाण्डित्येरीसे ही यह काम हो सकता है।

इस बीचमें सरकारने भारतीयको बंद करानकी आज्ञा जारी कर दी थी। इसका पता भारतीयको कृष्णस्वामी अम्मर द्वारा मिला गया। इन कृष्णस्वामी अम्मरके विषयमें कुछ सोचोंका तो यह विश्वास है कि ये नहीं प्रसिद्ध नेता हैं, बिनकी भारतीयने कभी आलोचना की थी। उस समय वे मद्रास राज्य सरकारके बहुत उच्च पदाधिकारी बन गए थे। दूसरे कुछ सोचोंका यह कहना है कि कृष्णस्वामी अम्मर एक दूसरे ही सम्बन्ध में जो पुलिस विभागके उच्च अधिकारी थे और भारतीयके बड़े प्रेमी थे। जो भी हो यह समाचार पाठे ही भारतीय मद्रास छोड़कर पाण्डिचेरी चले गए। उनके पहुँचनेके कुछ दिन बाद श्री अरविन्द बाल और व में सु अम्मर भी वहाँ जा पहुँचे।

ये सब राजनैतिक प्रवासी पाण्डिचेरीमें "मुद्देसी" (स्वदेशी आन्दोलनके समर्थक) कहलाते थे। इन सोचोंको वहाँ बहुत-सी कठिनाइयाँ होनी पड़ीं। भारतीय जब मद्रासमें निकले तब अपने एक मित्रसे पाण्डिचेरी गिवासी एक सम्बन्धके नाम एक परिचय-पत्र से गए। उस सम्बन्धने भारतीयको अपने साथ रखा। परन्तु अँग्रेजी राज्यकी पुलिसकी प्रेरणासे फ्रांसकी पुलिसने उस सम्बन्धको इतना अवायव्य-प्रकारका कि उन्हें विचलित होकर भारतीयको अपने यहाँसे हटाना पड़ा।

सौभाग्यवश उन्हें पाण्डिचेरीमें एक और मित्र मिला गए। उस मित्रका भारतीयके प्रति इतना ममत्व हो गया कि स्वयं कष्ट उठाकर भी उन्होंने भारतीयको अपने घरमें आश्रयसे रखा। इतना ही नहीं भारतीयकी सहायता करनेके लिए वे अपनी पत्नीके सहने तक पिरवी रवर्तमें संकोच नहीं करते थे। यह सच्चे भारतीय भक्त न तो कौसी बड़े नेता थे और न सम्पन्न परिवारके ही। ये एक व्यापारीके वहाँ मनीषी करके अपनी आजीविका चलाते थे। रोगमन्त्रिणी मानना उनमें कूट-कूटकर धरी हुई थी। ये काम्यप्रेमी भी थे और भारतीयके त्यागका महत्त्व जानते थे। उनका नाम मुन्शेरेश अम्मर था।

प्रवासकी कठिनाइयाँ

अँग्रेज सरकार एक सरकारपर बहुत दबाव डालती थी कि यह राजनैतिक कार्यकर्ताओंको अपने यहाँसे हटा दे। पर राजनैतिक कार्यकर्ताओंको भाषय देते ही इनकार करना अन्तर्राष्ट्रीय नीति एवं विषयोंके विरुद्ध था। उसी प्रकार अँग्रेज सरकारको अगस्त्युक्त करना उनके अलग स्वार्थके लिए हानिकारक था। इसलिए उनमें एक नया कानून बनाया कि जो " विदेशी पाण्डिचेरीमें आकर बसना चाहते हैं, उन्हें पाण्डिचेरीके पाँच अँगरेजी मन्त्रिस्टोंकी सकारण प्राप्त करनी होगी। पाण्डिचेरी भारतके अन्तर्गत एक छोटा-सा शहर है। उसपर फ्रांसका आधिपत्य था इसलिए फ्रांसीसी अधिकारियोंके लिए उस नगरके बाहरका भाग " विदेश " था। इस कानूनसे अरविन्द बालू व में सु अम्मर, भारतीय और अन्य सभी

[कवि-श्री माता—तमिल]



सुभाषण्य भारती और उनकी पत्नी जेल्सम्मा

[कोणे श्री भार के पदुवनामणुके सीरुवधे माणव]

इस बीचमें सरकारने भारतीयोंको कैद करानकी आज्ञा जारी कर दी थी। इसका पता भारतीयोंको कुम्भस्वामी अम्बर द्वारा मिला गया। इन कुम्भस्वामी अम्बरके विषयमें कुछ लोगोंका तो यह विश्वास है कि वे नहीं प्रसिद्ध नेता हैं, बिनकी भारतीयोंने कड़ी आलोचना की थी। उस समय वे मद्रास राज्य सरकारके बहुत उच्च पदाधिकारी बन गए थे। दूसरे कुछ लोगोंका यह कहना है कि कुम्भस्वामी अम्बर एक दूसरे ही संजनक थे जो पुलिस विभागके उच्च अधिकारी थे और भारतीयोंके बड़े प्रेमी थे। जो भी हो यह समाचार पाठे ही भारतीय मद्रास छोड़कर पश्चिमी चले गए। उनके पहुँचनेके कुछ दिन बाद श्री अरविन्द बोध और वे मु अम्बर भी वहाँ जा पहुँचे।

ये सब राजनैतिक प्रवासी पश्चिमीमें "सुदेशी" (स्वदेशी आन्दोलनके समर्थक) कहलाते थे। इन लोगोंको वहाँ बहुत-सी कठिनाइयाँ होनी पड़ीं। भारतीय अब मद्राससे निकले तब अपने एक मित्रसे पश्चिमी निवासी एक संजनकके नाम एक परिचय-पत्र ले गए। उस संजनकने भारतीयोंको अपने साथ रखा। परन्तु अँग्रेजी राज्यकी पुलिसकी प्रेरणासे फ्रांसकी पुलिसने उस संजनकको इतना अत्याचारमकाया कि उन्हें विवश होकर भारतीयोंको अपने यहाँसे हटाना पड़ा।

सौभाग्यवश उन्हें पश्चिमीमें एक और मित्र मिला था। उस मित्रका भारतीयोंके प्रति इतना ममत्व हो गया था कि स्वयं कष्ट उठाकर भी उन्होंने भारतीयोंको अपने घरम आरामसे रखा। इतना ही नहीं भारतीयोंकी सहायता करनेके लिए वे अपनी पत्नीके सहने तक पिरवी रखनेमें संकोच नहीं करते थे। यह उन्हे भारतीय-मनस न तो कभी बड़ नेता थे और न सम्पन्न परिवारके ही। ये एक व्यापारीके वहाँ मनीषी करके अपनी आजीविका चलाते थे। देशभक्तिकी भावना जनमें कूट-कूटकर मरी हुई थी। ये काम्यप्रेमी भी थे और भारतीयोंके त्यागका महत्व जानते थे। उनका नाम मुन्दरेम अम्बर था।

मद्रासकी कठिनाइयाँ

अँग्रेज सरकार फ्रेंच सरकारपर बहुत दबाव डालती थी कि वह राजनैतिक कार्यकर्ताओंको अपने यहाँसे हटा दे। पर राजनैतिक कार्यकर्ताओंको बाधय देनेसे इनकार करना अन्तर्राष्ट्रीय नीति एवं नियमोंके विरुद्ध था। उसी प्रकार अँग्रेज सरकारको अमान्य कराना उसके अरन स्वार्थके लिए हानिकारक था। इसलिये उसने एक नया कानून बनाया कि जो "विदेशी पश्चिमीमें जाकर बसना चाहते हैं, उन्हें पश्चिमीके पाँच अँगरेजी मजिस्ट्रेटोंकी सिफारिस प्राप्त करनी होगी। पश्चिमीके भारतके अन्तर्गत एक छोटा-सा शहर है। उसपर फ्रांसका अधिकार था इसलिए फ्रांसीसी अधिकारियोंके लिए उस नगरके बाहरवा भाग "विदेश" था। इस कानूनसे अरविन्द बाधू वे मु अम्बर, भारतीय और अन्य सभी



सुबहस्य्य भारती बौर उनका कर्मी बन्नाम्मा

सुदेशी लोग बहुत चिन्तित हो गए। एक कॉंग्रेसी मजिस्ट्रेट भारतीयोंके मित्र थे। भारतीयोंने उन्हें सारी परिस्थिति समझाई। उन सज्जनने वहीपर एक संस्मरिका पत्र लिखवाया और भारतीयोंको आरुणासन बेकर भर भेज दिया। दूसरे दिन उस सज्जनने भारतीयोंको पत्रोंका एक गट्ठर साकर दिया। उसमें भारतीयोंके लिए, अरबिन्ध बाबूके लिए और व में मु अम्परके लिए पाँच मजिस्ट्रेटोंके पाँच-पाँच सिफारिस-पत्र थे।

बस अंग्रेज सरकारने उन राजनीतिक धारणाधियोंको कष्ट पहुँचानेका एक हुमाय मान निकामा। पाण्डिचेरी एक छोटा-सा नगर है। वहाँ आश्रम प्राप्त उन सभी "सुदेशी लोगोंको आर्थिक सहायता ब्रिटिश भारतसे ही मिलती थी। ब्रिटिश डाक विभागन सब पत्र मनीआडर बाहि रोक दिए। उन तीनों या भाग संविहास्त्र लोगोंके नामपर जानेवाले पत्र मनीआडर बाहि प्रेषकोंको वापस कर दिए जाते थे। इससे भारती और उनके साक्षियोंको बहुत अधिक कठिनाइयाँ संकनी पड़ती थी। पर उन लोगोंने सारे कष्ट बड़ी धीरजके साथ सहन किए। सहायता पहुँचानेवाले डाकसे रकम न भेजकर खुद ले जाते थे या विरवसगीय लोगोंके हाथ भेज देते थे। इसर सरकारको भी हार मानकर अपनी निर्धारित नीति बदलनी पड़ी।

पाण्डिचेरीमें अरबिन्ध बाबू भारतीयों और व में मु अम्पर प्रति दिन नियमित रूपसे मिला करते थे और अनेक विषयोंकी चर्चा करते थे। धीरे-धीरे अरबिन्ध बाबूकी अभिवृत्ति तिरु राजनीतिसे हटकर आध्यात्मिक विषयोंकी ओर मुड़ी। भारतीयोंमें भी इस तरहका कुछ-कुछ भाव परिवर्तन हुआ। केवल वेद्यप्रमके बदले सब से ईश्वरी स्तुति काही माँ "सवित्र आदिपर भी धीत रचने लगे। पर उनके वेद्यप्रममें किसी तरहका अन्तर नहीं हुआ। बहु धर्मोंका-स्वीकार रखा।

पाण्डिचेरीमें "इन्द्रिया" पत्र अधिक समय तक नहीं चल सका। उसर ब्रिटिश सरकारका विरोध था इसर फौज अधिकारियोंने भी बहुत कष्ट दिया। "इन्द्रिया" के बाद भारतीयोंने "कर्मयोगी नामक पत्र निकाला। यह भी अधिक समय तक नहीं चल पाया। इसके बाद उन्होंने "धर्म नामक एक पत्र निकाला। यह भी कुछ समय तक ही चलकर बन्द हो गया।

भारतीयोंने अपनी अधिकांस रचनाएँ पाण्डिचेरीमें ही कीं। वहाँ उन्होंने अनेक वैद्यमन्त्रिपूज गीत रचे। "पाँचासि धर्मयम्" "कुविल पाट्टु" "कम्पन पाट्टु" आदि काव्योंकी रचना की और आन रथम् नामक एक गद्य-काव्य भी रचा।

सुटकारा

प्रथम महायुद्धमें अनेक कट्टर राजनीतिज्ञोंने धर्मयोगीके विरुद्ध ईंग्लैण्ड और उसके मित्र राष्ट्रोंका समर्थन किया था। उसके अन्त होनेपर स्वराज्य प्राप्त करनेके सपने देखे जा रहे थे। पर सरकारने लोगोंको केवल राज्यों (प्रान्तों) के

घासनमें कुछ विभागोंके संचालनका अधिकार दिया। इस नये एम्प-मुद्धार-आपोजनको अन्तर्गतमें आते समय सरकारने राजनीतिक कर्तव्योंको मुक्त कर देनेकी घोषणा की। भारतीय पाण्डित्योके तब जीवनसे ऊब गए थे। उन्होंने ब्रिटिश भारतमें आनेका निश्चय किया। पाण्डित्योकी सीमा पार करके ज्यों ही उन्होंने ब्रिटिश भारतमें प्रवेश किया त्यों ही पुलिसने उन्हें हवालातमें भेज दिया। इधर मद्रासके कई प्रमुख लोगोंने सरकारपर बड़ा प्रभाव डाला। फलतः हीच ही भारती मुक्त कर दिये गए। कुछ दिन तक वे अपनी पत्नीके गाँवमें आकर रहे। रामपणों नदीका तटवर्ती यह सुन्दर गाँव उन्हें बड़ा प्रिय था। भारतीके लिए मानसिक शान्ति प्रदान करनेमें यह स्थान बड़ा ही उपयोगी सिद्ध हुआ।

कुछ दिन आराम करनेके बाद भारती फिर मद्रास चले आए। इस समय "मुरैस मित्राल" का सम्पादन ए रंगस्वामी अय्यंगार नामक प्रसिद्ध विद्वान व देशभक्त करते थे। उन्होंने भारतीको फिर अपने कार्यालयमें ले लिया और उन्हें उस पत्रका उपसम्पादक बनाया। पत्र-सम्पादनके साथ वे सार्वजनिक कार्योंमें भी भाग लेते थे। हमारे देशमें उन दिनों मजदूरोंका संकटन गया-जया धुक हो रहा था। उसमें भारतीने बड़ी विलचस्पी ली थी।

गांधीजीसे भेंट

सन् १९१९ के आरम्भमें गांधीजीने एडवोकेट बानुनके विद्वद बड़ा प्रबल आन्दोलन शुरू किया था। इसके सम्बन्धमें वे उस साल मद्रास पधारे उस समय भारती उनसे मिलने गए। उनके गांधीजीसे परिचय नहीं था न कोई उनका परिचय देनेवाला ही था। उस समय उनके गांधीजीके पास जानेकी कोई बात ही नहीं थी। वे रूपचाप अचानक गांधीजीके कमरेमें प्रविष्ट हुए और आकर गांधीजीके पास बैठ गए। उस समय उस कमरेमें राजाजी स्वर्गीय तत्पन्ति रंगस्वामी अय्यंगार आदि उपस्थित थे। वे सब भारतीके आबदनसे डर रहे गए। किसीने उनका गांधीजीसे परिचय नहीं कराया। भारतीने न नमस्ते कहा न कोई भूमिका बारी। उन्होंने अपना परिचय भी नहीं दिया बल्कि—“मिस्टर गांधी! आज शामको एक समय में आपका देनाका है क्या आप उस लम्बे अय्यंगार बनेके? गांधीजीने महादेव जाईको बुलाकर शामके कार्य-कलापके सम्बन्धमें पूछा तो विरहित हुआ कि उन्हें उस समय अय्यंगार जाना था। उन्होंने भारतीसे कहा—“आज तो नहीं ही सकता कम हो तो कैसा रहेगा?” भारतीने कहा—“यह नहीं ही सकता। अच्छा मैं निरा केता हूँ। आप जो आन्दोलन शुरू कर रहे हैं वह देखके स्पष्ट बड़ा हितकर होया। आपको मैरा आशीर्वाद है।” यह कह कर वे चले गए। बापुजी कुछ विस्मित-से ही गए। उन्होंने उस समय बड़ी उपस्थित लोगोंसे पूछा कि ये कौन हैं? राजाजीने बचाव दिया—“ये हमारे समित

देशके राष्ट्रीय कवि हैं।" बापूजीने पूछा— क्या इस तमिल देशमें ऐसा कोई नहीं है जो प्रेमके साथ इस कब्रिकी सेवा-सुमुपा कर सके ?

भारतीयका हिन्दी-प्रेम

सन् १९१८ में बापूजीने ब्रिजभारतमें हिन्दी प्रचारका कार्य आरम्भ किया था। मद्रासके लोगोंको हिन्दी भाषा सिखानके लिए उन्होंने अपने पुत्र देवदास गांधीको मद्रास भजा था। देवदास गांधीने तिरुवन्मिक्कैलि नामक प्रसिद्ध मोहम्मदमें एक हिन्दी बरग बनाया। यह बरग मंडयम् श्री श्रीनिवासाशाय नामक प्रसिद्ध देवमठके बरपर चलता था। श्री श्रीनिवासाशाय पाण्डिचेरीमें भारतीयके साथ रहते थे और स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कम्पनी भारत मण्डार और अन्य राष्ट्रीय-सेवा-कार्योंमें बहुत अधिक धनकी हानि सहन कर चुके थे।

देवदास गांधीके मद्रास आतेपर गांधीजीने ब्रिजभारत श्री हरिहर शर्मा और उनके साथ कुछ अन्य नवयुवकोंको हिन्दी सीखनके लिए प्रयाग भजा था। हिन्दीकी शिक्षा पूरी करके हरिहर शर्माके मद्रास लौटनेपर देवदास गांधीने उन्हें हिन्दी प्रचारका काम सौंप दिया और वे अपने पिताके पास वापस चले गए। इसी समय श्री माण्टी फिर मद्रास जा पहुँचे थे। श्री हरिहर शर्माजी पहलेसे ही भारतीयसे परिचित थे शर्माजी भी “स्वदेशी” लोगोंमें मिके हुए थे शर्माजीकी धर्मपत्नी बोन्टीदेवी भी कष्टवम् पाँचकी हैं। माण्टीकी पत्नी चैस्तम्मा भी इसी पाँचकी थी। इसी गाँठे के हरिहर शर्माके कार्योंमें अभिरुचि प्रकट करने लगे। भारतीय स्वभावसे ही हिन्दी-प्रेमी थे। इसी कारण उन्होंने अपनी पुत्रीको हिन्दी बरगमें भेजना शुरू कर दिया। तिरुवन्मिक्कैलिका “पार्स लारजे” मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध है। उन मन्दिरके सामने कुछ दूरी औरके बरमें ही हिन्दी बरग चलता था। उन मन्दिरके पीछकी ओर एक किरायेके मकानमें भारतीयजी रहते थे।

उनाकता सम्बन्धी जननी वृत्ति हुजगी विद्याल भी कि वे कौए और बीरियाको भी मानव जातिके समान ही मानते थे। उन्हें पुरा देवदास ना कि प्रेमसे हिंस बन्धुओंको भी शान्त बनाया जा सकता है।

ब्रिजभारतके बड़े-बड़े मन्दिरोंमें हाथी पाखनेकी प्रथा है। तिरुवन्मिक्कैलिके मन्दिरमें एक हाथी था। भारतीय बहुधा प्रति दिन हिन्दी बरगमें जाकरके वार मन्दिरके उत हाथीके पास भी जाते और उसको कुछ पत्त खादि खिलाते थे। एक दिन हाथीने उनको अपनी मूँसे ठेल दिया। वे फिर गए। उन्हें कुछ हस्की-सी चोर आई। उनके कुछ मित्रोंने उनको बहसि हटानर उनके बर पहुँचा दिया। उनके पहले भी उनका स्वास्थ्य बहुत उत्तमप्रच नहीं था। सन् १९२१ सितम्बर, ११ तारीखको ३९ वर्षकी अल्पायुमें उनका देहान्त हुआ।

भारतीका व्यवहार

भारती बड़े हंसमुख उपार-हृदय और स्वतन्त्रता-प्रिय थे। उनका आत्माभिमान तो ऐसा था कि बहुत अधिक संकटमें होनेपर भी वे किसीसे कुछ मांगते नहीं थे। ऐसी परिस्थिति पैदा कर देते थे कि बाता लोप यही मानने समते थे कि कबि हमसे धन ग्रहणकर हमारा उपकार कर रहे हैं। वे कभी बाताके हावसे बात इस तरह ग्रहण नहीं करते थे कि उनका हाव नीचे रहे और बाताका ऊपर। बाताको अपना हाव बढ़ाकर अपनी हजेरीपर बातकी रकम रखनी पड़ती थी—भारती बहु रकम उठा लेते थे। वे कहते थे— यह बहुमात्र नहीं है—मह कबि गौरवकी रक्षा है। यदि मैं बाताका हाव ऊपर माने दूँ तो वह समझने लगेगा कि धनी कबिसे बढ़ा है। चातक हीन होकर बादलका बल ग्रहण करे तो उसमें न चातकता बौरव है और न बादलका महत्व।”

पाण्डिचेरीमें कुप्पत्स्वामी चेट्टियार नामक एक लखन थे। (तमिल प्रदेशके वैद्य लोकोके नामके साथ “चेट्टि” —आवरमुखक आर जोड़कर चेट्टियार —शब्द जोड़ा जाता है।) वे भारतीके बड़े भक्त थे। वे भारतीसे अन्धर मिलने जाते थे और उनमें साथ कुछ समय बिताकर बिबा होनेके पूर्व कुछ रुपये लेकर जाया करते थे। एक बार भारतीको पैसैकी बड़ी आवश्यकता थी। बत रूपोंके लिए उनका काम रुक गया था। संयोगवश उसी दिन वहाँ चेट्टियार जा पहुँचे। भारतीने कहा—“कहो भाई चेट्टियार! रोब भीठ मुना कर्ये हो! जाब कहानी मुनो।”

चेट्टियारने कहा— आप जो भी मुनाएँगे मैं मुनकर धन्य हो जाऊँगा।”

भारतीने कहा—कहानी पुणनी है—मुनी। वो मित्र थे। एक बा चेट्टि और दूसरा किसान था। दोनों कामपर नहीं गए थे। चूँकि रास्तेमें मयानक जंगल पड़ता था और रास्तेमें लट्टेकेन बढ़ा डर था वे बहूँका काम पूरा करके वास्ती ही लौटना चाहते थे। पर काम बतरी पूरा नहीं हुआ इसलिये उन दोनोंको बापस जानेमें डेर हो गई। बत तक पहुँचते-पहुँचते अंधेरा हो गया।

इतनी कहानी सुनाकर भारतीने पूछा—त्यों चेट्टियार! कहानीको रोषक बनानेके लिए कन्नेरोंकी जमी मुत्ता नूँ या बरा उर कर्ने ?

चेट्टियारने कहा—बाप कबाकार है चाई जब बना सकते हैं। मैं तो आपके साथ चलनेवाला बटोही हूँ। मुझे किसी बातका डर नहीं है क्योंकि आप मेरे साथ हैं।

भारतीने कहा—वाह! वाह! इनीको कहते हैं विलेरी! तुम बड़े बहादुर हो। अन्जा तो मुनी जाने। कन्नेरोंने किसानको खूब मारा उसके पास जो कुछ था, वह सब छीन लिया। यह देखकर चेट्टि अचानक गिर गया। यह

भी मासूम करता कठिन था कि उसकी साँस बन्द रही है या नहीं। जब स्पन्दे किमानको लूट चुके तब बेट्टिकी यह बसा देखकर मापटमें बाठबीठ करने लय—बसो छोड़ो इस घाबको। मरेकी क्या मारना है। अट्टि मट बोस उठा—करो मारै! तुम्हारे यहाँके घब कमरमें दम रुपये बबानर रखते हैं क्या?

इतनी कहानी सुनानेके बाद भारतीय पूछा—क्यों मारै अट्टियार! कहानी ठीक तो है?

अट्टियारन कहा—नै क्या जानूँ कि कहानी ठीक है या नहीं। आप दहन बीड़ ही कहेंगे। उम बेट्टिकी बाठ तो मैं नहीं जानता। पर मेरी कमरमें दम रुपय है सीबिए।

यह कहकर उसने अपनी कमरमें दम रुपयका गोण निकाला और भारतीयके सामने रख दिया।

भारतीयने कहा—कहानीके लटरे रातके समय बँधरेमें लूटा करते से मैं तो दिन-बहाड़े लूटा हूँ। यह कहकर वे हँसने लय। भारतीयको अट्टियार बिम प्रकार देख रहे थे उससे यह साठ मासूम होता था कि उनके मनमें भारतीयके प्रति किन्ती मबा थी।

महाराजाओंके आचार-विकार ही अत्य होते हैं। दुरु-भूकमें सोय उन्हें ठीकसे समझ नहीं पाते! उनकी निरा या अबहलना करते हैं। पर कुछ समय बाद वे ही लोग उन महाराजाओंकी पूजा करने लगते हैं। भारतीयके जीवनमें ऐसी बनेक बटनाएँ बटी जिनसे जन-नाशरय ही नहीं उनके मद-मम्बन्धी भी उन्हें पायक लग्यते थे। आज उन्हीं बटनावाके कारण कबिकी महिमा मारै बा रही है।

एक बार पाण्डिचेरीमें एक लड़का भारतीयके देहनमें बाया। उसको लोप पायक मानने से। वह बिस्ताना या बकठा तो नहीं था पर सदा मीन रहता था। वह कुछ समझना नहीं था। भारतीयने कहा उम प्रेयसे पाक-मोमकर ठीक किया जा सकठा है। लोप उनका उपहास करने लगे। परन्तु भारतीयकी संयतिमें रहनेके कारण कुछ दिन बाद वह लड़का बोबने लगा और बाटें समझन गया। इस बगनाके बाबसे सभी भारतीयकी प्रशंसा करने लय।

वैदिक धर्म बर्धमिध धर्म पुराण-इतिहास आदिपर भारतकी यद्वा अबस्य भी पर से बँध परम्पराका लखन करने से। आजि भइको तो वे मानते ही नहीं थे। बहुत दिन पहले ही उन्होंने यज्ञोपवीत पहनना छोड़ दिया था। वेने यज्ञोपवीतका त्याग दक्षिण भारतीय ब्राह्मणोंमें बन्धुत निन्दनीय माना जाता है। भारतीयकी भी इस बाबपर कड़ी निन्दा महन करनी पड़ी थी।

व च (स्वर्गीय व रामस्वामी) नामक प्रसिद्ध तमिल लेखकने अपनी "महाकवि भारतीवार" नामक भारतीयकी जीवनमें एक घटनाका बर्णन किया है। उसका सरल भाषार्थ यों है —

"एक दिन सबेरे करीब आठ बजे मैं जयसिंहके आश्रममें निकलकर भारतीयके घर जा पहुँचा। वहाँ कई लोग एकत्रित थे। बीचमें एक होमसुष्म वा जिसमेंसे घुमा निकल रहा था। कुछ लोग बेवपाठ कर रहे थे। वही होमसुष्मके पास भारती विराजमान थे। उनके पास ही कनक सिमम नामक हरिजन बालक भी बैठा था। उस समय प्रोफेसर सुब्रह्मण्यम जैसे कई प्रतिष्ठित लोग भी वहाँ उपस्थित थे।

"मैं जाकर प्रोफेसर साहबके पास बैठ गया। मैंने धीरेसे उनसे पूछा— यह क्या हो रहा है? उन्होंने कहा—कनक सिममका यज्ञोपवीत संस्कार ही रहा है। अब मायत्रीका उपदेश होनेवाला है। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने फिर प्रोफेसर साहबसे पूछा—भारतीयके पास बैठा हुआ बालक ही क्या हरिजन बालक—कनक सिमम नामक वह बालक है जिसका यज्ञोपवीत हो रहा है! उन्होंने कहा—वही है माई, देखो भारतीय मुझे कड़केको मायत्रीका उपदेश दे रहे हैं।

"मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ ही महीनों पूर्व एक बार भारतीयने मुझसे अनुरोध किया था कि मैं अपना यज्ञोपवीत उतार दूँ। वे जब बहुत दिनोंसे यज्ञोपवीत नहीं पहनते थे। यह कौसी बात है? स्वयं यज्ञोपवीत नहीं पहनते और मुझे तो यज्ञोपवीत उतार देनेकी सलाह देते हैं और अब जिस हरिजन बालकको यज्ञोपवीत पहनानेके लिये ऐसा आडम्बर रच रहा है।

"मैं मौन बैठ रहा। भारतीयने मेरी ओर देखा तक नहीं। मायत्रीका उपदेश पूरा होनेपर उन्होंने कनक सिममसे कहा—बेटा! आजके तुम ब्राह्मण हो। तुम निर्मल रहो। किसीसे मत डरो। यदि कोई तुमसे यह पूछे कि तुम्हारा यज्ञोपवीत संस्कार करनेका साहस किसने किया तो तुम निर्बल होकर मेरा माम बता सकते हो। किसी भी परिस्थितिमें यह पनेऊ न उतारना।

"भारतीयका यह अनूठा उपदेश सुनकर मैंने चारों ओर एक नजर डालकर देखा कि कहीं लोग मन-ही-मन हँस रहे हों। पर सबके बेहरोपर मैंने भारतीयके विचारोंके समर्थनका ही भाव पाया। उपनयनके कार्यक्रमके अन्तर्गत सभी लोग पाठ-मुपाठी ग्रहण कर बिबा हुए। कनक सिममकी उसके घर तक पहुँचानेके लिए भारतीयने अपने एक मित्रकी सेवा।

"जब सब लोग चले गए तब भारतीयने अपना यज्ञोपवीत निकाल डाला। हँसते हुए मेरे पास जाकर बोले—अपने क्या बात है? मैंने कहा—दो विबाहित पत्नियों (तमिल प्रदेशमें इतिमयी और सत्यवामा श्रीकृष्णकी धर्म पत्नियों) मानी

जाती हैं।) और इस हजार मोपिफ्तकोंके साथ भीड़ा करनेवाले भीहूण्डे नियत ब्रह्मचारी माने जाते हैं। आपका यह ब्रह्मोपदेश (गायत्रीका उपदेश) भी कुछ एसा ही मामूली पड़ता है। भारतीयों कहु—बिमको नमार ब्राह्मण मानता और जानता है उसके लिए अनेक आवश्यक नहीं हैं। हमारे-नुम्हारे लिए यह जनाबदयक है। नबीन ब्राह्मण कनक शिमके लिए यह निराल्प आवश्यक है। बिम समय में उनको अनेक पढ़ना रहा वा उस समय भेष भी अनेक पढ़ना आवश्यक वा। यह काम पूरा हो जानेपर अब उसकी आवश्यकता नहीं रह गई है। मैं उसको उतार रहा हूँ।”

भारती स्वभावसे अत्यन्त उदार थे। स्वयं कष्ट उठाते रहनेपर भी मांफनेवालोंके निरापन्न करते। अपने नये वस्त्र नहीं कमीज नय अंगरख धरीकोंको दे डालते थे। हमारे यहाँ बीस रिपणा गाड़ी चलती है, बीसे ही पाण्डिचेरीमें उन रिपों “पुछ बण्डि नामक गाड़ी चलती थी। यह गाड़ी आपसे खींची नहीं जाती थी बीछने डकेली जाती थी—बिमौक्तिसे उसका नाम पुछ (Push) गाड़ी पड़ा। ऐसी गाड़ी चलानेवालोंमें मरा होइ रहा करती थी कि कौन भारतीयको अपनी पाड़ीमें ड बाएँ।

भारतीका सन्धेन

भारतीको जीवनभर आर्थिक कठिमाईं महनी पड़ी। पर इस कारणसे वे कवी विचरित नहीं हुए। ज्ञान रूपम् उनका एक उत्कृष्ट पद्य-काव्य है। अपने ज्ञान कवी रूपपर सवार होकर वे उपसालि लोक संदर्भ लोक, सत्य लोक और धर्म लोकका पयटन करते हैं। इन लोकोंके बीचमें मृत्यु लोकका भी वर्णन करनेका अवसर कविने निकाला है। उसमें उन्होंने अपने कुटुम्बकी स्थितिका बहुत ही सजीव और सुन्दर बयन दिया है। उनकी पत्नी उनके सामने आवश्यक रकमोंकी नुषी देघ करती है—कविने बंदाज कमाया कि उन एक दिनकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए उन्हें कम-से-कम सड़ाई लाक रुपोंकी आवश्यकता होगी।

भारती “मिम्बावार का खम्बन करते थे। उन्होंने कहा है—“क्या हम संसारको मैं सपना मानूँ? क्या मेरी कपवती पत्नी निरी मामा है? सीनेके बिडह-सी मेरी दो पुत्रियाँ क्या सनने हैं? नहीं मैं यह नहीं मान सकता।” भारतीय सौन्दर्यके उपासक थे। पर उनकी सौन्दर्य बामतामें कामुकता नहीं थी। मुख बीमके प्रती अवश्य थे पर मुख बीममें बिन्दियोंके अधीन होना वे यह नहीं सकते थे। उनका विश्वास है कि ईस्वरने सबको मुखी रहनेके लिए पैदा किया है। हम अपने मुखके साथ बूठरोंके मुखका प्रयत्न करें सभी हम मन्धे आस्तिक बनें। उन्होंने कहा है —

“तदि ओदवमुकुच विर्न एभिल
अगतिर्न अतिरिचुवीन।

लिया करती थी। संभोजनक्ष में एक राजकुमारसे मिली। मेरा उससे प्रेम हो गया—मैं उससे भी मिल लिया करती थी। एक बार इन घाटी का जेब खुल गया तो तीनों प्रेमी आपसमें लड़कर मर गए। वहीं बिकापीकी पुत्री अब कोनल बनी आत्महत्या बोल बना हनुमानदास बन्दर बना और राजकुमार तुम स्वयं हो। एक साधुने मुझसे कहा था कि मैं तुमसे अबस्य मिलूंगी। कोयलकी बात सुनकर कवि प्रेम-मग्न हो गया। उसने अपने हाथ बड़ाए। कोयल उसके हाथोंमें जा गिरी। कविने उसे अपनी छातीसे चूसा लिया। बेबा—यह तो कोयल नहीं रूपवती युवती है। आचानक कवि भाग उठा। उसको क्यात आया कि वह कल्पनामें गिरा स्वप्न बेबा रहा था।

भारतीयकी कविताओंको चार हिस्सोंमें बाँटा जा सकता है—रेख-भक्तिके मीठ बेब भक्तिके मीठ रसात्मक काव्य और फुडकर काव्य। उनके सैकड़ों निबन्ध हैं। उनकी कई कहानियाँ हैं। बँधाकतम् एक कहानी है जिसमें यह सिद्ध किया गया है कि बँधन और घातके मेलसे बँधाकतम् बनता है।

भारतीयके जीवन-काव्यमें कितनी उनपर ध्यान नहीं दिया। उनकी मृत्युके बाद ही उनके साहित्यकी महिमा बढ़ी है। हम निस्संकोच कह सकते हैं कि कन्नड कविके बाद भारती ही हुए, जिनकी छाप तामिळ साहित्यपर बहुत पड़ती पड़ी है।

• • •

सुब्रह्मण्य भारती

[काव्य-संघय]

- ३ कश्चिप्यद्वयतिम् अज्ञात्—एषन्
 काबिल विपु ग्ब तिरोमोपि एस्वाम्
 एषोन्नबो पेयदधु—पिसर्
 याबुम अपियुद्विरन्वन कषोर् ।
- ७ तर्ग्वै मध्वत् वस्त्रियालुम्—मुम्बु
 शाश्रपुम्बुर् तयवस्त्रियालुम्
 इम्बकप मद्दुम कालम्—एसै
 एरिदुत्पार्कबुम् अञ्जिइस्वाम्
- ८ इधोभु शोस्त्रिने केष्टेन्—इति
 एहुषोपुबेन् एम वाशयिर् मक्काळ् ।
 कोधिइल पोक् ओरु वासै—इंगु
 कूरतपाइबन् कूरिनन् कण्डीर् ।
- ९ पुलम पुबिय कसैगळ्—पञ्च
 भूत शोयक् गळिन् नुटपगळ्कूम्
 मेत बळकडु मेक्—अन्व
 मेग्मै कसै गळ् तमियिमिक् इस्सै
- १० शोस्त्रमुम कूडुबदिल्लै—अवे
 शोस्त्रमुम तिरमे तमियु मोयिविक्कल्लै
 मेस्स तमियिपिनि चागुम—अग्ब
 मेर्कु मोपिगळ् भुबि मिश योंगुम

- ६ अब मैं कन्या थी तब (कन्या पर्वमें उन दिनों) मेरे कानोंमें चारों ओर घसनेवाली (अनेकों दिशाओंकी) अनेकों धातें पड़ी थीं। उनके न जाने क्या-क्या नाम थे। वे स्वयं मिटकर नष्ट हो गईं।
- ७ पिताकी कृपाके वलसे और प्राचीन उत्तम कवियोंके तपके धरसे आजतक काष्ठ मेरी ओर धृष्टि उठासे हुए भी डरता था।
- ८ अब मने एक बात सुनी। हाय! मेरे प्यारे धन्वो! अब मैं क्या करूँ? आज बालनकी योग्यता न रखनेवाले एक ब्यक्तिने ऐसी बात सुनाई। सुनाई क्या, मानों मुझे मार ही डाला।
- ९ “नई-नई कसाएँ, पञ्च भूतोंके कार्यकलापके मम (आदिसे सम्बन्ध रखनेवाला साहस्य) आदिकी परिचममें कूब उन्नति हो रही है। वे बिनाप कसाएँ समिरमें नहीं ह।”
- १० ‘वे बतसाई नहीं आ सक्ती हैं। उन्हें व्यक्तकर बतसानेकी शक्ति तमिलमें नहीं है। अब धीरे धीरे तमिल मर जाएगी। परिणामत वे पाश्चात्य भाषाएँ अब दुनिया भरमें फैलगी।

११ एयन्व पेवे उरस्तान्-भा
 इन्व वसे एनक्केय्द्विडसामो
 क्षेमिडुवीर् एट्टु विक्कुम -कल्ल
 पोस्वयळ् यामुम कोगाम्बड्गु क्षेपीर् ।

१२ तम्बे भक्ळ् वसिप्यासुम -इप्पु
 शाग्ग पुक्कवर् तव वसिप्यासुम
 इम्ब वेहमपयि तीरुम -पुगप्
 एरिप्पुवि मिक्षी एट्टुम इक्कप्पेन् ।



११ उस आदमीन यह सब कहा । हाय ! हाय ! मैं क्या इस निन्दाके योग्य हूँ ? (मेरे बच्चे !) तुम लोग आठों दिशाओंमें बसे जाओ । कसाकी जितनी सम्पत्ति मिले खाकर यहाँ (तमिल साहित्यमें) एकत्रित करो ।

१२ पिताकी कृपाके बलसे और आजके उत्तम विद्वानोंके तपसे बलसे मैं इस महान अपयशसे बच जाऊँगी । उत्तम कीर्ति पाकर मैं अमर बनी रहूँगी ।

२ तमिषु

- १ यामरिह मोयिगळिले तमिषु मोयिपोसु
 इनिदावहोगुम काचोम्
 पामररायु, बिर्संगु गळायु उरुमनत्तुम
 इगप च्चि स्रोळ पान्मे केट्टु
 नाम मद्रु तमिषु रेनक्कोय्यु इयु
 बायु न्बिडुवळु मधो ? शोस्वीर् !
 तेमडुर तमिषोर् उरुग मेत्ताम
 परवुम वाी शेयुवळु वेय्युम ।
- २ यामरिह पुसवरिसे कम्बलेपोस
 बळ्ळुवर् पोळ् इळंगोव पोसु
 भूमिबमिस् पांगमुमे पिरन्बिस्सै
 उरुने वेरुम पुगपु च्चि इस्सै ।
 ऊरुमररायु शोबिडमळायु कुदडर्गळायु
 बायुनिधोम , मोद शोस केळ्यैर्
 शोम मुरवेय्यु मेनिळ तेरवेत्ताम
 तमिषु मुयवडुम शेयिक्कन्वेयु वीर् ।

३. तमिल

हम कबितामें कवि तमिल भाषाकी महिमा पाकर आजकालके तमिल कवियोंकी बुनतिका बयन करता है और मदनमोहा ई कि उतना क्या बर्तव्य है । तमिल कवियोंकी जो बात है वह सभी भाषा भाषियोंके लिए लागू है ।

१ हम जितनी भी भाषाएँ जानते हैं उनमें तमिल भाषाके समान मधुर नहीं कोई दूसरी भाषा नहीं है । (एसी उत्तम भाषा पाकर भी) हमें तुच्छ हाकर, पगु तुस्य हाकर सारे ससारकी निम्दाके पात्र होकर अपने बड़प्पनस भ्रष्ट होकर नाम मात्रके लिए " तमिल-बाला " कहलाते हुए रहना क्या अच्छा है ? हमें ऐसा प्रवचन करना चाहिए कि मधु-सा मिठास सींचनेवाली तमिलकी आवाज सुसार भरमें फैले ।

२ हम जितने कवियोंसे परिचित हैं उनमें कम्ब' के समान बळ्ळुवर के समान और इळंगोर्व' के समान दुनिया भरमें कहीं कोई पगु नहीं हुआ है । यह सरप है, यह झूठी बड़ाई नहीं है । (अब) हम झोग गूंगे हाकर, वहरे हाकर अग्घे होकर रहते हैं एक बात तो मुनिए, यदि कुद्यासतापूबक रहना हो तो गली-गलीमें तमिल भाषाकी धूम हा ।

३ पिर माद्दु नस्सरिक्कद् शातिरगळ्
 तमिय् मौयियिस् देवतिडळ् बेण्डुम्
 इरबाब पुगव् डेय पुहुन्सगळ्
 तमिय् मौयियिस् इयद्रुल् बेण्डुम्
 मरवारग नमबकुळ्ळे पय गबगळ्
 शोल्बबिलोर् महिम इस्ते
 तिरमात्त पुसुमयेनिक् बेळिमाट्टोर्
 मबे वगक्कम् शेपुबल बेण्डुम् ।

४ उळ्ळत्तिस् उण्मैयोळिबुष्पायिन्
 बाक्किन्निळे ओळिपुष्पागुम्
 बेळ्ळत्तिम् पेदक्कै पोस् कसे पेदक्कुम्
 कबि पेदक्कुम् मेव् मायिन्
 पळ्ळत्तिल बीप्पिन्दक्कुम् कुण्डरेन्नाम्
 विवि देट्टु पबबि कोळ्वाद्
 तेळ्ळट्टु तमियमुदिन गुबै कण्डाद्
 इंगमर्द्दु तिरप्पु कण्डाद् ।

३ अन्य देशोंके उत्तम विद्वानोंके पास्त्रोंका समिसमें अनुवाद करना चाहिए। अमर कीर्ति पा सकें—एसी मई रचनाएँ तमिसमें रचनी चाहिए। छिप छिपे (घर बठे) आपत्तमें अपनी पुरानी बड़ाई सुनानेमें काई गौरव नहीं ह। उत्तम पाण्डित्य तो बही ह जिसके सामने बिदेगी लोग सिर झुकाएँ।

४ हृदयमें यदि सच्ची ज्योति जले तो जिह्वापर ज्योति जमेगी। यदि बाङ्के प्रवाहकी तरह कलाकी और कविताकी बाङ् बड़े तो गद्देमें पड़े हुए अघे सभी दृष्टि पाकर उत्तम पद (आदरणीय स्थान) पाएँगे सुमधुर तमिस-अमृतका स्वाद खेनेबाछे यहाँ देवताओंका गौरव पाएँगे।

एन्ते मातरम्

वन्धे मातरम् एन्बोम—एगळ्
 मामिळ ताये वचंगुडुमेन्बोम । (वन्धे)

१ जाति मसंगळे पारोम—उयर्
 जम्ममिहेशतिस एम्बिन रायिन्
 बेबियरायिमुम ओघे—अम्भु
 बेवङ्कुलतिम रायिनुम ओघे । (वन्धे)

२ ईम पर्ययल्लेनुम—मबर्
 एम्मुडन् बाप म्बिङ्गिदप्पवरप्रो
 बीनलराम् बिङ्गुबारो—पिर
 बेवस्तार् पोल् पळ लीङ्गिप्पारो । (वन्धे)

३ मायिरमुच्चिगु जाति—एनिम्
 अम्नियर् बडु पुगस एन्न मीति—ओर्
 तायिन् वयिट्टिक् पिरम्बोर्—तम्मुळ्
 वाण्डे शेय्वास्सुम सहोवर रघो ? । (वन्धे)

४ ओम्भु पट्टास उण्डु बाप बु—जम्मिस
 ओट्टुम नीङ्गिल् अनेवङ्कुंम ताय् बु
 मन्निडु तेन्निडस बेण्डुम—इय्य
 जानम वंदास पिन्नमवसेनु बेण्डुम । (वन्धे)

३ वन्दे मातरम्

यह गीत उन दिनों रचा गया जब वन्दे मातरम् का उच्चारण भी पाबन्धा माना जाता था ।

वन्दे मातरम् कहें ! ' महान् भूमि माताको सिर झुकाएँ " कहें ।

- १ हम जाति या धर्मको महत्व नहीं देंगे । यदि उत्तम जन्म इस देशमें प्राप्त कर लिया हो तो फिर ब्राह्मण हो या किसी अन्य कुलका—सब समान हैं ।
- २ कुछ हरिजन हों तो क्या वे हमारे ही साथ नहीं रहेंगे ? क्या वे भीमवाले बन जाएँगे ? यन्म देशवालोंके समान क्या वे हानि पहुँचाएँगे ?
- ३ हममें हजार जातियाँ हैं, तो (इस बातको लेकर) भन्त्योंका दलाल देना कहींका नीति है ? एक माँके पेटसे उत्पन्न भाई आपसमें सड़ लें तो भी क्या वे (एक दूसरेके) सहोदर नहीं हैं ?
- ४ अगर हम एक होकर रहें तो हमारा (कुटुम्ब) जीवन है । यदि हमारी एकता टूट जाय तो हमारा पतन है । यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए । यह जान यदि हमें हो जाय तो फिर हमें किस बातकी कमी रहेगी ?

४. भारत देशम्

भारत देश मेघु पेयर शोस्सुवार मिडि
भयंगोस्सुवार सुपर पगै बेस्सुवार ।

१ बेळ्ळिळ पमि मल्लेयिन भीडुल्लुबुबोम-अडि
मेसे कडल मुयुडुम कप्पस बिडुवोम
पळ्ळिळल्ला मतलुम कोडुल्लुशेयुवोम एगळ
भारत देश मेघु तोळ कोट्टुबोम । (भारत)

२ सिंगळलीबिनुक्कोर पाळम व्यमैप्योम
सेतुब मेडुवलि वीदि समैप्योम
बंगलिस ओडिबल्लम नीरिण मिगैपाल
मेयसु भाडु गळिल्ल पयिर शेयुवोम । (भारत)

३ बेदुडु कनिगळशेयुडु तंगम मुडुल्लाम
वेर पल पोळ्ळगळुम कुडैन्नेडुप्योम
एट्टुल्लिसे गळिसुम शोन रिबे विट्टे
एण्णुम पोळ्ळमैलुम कोण्डुवडुबोम । (भारत)

४ मुलु कुळिप्पबोय तेत कडसिल्ले
मोयुल्लु बणिकर पल भाट्टिनर वन्ने
नलि ममस्किनिय पोळ्ळकोण-डु
मम्मळ्ळ बेण्डुबडु मेकरैयिल्ले । (भारत)

५ सिमु मडियिन मिने निल्ल विनिल्ले
शेरा मन्नाट्टिळया वेण्णुळुडने
सुवरसेमुयिनिल्ल पाट्टिशालु

४ भारत देश

स्वयं भाषणा उद्देश्य क्या है इसकी कल्पना कवि भारतीय भाषासे पचास वर्ष पूर्व यों की थी —

भारत देशका नाम लेनेवाले अभावके भयको नष्टकर दुःख और शत्रुतापर विजय पाएँगे ।

- १ हम दक्षिण हिमाचलपर चढ़ करेगे पश्चिमके समुद्रोंपर जहाज भेजाएँगे निचले प्रदेशोंमें मन्दिर बनाएँगे— भारत देश (हमारा) कहकर (ताऊ) मुखा ठोकेँगे ।
- २ सिंहस द्वीप तक एक पुल बनाएँगे, (श्रीरामचंद्र द्वारा पूर निर्मित) सेतुकी झंका बनाकर सड़कें बनाएँगे । यममें मानवासे पानीके आधिपत्यको लेकर बीचके प्रदेशोंकी खेती बढ़ाएँगे ।
- ३ शोण-सादकर सोना और अन्य अनेक द्रव्य निकालेंगे । आठों दिशाओंमें जाकर उन्हें बेचेंगे और दृष्टिगत वस्तुओंको छे जाएँगे ।
- ४ मोती निकालनेका काम दक्षिणी समुद्रमें हाता है । वहाँ अनेक देशोंके व्यापारी भाएँगे और हमारे पसन्दकी चीजें हमें देकर हमारी कृपा चाहेंगे ।
- ५ सिन्धु नदीपर चाँदनी रातमें चेर प्रदेशकी नवयुवतियोंके साथ सुन्दर सेरुमु (माया) के गीठ रचकर (गाते हुए) नाव भेजाकर आमन्द मनाएँगे ।

- १ गंग मदि पुरत्तु गोबुमं पण्डम
काविरि बेट्टि सैन्कु भादकोळ्ळुबोम
सिंग मराठियतम कवितै कोण्डु
क्षेरत्तु बंतगळ परिशळ्ळिप्पोम । (भारत)
- ७ काशि मगर पुसबर पेशुम उरै वान
काञ्चिच्चयिस केट्टपवर्कोर कववि शेम्बोम
राक्षपुतामत्तु वीरर वसक्कु
मस्मियर कल्लडत्तु तंगम अळ्ळिप्पोम । (भारत)
- ८ पट्टिनिल आडयुम पंभिल उडेयुम
पण्ण मसमळेन श्रीदि कुबिप्पोम
कट्टि बिरबियंगळ कोण्डु बरवार
काशिनि वणिगळ्ळु अर्बे कोडुप्पोम । (भारत)
- ९ आयुधम शेम्बोम मस्त कागिधम शेम्बोम
मालैमळ्ळैप्पोम कस्त्रि शालैपळ्ळैप्पोम
शेम्बुवस शेम्बोम तलै वामुदल शेम्बोम
उम्भगळ शौस्वोमपस वरुम्भेळ शेम्बोम । (भारत)
- १० कुडेमळ शेम्बोम उप्पु पडगळ शेम्बोम
कोविगळ शेम्बोम इरुम्बाणिगळ शेम्बोम
तडयुम परप्पु मुशर वण्डिगळ शेम्बोम
शालम नडुग वरुम कप्पस पळ शेम्बोम । (भारत)

- ६ कावेरीकी ओरके नागरपानोंके बदलेमें गंगा नदीकी ओरके गोहूँ लेंगे, सिंह (जैसे वीर) मराठोंकी कविता लेकर चहूँ बेर प्रदेशके हाथी दाँतसे पुरस्कृत करेंगे।
७. काशी नगरके विद्वान धो व्याख्यान देंगे वह काष्ठीमें सुना जाए, ऐसा यज्ञ बनाएँगे। राजपूतानाके वीरोंको कन्नड़ प्रदेशका उत्तम सोना देंगे।
८. रेघमके और सूती बस्त्र बनाकर महाङ्ग-सा डेर लगा देंगे। गजनीके व्यापारी ठोस पदाम छाएँगे—उन्हें बे (तस्त्र आदि) देंगे।
९. औजार बनाएँगे—मच्छे कागज बनाएँगे, कारखाने खोलेंगे, बिद्यालयोंकी स्थापना करेंगे। हम बर्केगी नहीं, सिरको नीचे गिरने नहीं देंगे, सच्ची बात बोलेंगे एवं उदारताके कार्य करेंगे।
१०. छाते बनाएँगे, हस्त आदि सेठीके लिए आवश्यक वस्तुएँ बनाएँगे, खोरे बनाएँगे—सोहेकी कीर्से बनाएँगे। कबज और विशाल गाड़ियाँ बनाएँगे। जिनको आते देखकर यम भी डर जाए, ऐसे बहाज बनाएँगे।

- ११ मन्बिरम कर्पोम पिनी तम्बिरम कर्पोम
 बान यळ्प्योम कडल मीने यळ्प्योम
 चम्बिरा मचडस्तियस कच्चु तेळ्ळिबोम
 सन्बि तेरपेरक्कुम शास्तिरम कर्पोम । (भारत)
- १२ काविमय शोय्बोम मस्तु काडुळ्ळर्पोम
 कसै बळर्पोम कोस्त कुसै बळर्पोम
 ओबियम शोय्बोम मस्तु ऊशियळ शोय्बोम
 उस्त्यस्तोविल्लनेस्तु मुबन्नु शोय्बोम । (भारत)
- १३ शावि हरण्बोविय बेरिस्तै—एळे
 तमिय मगळ शोस्सिम शोस अमिवबन एन्बोम
 नीबि मेरियिनिष्पु पिरर्कुंबबुम
 नेर्मेयर मेसबट, कौबुबर मद्रोर । (भारत)
-

- ११ मात्र सीखेंगे काम करनेके तत्र सीखेंगे । आकाशको नापेंगे—समुद्रकी मछलियोंको नापेंगे । चन्द्रमण्डलकी वनावटकी जानकारी पाएँगे । सुरगों (ज्ञान)को बढ़ा सकें—ऐसी विद्या सीखेंगे ।
- १२ काव्य रचेंगे सुन्दर घन निर्मित करेंगे कलाकी वृद्धि करेंगे कारीगरों (सुहार आदि) की भट्टियाँ बढ़ाएँगे । चित्र बनाएँगे, अच्छी सूझियाँ बनाएँगे । ससारकी जितनी भी कारीगरियाँ हैं, मन लगाकर करेंगे ।
- १३ और्वे नामक प्रसिद्ध तमिल पुरानी जो कहा कि "जाति केवल दो हैं—कोई सीधरी नहीं, वह अमृतबचन है"—यह घोषित करेंगे । नीति-मिष्ठ होकर दूसरोंका उपकार करनेवाले उत्तम जातिके और अन्य लोग निम्न जातिके हैं—यह घोषित करेंगे ।
-

५ संगल ताय



- १ तोपु निगपुम्बहनेस्तुम उचन्विडु
 शूपु कसै बापगंळुम—इबळ
 एपु पिरम्बवळ एपुपराव
 इयसबिनळाम एंपळ ताय ।
- २ पासुम बमुत्तकरियपिरायतळ
 मायितुमे एंपळ ताय—इम्ब
 पाळळ एसाळुमोर कसिगे एम
 पयिप्रडुबाळ एगळ ताय ।
- ३ मुप्यडु कोटि मुहमुईयाळ उयिर
 मोय्म्बुर मोपुडयाळ—इबळ
 शेपु मोयि पबिमेट्टुईयाळ एनिर
 सिम्बने ओपुईयाळ ।
- ४ मायिनिल बेह मुडयबळ—कैयिस
 नसंतिगपु बाळुडयाळ—तने
 मेजिमकिमरळ शेय्बबळ तीयरे
 चोदुटुडु तोळुई याळ ।
- ५ अरवडु कोटि तडुके गळ्यसुम
 अरंगळ नडसुबळ ताय—तने
 चेवडु माडि परम्बवरतुगळ
 शेमुडु किडतुबळ ताय ।

५ हमारी माँ

इस कवितामें कवि भारत माताका वर्णन करता है —

- १ हमारी माँ इस प्रकारकी है कि पुरानी जितनी भी बातें हुईं, उन सबकी जाननेवाले ज्ञानी भी यह नहीं जान सकते कि यह (माता) क्या पदा हुई ।
- २ यद्यपि यह ऐसी है कि कोई भी इसकी आयुका निर्धारण नहीं कर सकता तो भी जब तक यह ससार स्थित रहेगा तब तक हमारी माता कन्याके रूपमें विराजमान रहेगी ।
- ३ मुँह इसके तीस करोड़ पर प्राण इसका केवल एक है । (एक हृदय है भारत जननी !) इसके घोलनेकी भठारख भापाएँ हैं पर इसका विस्तार एक ही है ।
- ४ इसकी जीमपर बेद है, हाथमें भलाई करनेवासी तलवार है आपस सेनेवालोंपर हृपा करती है—इसकी भुजाओंमें सुरोंको गिरा देनेकी ताकत है ।
- ५ साठ हजार सबल हाथोंसे हमारी माँ युद्ध करती है, विरोध मानकर आनेवालोंको यह चूर चूर कर देती है ।

कवि-श्री माला

६ भूमिपिनुम पोरं निष्कृष्टयाळ वेदम
 पुष्पिय नेत्रिजमळ ताय-एमिस
 तोमिप्यार मुननिप्रिङ्गार कोडुम्
 कुण्यै यळ ताय ।

७. कट्टे वाडेमाबि बत तुरबिय
 कै तोवु बाळ एंगळताय-कैयिस
 थोडुं तिमिरि कोण्डेपुस गळुम
 मोडवनेयुम तोयुवाळ ।

८. योगलिले निगण्डुवळ-उष्मैयुम
 मोधेन नधरिबाळ-उयर
 भोगलिलेयुम निरेगवळ एण्वरम
 पोर्कुंवे तामुडेयाळ ।

९. तस्करम नाबिय मभरे वाय ति
 नयम पुरिबाळ एंगळताय-अयर
 अस्सबरापित मभरे विपुडिग पित
 आनब कूतिडु बाळ ।

१०. बेवमे बळर इमयाबलन तन्द
 बिरन मगळाम एंगळताय-अवन
 तिणम मरयिनुम तानमरीयाळ निस्तम्
 शीरुदबाळ एगळ ताय ।

- ६ भूमिसे भी अधिक सङ्गुनशील ह, बड़े ही पवित्र हृदयवाली है। पर सङ्गुनेवासोंके सामने तो वह भयकर दुर्गा स्वरूपिणी ही ह।
७. घासपर दासचक्रको धारण करनेवाले सन्यासीको भी वह हाव ओढ़ती ह और एक अक्रायुष धारणकर सातों साकोंका पाछन करनेवाले एककी भी पूजा करती है। घिम और बिष्णु दोनोंकी पूजा करती है।
- ८ योगमें वह असमान है वह जानती है कि सत्य एक ही ह। उत्तम भोगोंसे भी वह सुसम्पन है—उसके पास सोनेका ढेर है।
९. सद्धर्मी राजाओंकी वह माधीर्वाध देकर उनका भला करती है। जो वैसे नहीं हैं, उन्हें निगलकर वह मानन्दका ताण्डव नृत्य करती है।
- १० हमारी मां शुभ्र हिमाचलकी दी हुई कन्या-युवती है। उस (हिमाचल) का अस्तित्व मिट जाए तो भी आप नष्ट हुए बिना सदा वनी रहेगी।

६ तायिन मणिकोष्ठि

- तायिन मणिकोष्ठि पारीर-अर्धे
तायन्तु पण्डु पुपयन्विड पारीर ।
- १ ओयि बळ्ळंबोर कम्मम-अवन
उच्चियिन मेळ बन्ने मातरम एय
पागिन एय वि तिपय म-शेय्य
पट्टोळि बीशि परम्बु पारीर । (तायिन)
- २ पद्दु तुमितेना सामो-अविस
पाय्णु शुयद्दुम पेक्कमुपरकाद्दु
मद्दु मिपुम्बडित्तकुम-अर्धे
मडिपाड बुबडिकोळ माणिक पडम्म (तायिन)
- ३ इम्बिरन वरिअरम ओरपास-अविस
एंगळ तुदक्कटिळम्बरे ओरपास-ताय
मन्दिरम मडुबुर तोयुम-अवम्
भाम्बे बगुत्तिडवस्तवम यामो । (तायिन)
- ४ कम्बत्तिम कीय् निट्टुक्कानीर-एंगुम
काणरुम धीरर पेदत्तिक्कट्टुम
मम्बर्णुरिय अम्बोरर-तंगळ
मस्तुयि रोग्गुम कोडियिमकाप्पर । (तायिन)
- ५ अणियणियायवर तिर्कुम-इग्ग
आरिय काट्टि घोर आर्तवमपो
पणिगळ पोरन्डिय माक्कुम-विरस
पग्गिदमोगुम वडिबभुम कापीर । (तायिन)

६ माताका श्रद्धा

पचास बर्ये पूब जब राष्ट्रीय महासभामे भी श्रद्धाकी कल्पना नहीं की थी उस समय कबि भारतीयने राष्ट्रीय ध्वजाकी कल्पना करके उसको एक रूप प्रदान किया था।

माताका उत्तम श्रद्धा देखो। सिर झुकाकर उसकी वंदना करें और उसकी कीर्ति गावें।

- १ उँपा-सा एक खम्भा ह। उसके शिखरपर एक कमकने-बासा गेधम उड़ रहा है जिसमें सुवस्ताके साथ 'बन्दे मातरम्' लिखा हुआ है।
- २ क्या उसको निरा रेसमका कपड़ा ही मानें ? उसको धरकर बड़ी ठेजीसे सहनेवाली माँभी जले तो भी उसकी परवाह न करनेवाला सबल पत्र है।
- ३ उसके एक पादमें इन्द्रका वज्र है दूसरी ओर हमारे मुसलमानोंका सूत्रका पाँव है। बीचमें माताका मग्न (बन्दे मातरम्) दिखाई पड़ता ह। उसके महारथको समझनेकी शक्ति किसमें है ?
- ४ कहीं भी दैतनेमें दुलम वीरोंका समूह सम्भेने नीचे (पास) खड़ा है देखो। वे बिस्वसनीय वीर अपने अमृत्यु प्राप्त देकर भी श्रद्धाकी रक्षा करेंगे।
- ५ उन लोगोंका पक्ति बढ़ खड़ा रहना—क्या यह कार्य वृष्म (उत्तम वृष्म) आनवप्रथ नहीं है ? उनके आसूषणोंसे अर्द्धकृत वसत्यक और विजय-श्रीके ठेजसे युक्त रूपको तो देखो।

- ६ क्षत्रमिष माद्दु पोदनर—कोडु
 तीककन मरवर्गळ, घोरन्वनवीरर
 सिद्धे तुमिन्व तेसुंगर—तामिन
 दोबद्धिके पणिसोपुबिद्धुम तुळुवर ।
- ७ कन्तडर ओट्टियरोडु—पोरिस
 काकनुम अञ्जककसककुम मराठर
 पोन्नगर बेवगळोप्प—निर्कुम
 पोर्पुडैयार इन्नुस्तानत्तुमस्सर ।
- ८ भूतलम मुट्टिडुम बरयुम—भरा
 पोरविरल याबुम मरप्पुलम बरैयुम
 मातगळ कर्पुळ्ळ बरैयुम—वारिक
 मरैवलम कीतिकोळ रजपुत्र बीरर ।
- ९ पञ्चनवत्तु पिरन्बोर—मुन्ने
 पार्लन मुडर पलर बाय्न्व नन्नाट्टार
 तुञ्चुम पोपुबिन्नुम तामिन—पड
 तोष्पु तिनसिडुम र्थमसिनोरुम
- १० शेम्बई काप्पडु कापीर—भवर
 सिम्बैयिन बीरम निरन्तरम बाय्न्ग
 तेम्बवर पोद्दुम बरत—नित्त
 तेवि तुयनम सिरप्पुर बाय्न्म (तामिन)

- ६ तमिल प्रदेशके वीर-भयकर आँसोंवाले मरब (नामक जातिके) लोग, जेर राज्यके वीर मिदिभस्त आंध्र लोग, माताकी सेवामें ही निरत तुलुव (जातिके) लोग ।
- ७ कन्नड़ लोग,ओट्टि (उत्कलके) लोग, काल भी डर जाए— इस प्रकार युद्धमें जूझनेवाले मराठे स्वर्गके देवताओंके समान सहृदयी हिन्दुस्तानके (आर्षावर्तके) वीर !
- ८ जबतक भूतल नष्ट न हो जाए जबतक धर्म-युद्धकी विजयका अंत न हो, जबतक माताओंका सतीत्व नष्ट न हो तबतक बनी रहनेवाली कीर्तिमें युक्त राजपूत वीर !
- ९ पौष नदीके प्रदेशके लोग पार्थ आदि वीरोंके जन्म प्रदेशके लोग सोते हुए भी माताकी चरण-सेवाका ध्यान रखनेवाले वंशके लोग !
- १० एक साथ होकर उग्र (सण्ड) की रक्षा कर रहे हैं, देखो, उमका एकाग्र वीरत्व सदा बना रहे ! समर्थ लोगोंसे प्रशंसित भारत देवीकी ध्वजा बनी रहे !।

भारत समुदायम्

भारत समुदायम् बावू गवे—बावू ग चापू ग
भारत समुदायम् बावू गवे—जय! जय!!, जय!!! (भारत)

मुप्पु कोटि धर्मगळि संगम
मुप्पु सैककुम पोडु उड्डेमे
ओप्पिताह समुदायम्
उलगतुवकोर पुडुमे—बावू ग (भारत)

१ मनिबर उण्ड मनिबर परिक्कुम
वयवकम इनियुण्डो ?
मनिबर मोपा मनिबर पारकुंम
वाव वकै इति युण्डो—पुसनिह
बावूवकै इति युण्डो—नम्मिसह
बावूवक इति युण्डो ?

इनिय पोयिळ गळ मेडिय वयल्लमळ
एण्डम पेसम नाडु
कनियुम किय गुम धान्मंगळुम
कनिकियि तसम नाडु—इडु
कनिकियि तसम नाडु—मित्त मित्त
कनिकियि तसम नाडु—बावू ग (भारत)

२ इनि योर विधि दोय्बोम—अह
एह गाल्लुम काप्पोम
तनि ओद्वनुवकुजा विले एमिस
उलगिने भयित्तुडुबोम—बावू ग (भारत)

भारतीय समुदाय

भारतीयों की यह रचना उनके पाश्चिमीयों से बापस आ आनेके बादकी है। आज हम अपना स्वात्म को कल्याण्य भागते हैं। आजसे पचास वर्ष पूर्व कविने स्वतन्त्र भारतकी कौसी कल्पना की थी—इसकी मलक हम यहाँ पाते हैं।

भारत समुदाय जिए । भारत समुदाय जिए ।
जय ! जय !! जय !!! (भारत)

तीस करोड़ लोगोंके इस सभपर सबका समान स्वत्व रहेगा । यह अनुपम जन समुदाय है—सारे सभारके लिए एक मदीनता है ।

- १ मनुष्यका आहार मनुष्य छीन ले—यह क्रम क्या आगे चल सकेगा ? मनुष्यको तड़पते देखकर मनुष्य (चुपचाप) देखा करे ऐसी जिन्दगी क्या आगे चल सकेगी ? इस देशमें ऐसी जिन्दगी चल सकेगी ? हममें ऐसी जिन्दगी चल सकेगी ?

अनन्त उपजाऊ जमीन और सुविस्तृत क्षेत्रोंसे परिपूर्ण हमारा देश है । अपरिमित फल, मूस बंद आदि देनेवाला यह देश है—यह अपरिमित देनेवाला देश है । निरत प्रतिदिन अपरिमित देनेवाला देश है ।

- २ अब एक नियम बनाएँगे और सदा उसकी रक्षा करेंगे । यदि कभी किसी एक ब्यक्तिके लिए भी आहार न रहे तो हम सभारको मिटा देंगे ।

- ३ " एस्सा उर्पिर्कळिलुम नाने इश्किरेन
 एभुरत्तान कण्ण वेदमान
 एस्तोव ममर तिल्लयेयुम मम्मुरय
 इन्धिया उर्कपिर्कळिकुम—भाम
 इन्धिया उम्भगिर्कळिकुम—आम—आम
 इन्धिया उम्भगिर्कळिकुम—बाय व (भारत)
- ४ एस्तोस्म ओर कुस्म एस्तोस्म ओरित्तम
 एस्तोवम इन्धिया मक्कळ
 एस्तोस्म ओर निरे एस्तोस्म ओर बिल्ले
 एस्तोस्म इन्ध्याट्टु मन्नर—नाम
 एस्तोस्म इन्ध्याट्टु मन्नर—भाम नाम
 एस्तोस्म इन्ध्याट्टु मन्नर—बायूग (भारत)
-

- ३ श्रीकृष्ण भगवानने कहा था, सभी जीवोंमें मैं ही रहता हूँ । सब सोग धमरत्न प्राप्त कर सकें ऐसा उत्तम माग भारत दुनियाको प्रदर्शित करेगा । हाँ भारत दुनियाको प्रदर्शित करेगा, हाँ, हाँ, भारत दुनियाको प्रदर्शित करेगा ।
- ४ सब एक कुलके हे, सब एक किस्मके हे, सब भारतकी सताने हूँ, सबकी एक तोछ, सबका एक मोरु—सब इस वेद्यके राजा हूँ, हम सब इस वेद्यके राजा हूँ, हाँ, हम सब इस वेद्यके राजा हूँ ।
-

८ सुतन्निर वाहम

एधु तपियुम इग्ब सुतन्निर वाहम ?

एधु मडियुम एंगळ अडिनेपिस मोहम ?

एधेमहमे के बिसंगुळळ पोगुम ?

एधम बिन्नसगळ तीर्बु पोय्यागुम ?

अधोव भारतमाक्क वग्बोने ।

आरियर वाप् बिने आडरिप्पोने ।

बेभि तरमतुष निन्नळभो

मेय्यडियोम इधुम वाडुडसमभो ।

पंजमुम नोयुम निम मेय्यडियाको ।

पारिनिस मेन्नीगळ बेरिनिमाको ?

तजमडैरपिन के बिडलामो ?

तायुम तन कृप र्देयै तळ्ळिळभोमो ?

अजलेभळळ धोयुम कडमे पिसायो

आरिय भीयुम निम अरम मरम्बायो ?

बेनपलरवरे धीट्टिडुबोने

धीर अिज्जामणि आरियर कोने ।

८ स्वतंत्रताकी प्यास

भाषीके इस गीत पर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार बहुत इष्ट हुई। पर इस पर कोई कानूनी कार्रवाई नहीं बला सकी क्योंकि इसमें राजद्रोहकी कोई बात नहीं है।

हमारी स्वतंत्रताकी प्यास कब बुझगी? हमारा दासताके प्रति मोह कब नष्ट हो? हमारी माँके हाथकी हथकड़ियाँ कब गिरेंगी? हमारे कष्ट कब मिटकर झूठे (निरे स्वप्नवत्) बनेंगे?

उस दिन महाभारत मन्थानके छिमे ओ आए—हे आर्योंके जीवन रक्षक! विजयकी प्राप्ति क्या तुम्हारी ही कृपासे नहीं होती? (तुम्हारे) सच्चे भक्त (हम) सूखते आएँ—यह क्या ठीक है? अकास और भीमारी क्या ठरे सच्चे भक्तोंके लिए हैं? तो फिर ससारके सुख-संभव किसके लिए हैं? कोई धरणमें आवे तो क्या उसे वृक्षया आता है? माँ भी भला क्या अपने सिधुको दुतकार दे? हे आर्य, क्या तुम भी अपना कर्तव्य भूल गए? कठोर कर्मवाले राजसोंके हे जातक! हे वीर सिद्धामणि, हे आर्योंके राजा! क्या व्यय प्रदान करना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है?

१० वाष्पुग नी सम्मान

महात्मा गांधी पञ्चकम

- १ वाष्पुग नी सम्मान, इन्वर्षेयस्तु नाट्टिकेस्मान
 ताप्बुद्दु धरमे निधि बिडुबलत्तवरिकेद्दु
 पाप् पददु निद्रबाम ओर भारत बेरामतम्न
 वाप्बिककवस्त्र गांधि महात्मा नी वाप प । वाप प ।
- २ भक्तिमे वाप् बगधि नाट्टार बिडुबले घाग्नु शेस्वम
 कुडिमयिल उयर्नु, कस्त्रि ज्ञानमुम कूडि योधि
 पडिमिश तसेमे येपुडुम्बडिककोर श्पुञ्चि शेप्बाय
 मुडिविसा कीर्ति पेद्राय भुविककुळ्ळ मुडग्मे युद्राय ।
- ३ कीडि वेभ्राग पाशरी माट्ट
 मूलिग कोणम्बन एनको ?
 इडिमिद्रल तांगुम कुडे शेप्बात एनको ?
 एन शोत्तिप्पुगय बडिगुमे ये ?
 विडिविसा तुम्बम शेप्पुम पराधीन
 वेम्बिणि यगट्टिडुम बण्णम
 पडिमिध पुडिदा क्कासबम एळिबाम

१० हमारे महात्माकी जय

महात्मा गांधी पठनक

गांधीजीने जब महाह्मोग आग्दोत्न आरम्भ किया तब कबिने उनकी
छिने से पाँच गीत रचे ।

१ जीयो हे हमारे महात्मा ! इस संसारके वेदोंमें निम्न
स्थान पाकर दरिद्र होकर स्वतंत्रता खोकर, भ्रष्ट होकर
जो भारत दुरवस्थामें था, उसको जिलानेके लिए आए हुए
हे गांधी महात्मा, तुम जियो ! जियो !!

२ तुमने ऐसा क्रम रचा कि देशवासी दासखसे निवृत्त
होकर स्वतंत्र होयें, धन और धान्यसे सम्पन्न हों शिक्षा
और ज्ञानमें उच्च हों और संसार भरके नेता बनें । तुमने
अनंत कीर्ति पाई, संसार भरमें प्रथम स्थान पाया ।

३ क्या तुम वह हो जो भयकर मागपाशको काट डालनेके
लिए मूछिका (बड़ी बूटी) खाया ? बज्र और बिद्युतकी
सहनेकी शक्ति रखनवाला (गोयधन गिरिरूपी) छाता
बनानेवाले हो क्या ? क्या कहकर मैं तुम्हारी कीर्ति
गाऊँ ? अनंत सफ्टोंको पदा करनेवाली पराधीनताको
दूर करनेके लिए तुमने संसारके लिए नया और अति सरल
उपाय निकाला ।

३३ कवि मंगलिन पुगपु

१ बेळ्ळ तामरै पूबिल इस्प्याळ
 बीजे होय्युम भोसियिल इस्प्याळ
 कोळ्ळे इन्वम कुसबु कविते
 कूद पाबलर जळ्ळत्तिस्प्याळ
 जळ्ळबाम पोळ्ळ तेदि मुण्न्
 भोडुम बेवत्तिनुण्ण्यप्रोळिवाळ ।
 कळ्ळ मट्ट मुनिबर्गळ कूदम
 कवणे पाचकपुट्ट पोयळाबाळ् । (बेळ्ळ)

२ माबर तींगुर पट्टिल इस्प्याळ
 मक्कळ वेणुम मयसेयिल जळ्ळाळ
 गीतम्पाडुम कुयिलिन कुरसे
 किळियिन मावै इवप्यिबम कोण्ळाळ ।
 कोदगम तोयिसुईतापि
 कुसबु बित्तिरम गोपुरम कोयिल
 ईरनत्तिन एयिसिबं मुट्टाळ
 इन्वमे बडि बायिडु वेट्टाळ । (बेळ्ळ)

११ कला देवीकी स्तुति

काम्पेयी सरस्वती विद्याकी अधिष्ठात्री देवी है। इसको तमिसमें "कलै माळ" कहते हैं। बसहरेमें नवमीके दिन तमिस प्रदेशमें "सरस्वती पूजा" बड़ी धूमधामके साथ मनाई जाती है। इस त्पीहारको भोग "आयुष पूजा" भी कहते हैं। इस दिन सब मीनारोंकी पूजा होती है। यंत्रोंपर काम करनेवाले अपने-अपने यंत्राकी पूजा करते हैं। सभी घरोंमें पुस्तकोंकी पूजा होती है।

१ कलादेवी श्वेत पद्ममें निवास करती है। कीणाकी ध्वनिमें रहती है। अपार आनन्द प्रदान करनेवाली कविता रचनेवाले कवियोंके हृदयमें रहती है, एक मात्र 'सत्य' को सोचकर उसको पहचाननेके बाद प्रकट करनेवाले वेदोंके अदर स्थित होकर भजकती है। यह देवी निष्कपट मुनि-पराके कथना पूर्ण वचनोंका सार-रूप है।

२ माताओंके मधुर ध्वनि-युक्त गीतोंमें रहती है, बच्चोंकी तुलसी घातोंमें रहती है, उस देवीन मीत गानेवाली कोयलकी आवाज और तोतली जीमकी अपना वासस्थान बना लिया है। निर्दोष कारीगरीसे पूर्ण चित्र, गोपुर मंदिर आदिकोंके सौन्दर्यमें रहती है। यह मूर्तिमत् आनन्द है।

३ बह्म मद् तोयिल पुरिमुचु
 बायुम मान्बर कुल बंभमाबाळ्
 वेञ्जामकुंपिरागिय कोस्तर
 बिह्योन्बिह्य शिपियर तञ्जर
 मिळ्जा नपोंछळ बाधिगम शोयुबोर
 बीर मन्नर पिन बेदियर यादम
 तंजमेधु बर्णगिडुम बेयबम
 बरभि मीबरिबागिय बेयबम । (बेळ्ळ)

४ बेयबम याबुम बर्णगिडुम बेयबम
 तीने काट्टि विन्नकिडुम बेयबम
 जयबमेय करलुडे योर्गळ
 जयिरिनुक्कु पिरागिय बेयबम
 शोयबमेधोब शोयगै एडुप्पोर
 शेम्मे नाधिपिन्बिह्युम बेयबम
 कैबलन्बि उरैप्पबर बेयबम
 कबित्तार बेयबम, कडबुळार बेयबम । (बेळ्ळ)

५ शोम्बनिय मधि नाट्टिडे युळ्ळीर
 शेन्बिल्ले बणद्दागुबम मारीर
 बन्बनम इबटके शोयुब बेघाल
 बायि यचित्तुळे लिबपु कण्डीर ।
 मग्गिरलै मुजु मुजुत्तेट्टे
 बरिशो याग अडुक्कि मबन मेल
 शय्यनलै मलरै यिडुबोर
 शास्तिरम अबळ पूजनयथाम । (बेळ्ळ)

- ३ निर्वोप काम करके जीवन-भापन करनेवाले मनुष्योंकी यह कुटुम्ब-देवी है। लुहार, धित्प्य घास्त्री बढई अन्धी वस्तुओंका व्यापार करनेवाले वैश्य, भीर राजा ब्राह्मण—सभी इस देवीके चरणोंपर झुकते हैं। यह इससंसारमें ज्ञानमय देव है।
- ४ सभी देवता इस देवीको पहचानते हैं। यह देवी सफ़ट पैदा करके उसको फिर हटा देती है। सबकी भलाई चाहने-वालोंकी यह देवी जानकी जान है, जो कार्य आरम्भ करके उसमें सत्कीर्ण हो जाते हैं, उनकी भलाई करनेवाली देवी है। उन छोड़कर परियम करनेवालोंकी देवी है कवि चरोंकी देवी है आस्तिकोंकी देवी है।
- ५ उत्तम तमिस्र प्रवेशके रहनेवालो ! आओ हम सब मिस्रकर इस देवीकी वन्दना करें। यह अन्धी तरह जान लो कि इस देवीकी वन्दना करना कोई आसान काम नहीं है। बिना अर्थ समझे मात्रका उच्चारण करो और पुस्तकें एक पर एक सजाकर रलो और उनपर फूल और चदम बढाओ—यह अंधी रीति उस देवीकी (सच्ची) पूजा नहीं है।

व-धी मासा—●

६ वीडुबोरुम कसैयिन विळक्कम
 वीवितोरुम इरब्बोर पळ्ळ
 माडु मुट्टिसुम उळ्ळम ऊगळ
 मगगळ्ळेगुम परु परु पळ्ळ ।
 तेडु कस्त्रि इस्ताब बोकरे
 तीयिनुक्किरेयाग मडुत्तल
 केडु तीकुंममुबमेन मन्न
 केष्मं कीळ्ळ वयि इव कण्डीर । (वेळ्ळे)

७ ऊपर बेसाम यवनर तम बेसाम
 जवय कायिट्टोळि वेव माडु
 होणयभबोर शिट्टिळि क्षीमम
 शोस्त्र पारसिक पयन्बेसाम
 तोणल्लत तुस्त्रकम मित्तिरम
 शूय कडकप्पुरत्तिनिल इमुम
 काप्पुम पर्यस माट्टिंटे एस्साम
 कस्त्रि बेवियिन शोळि मिगुगुबोण । (वेळ्ळे)

८ जाल मेन्बबोर शोस्त्रिन पोळ्ळम
 नल्ल भारत माट्टिंटे बम्बीर
 ऊनमिषु वेरिविर्दिक्रीर
 शोंगि कस्त्रि मुयं प्यं मरगुबीर
 मानमट्टु थिलंगुपळोप्प
 मन्थिल्ल बाय यवे चाप् वेनलामो
 पोन्बर्कु वरुन्नुबल वेण्डाम
 पुन्म शीप्प मुयन्नुवम बारीर । (वेळ्ळे)

६. घर-घर कक्षाका ज्ञान कराया जाए गछी-गल्लीमें एक-दो पाठशालाएँ खुलें, देश भरके सभी गाँवों (और शहरों) में कई पाठशालाएँ खुलें, बिस गाँव (या शहर) में विद्या (का प्रचार) नहीं है उसे बूँद-बूँदकर जहाँ विद्या जाए, माताका प्रसाव पानेके ये ही मार्ग हैं ।
७. हूणोंका देश यवनोंका देश, उदय-सूर्यका प्रकाश पाने-वाला (जापान) देश, चीन, घनी पुराना पारसीक देश, तुर्की मिसर, और समुद्र पारके सभी देशोंमें विद्यादेवीका प्रकाश फैल जाए ।
८. ज्ञान केवल शम्भुका भाव है । है भारतवासियो । तुम लोग एक बहुत बड़ी भूल कर रहे हो । जलत विद्याके लिए (आवश्यक) परिश्रमको तुम लोग भूल ही गए हो । मान-मर्यादा स्वीकार मृगतुल्य जीना भी कोई जीना है ? जो जीत गया, उस पर अय दुखी मत होमो । संकट दूर करनेका प्रयत्न किए ।

९. इन्द्रवर्गनि श्लोकागळ शेषदस
 इतिय नीर तण शुनेमळ इयदस
 अन्न सत्तिरम आभिरम बेत्तल
 आसमम पबिनायिरम मादृस
 पिन्नळळ बभमगळ याबुम
 पेयर चिळपि योळिरा निरुत्तल
 अन्न याबिनुम पुष्पियम कोटि
 आंगोर एव ककेपुत्तरिचित्तल । (वेळळ)

१०. तिवि मिगुन्बवर पोर्कुबे तारीर
 तिवि कुरेन्बवर कासुगळ तारीर
 मडुबु मटुबर बायचोस अळ्ठीर
 आयमंयाळर उर्चपिनै नल्पीर
 मडुर ते मोवि माबरगळेस्साम
 बाभि पुशेक्कुरियम पेशीर
 एडुबुम नस्मि इंगेबुबमै यामुम
 इपेवम तोपिल मादृबुम बारीर । (वेळळ)

९ अति स्वादिष्ट कंद, मूल, फल आदिका वाग-वगीचा
 रगाना, मीठे जलका आद्य स्यापित करना, हजारों अन्न
 सत्र (जहाँ बिनापसेके भोजन मिल जाता है) स्यापित
 करना और दस हजार देवास्य बनवाना, ये सभी धर्म
 ऐसे हैं कि इनके द्वारा बनानेवालेका नाम प्रसिद्ध होकर
 वैजयुक्त हो जाता है। उन सबसे करोड़ गुना उत्तम है—
 एक गरीबको अक्षर सिखाना ।

३० धनिको ! स्वयंका डर दे दो, धनहीनो ! पीसे-पीसे
 दे दो । दीनो, केवल मुंहसे आशीर्वाद दे दो । पौष्ट्य-
 बालो ! धर्म-दान दे दो । मधुर वचनवाली माताओ !
 बापी पूजाके योग्य वचन दोसो । कुछ भी लेकर किसी
 तरह, माओ हम यह महान काम कर डालें ।

१४ पाप्पा पाट्ट

- १ ओडि विल्लयाडु पाप्पा—मी
ओय्मिस्सक सागाडु पाप्पा ।
कूडि बिल्लियाडु पाप्पा—ओद
कुयम्बैये वयादे पाप्पा ।
- २ विमपिद कुरुपि पोसे—मी
तिरिन्नु परन्नु वा पाप्पा
वण्य परवं गळं कण्डु—मी
ममबिस मगिक्किन्न कोळ्ळुपाप्पा ।
- ३ कोत्ति तिरियुमम्ब कोपि—मबै
कूट्टि बिल्लियाडु पाप्पा
एत्ति तिरडु मम्ब काक्काय-अबकुं
इरक्कप्यडा वेण्डुम पाप्पा ।
- ४ पालं पोयिन्नु तस्म पाप्पा-अम्ब
पशु मिय नल्सदडि पाप्पा
वाल कुय सुबस्म नाय्दान-अडु
मनिबकुं तोप् मडि पाप्पा ।
- ५ अण्डि इय वकुम नस्स कुबिरै-नेल
वयात्तिस उयुडु वस्म भाडु
अण्डि पिय वकुम नम्मे भाडु-इय
भादरिक्क वेण्डु मडि पाप्पा ।
- ६ कासै एय न्द उडन पडिप्पु विन्नु
कनिड कोडुवकुम नस्स पाट्ट
मासै मुय वुम बिल्लियाट्टु—एयु
वय्पक्कम पडुत्तिकवोळ्ळुपाप्पा ।

१२ वृत्तोंका गीत ।

पाप्पा शब्दका अर्थ है मन्हा बच्चा । कविके दो पुत्रियाँ हैं जिनमें छोटी "पाप्पा" नामसे पुकारी जाती है । उसको शिक्षा देते हुए कविने यह गीत रचा ।

- १ बच्चे ! हमेशा खेलता-कूदता रह कभी सुस्त होकर मत बैठ । अस्य बच्चोंके साथ मिलकर खेल । किसी बच्चेको गाली न दे ।
- २ नन्हे-भन्हे गौरेयेकी तरह तू भी इधर-उधर खेलता-कूदता रह । रंग बिरंगे पक्षियोंको देखकर तू झींझें ठडी कर ।
- ३ वह मुर्पा देख, जमीनको चोंचसे कुरेद-कुरेदकर अपना भोजन खोज रहा है । उसको साथ लेकर तू खेल । कौआ झपटकर दूसरोंका भाल चुरा लेता है उसपर दया कर ।
- ४ गाय दुध देती है । वह बहुत अच्छी है । वह कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ भा रहा है—वह मनुष्यका साथी है ।
- ५ घोड़ा, पाड़ी सींचता है । धैर्य किसानोंके काम आता है । वह हलमें ओता जाता है । यकरी हमारा आश्रय पाकर बीती है । इन सबका पालन करना चाहिए ।
- ६ सवेरे जागकर पढ़ना फिर उत्साहपूर्ण गीत (का अभ्यास करना) धाम भर लेखना—इस क्रमकी आगत कर ले ।

- ७ पोय शोस्त कूडाहु पाप्पा—एधुम
पुरं शोस्त लायाहु पाप्पा
बेय्वम नमवहु तुणं पाप्पा—ओर
तीगु वर माट्टाहु पाप्पा
- ८ पातकं सेय्ववरं कण्डाल—नाम
बयंकोळ्ळ लागाहु पाप्पा
भोदि मिबित्तु बिहु पाप्पा—अवर
मुपत्तिल जमिय न्नु बिहु पाप्पा ।
- ९ सुम्बम मेबंगि बग्ग पोडुम—नाम
शोर्नु विड सागाहु पाप्पा
अग्गु मिगुम्ब बेय्वम उण्डु—सुम्बम
अत्तर्नुम पोक्कि विडुम पाप्पा ।
- १० शोम्बल मिय केडुदि पाप्पा—ताय
शोश शोस्से तट्टावे पाप्पा
तेम्बि यय कुय्यवे मोण्डि—जी
तिड कोण्डु पोराहु पाप्पा ।
- ११ तमिय तिब नाहु बर्मे पेदु—य्यळ
तायेसु कुम्बिडडि पाप्पा
अनिय बिल इणियबडि पाप्पा—नम
भाधोर्गळ बैदा मडि पाप्पा ।
- १२ शोस्सिल उयर्नु तमिय शोस्से—अव
तोपहु पडित्तिडडि पाप्पा
शोस्वम निरग्ग हिन्दुस्तानम—अवे
बिलमुम पुगय्नु बिडडि पाप्पा ।
- १३ पडविकुल इमय मरुं पाप्पा—तेरुल
षायुम कुमरि मुनें पाप्पा
किडवहुम पेरिय कडल कण्डाय—इवन
किपुक्किलुम मेकिसुम पाप्पा ।

- ७ धूठ नहीं बोलना चाहिए । कभी पीठ पीछे मिदा नहीं करनी चाहिए । ईश्वर हमारा सहायक है हमपर कभी कोई सकट नहीं पड़ेगा ।
- ८ अत्याचार करनेवालेको देखे तो कभी उससे डरना नहीं चाहिए । उसको गिराकर पैरोंसे कुचल डाल, उसके मुंहपर पुक दे ।
- ९ जब हमपर विपदा आए, तब हमें भयभीत नहीं होना चाहिए । परमात्मा प्रेममय है, वह उन विपदाओंको दूर कर बाड़ेगा ।
- १० सुस्त रहना बड़ा बुरा है । माताकी बातोंकी अवहेलना न कर । घास-घातपर रोनेवाला यच्छा पशु है । तू डटकर लड़ ।
- ११ “हमारी माँ पवित्र तमिल भूमि है”—कहकर उसकी श्रद्धा करना कर । यह समूह भी उत्तम है । हमारे पवित्र पूर्वजोंका श्रेष्ठ है ।
- १२ भाषाओंमें श्रेष्ठ तमिल है । उसका श्रद्धापूर्वक अभ्यास कर । हमारा हिन्दुस्थान समृद्ध है । उसकी प्रतिदिन स्तुति कर ।
- १३ इस देशके उत्तरमें हिमालय है और दक्षिणमें कुमारी अन्तरीप । पूब और पश्चिममें बड़े समुद्र हैं ।

- १४ वेव मुडेयविम्ब नाडु-नस्त
 बीरर पिरम्ब विम्ब नाडु
 षोब मिस्ताब हिन्युस्तानमु-इरै
 वेय्वमेषु कुम्बिडडि पाप्पा ।
- १५ वातिगळ इस्सै यडि पाप्पा-कुस
 तापु क्खि उयञ्चि षोत्सस पाषम
 पीति उयम्बै मति कस्सि-अम्बु
 निरैय डडैयबर्गळ मेसोर ।
- १६ उयिर्गळिडडित्तल अम्बु वेप्पुम-वेप्पुम
 उप्पै एम्बु तामरिबस वेप्पुम
 वयिरा मुडेय नेप्पाम वेप्पुम-इडु
 वापुम मुरैमै मडि पाप्पा ।
-

- १४ इस देशमें बेवोंकी उत्पत्ति हुई । उनक वीर हुए । यह हिन्दुस्तान हर तरह से सम्पन्न है—इसे दब मानकर इसकी बन्दना कर ।
- १५ आति नामकी कोई वस्तु नहीं है । कृष्णकी उष्णता या नीचता मानना पाप ह । नीति, उत्तम बुद्धि विद्या प्रेम—इनसे मुक्त लोग बड़े हैं ।
- १६ जीबोंसे प्रेम करना चाहिए । यह भानना चाहिए कि ईश्वर सत्य है । निश्चल मन चाहिए । यही जीनेका उपाय है ।
-

१३ मुरगु

वेद्वि एददु विवकुम एट्ट कोटदु मुरसे
 वेबम एभुम वापुग एधु कोटदु मुरसे
 नट्टि योट्टे कण्यनोडे निरुतनम शेय्बळ
 निथ शक्ति वापुग बेछु कोटदु मुरसे

१ ऊरुवकु नस्तदु शोस्वेन-एना
 कुर्म्म तेरिम्बदु शोस्वेन
 श्रीदत्तकेस्सा मुबलागुम-ओब
 बेयबम तुर्म्म शोम्पबेण्डुम ।

२ बेद मरिम्बबन पाप्पान-पल
 बिह तेरिम्बबन पाप्पान
 नीबि निसं तवरायल-बण्ड
 सेयंगळ शेय्बबर माय्कन ।

३ पण्डगळ विरुपन शोट्टि-पिरर
 पट्टिपि तीरुपन शोट्टि
 तोण्डरेभोर वगुप्पिस्से-तोपिस
 शोम्बसे पोल इपिपिस्स

४ नानुम वगुप्पुम इंगोत्रे-इम्ब
 नानुगिनिल ओयु कुरम्बास
 बेले तवरि सिबन्वे-शेतु
 शीय्न्बिदुम मानिड वाति ।

५ ओट्टे कुडुम्बावनिले-पोरुळ
 ओंग वळपवन तन्ने
 मट्टे कर्म्मगळ शेय्बे-मने
 वाय मिड शेय्बळ मने ।

१३ शंका

हे डके तुम इस तरहकी ध्वनि पैदा करो कि विजयकी घोषणा माठों दिशाओंमें हो जाए। तुम्हारी चोटमें बदोंकी सदा अय गुंजरित हो उठे। तुम्हारे चोटकी झकारमें 'मिनेत्रके साथ नतन करनेवाली माठा अस्त्रकी सदा अय हो।" यह ध्वनि गुंजरित हो उठे।

- १ मैं बेघाके हितकी बात कहता हूँ मुझे जो सत्य प्रतीत होता है वह कहता हूँ जितनी भी भलाइयाँ हैं, उन सबका आवि पुरुष हमारी सहायता करे।
- २ वेद खाननेवाला ब्राह्मण हूँ कई विद्याएँ जाननेवाला ब्राह्मण हूँ। नीति और नियमका पालन करते हुए दण्ड और पालनका प्रवर्ध करनेवाला नायक (क्षत्रिय) हूँ।
- ३ वस्तुएँ बेचनेवाला श्रेष्ठि (वश्य) हूँ। औरोंकी भूख मिटानेवाला श्रेष्ठि हूँ। 'दास' नामकी कोई आति नहीं हूँ। सुस्तीसे बढ़कर अन्य कोई नोचता नहीं हूँ।
- ४ यहाँ चारों बज एक समान हैं। इन चारमेंसे यदि एक भी बज हो जाए तो काम बिगड़ जाएगा। मनुष्य बगं हो नष्ट हो जाएगा (भग्न होकर गिर जाएगा)।
- ५ कुटुम्बमें वस्तुओंका सग्रह पिता करता है। अग्य काम संपाद्यती हुई माँ कुटुम्ब चलाती है।

- ६ एवसपल सोयववर मकल-इवर
यावसम ओर कुसमयो
मेवि अनैवसम ओघाय-नस्त
बीडु नडतुवस कण्डोम
- ७ साबिप्पिरिबुगळ सोत्सि-अदिस
ताय वेधुम मेलेधुम कोळवार
नोबिप्पिरिबुगळ शोधवार-अंगु
निसमुम सधेगळ सोम्वार ।
८. सादि कोडु मंगळ बेण्डाम-अन्बु
बभिस सोपित्तुम वयम
मादरबुद्रिगु बाप् बोम-सोपिल
मायिरम माण्पुरा सोय्बोम ।
- ९ वेधुक्कु शानसे बैतान-भुवि
वेणि बळत्तिडुम ईशान
मण्णुक्कुळ्ळे शिस भूडर-मस्त
मादररिवे केडुत्तार ।
- १० कणाळ इरणिमिस ओर्धे-कुत्ति
काद्वि केडुत्तिडु लामो
वेणाळ अरिवे बळत्तान-वयम
वेबेने यद्रिडुम काणीर ।
- ११ बेम्पम पत्तप्पळ सोत्सि-पगै
तौयं बळपवर भूडर
उय्वबनेत्तिलुम ओघाय-एंगुम
ओर पोळ्ळामडु बेम्पम ।
- १२ सोयिर्म कुम्बिडुम पाप्पारि-नित्तम
रिवर्क वण्डगुम तुक्कर
कोइस गित्तुम्बियत मुन्ने त्रिपु
कुम्बिडुम येशु मरत्तार ।

- ६ पुत्र सेवाके काम करते हैं। क्या ये सभी एक ही कुटुम्बके नहीं हैं? हम देखते हैं कि सब एक होकर अच्छा कुटुम्ब बनाते हैं।
- ७ जो जातिका भेद बताकर उसमें ऊँच और नीचका अंतर मानते हैं वे नीतिमें अंतर साते हैं और प्रतिदिन शगड़ा पदा करते हैं।
- ८ जातिका कट्टु वर्गीकरण हमें नहीं चाहिए। यह ससार प्रमसे पलता है। हम यहाँ आदरके साथ रहेंगे और अनेकों कार्य करेंगे।
- ९ ससारका भार सम्हालनेवाले ईश्वरने स्त्रियोंको (भी) ज्ञान प्रदान किया है। परन्तु इस मिट्टीके मोहमें कुछ लोगोंने स्त्रियोंकी बुद्धिको भ्रष्ट कर दिया है।
- १० वो आँखोंमें एकको गप्ट करके क्या दृश्यका आनंद उठाया जा सकता है? यदि स्त्रियोंकी बुद्धिको बढ़ाया जाए तो निश्चय है कि ससारकी कमियाँ दूर हो जाएँगी।
- ११ जो लोग देवकी अनेकता मानते हैं वे सिन्धुनाकी आम प्रवृत्ति करते हैं। ईश्वर एक है और सबमें समाया हुआ है।
- १२ अग्निकी पूजा करनेवाले ब्राह्मण प्रतिदिन दिशाकी पन्दना करनेवाले मुसलिम भविरमें सूलीके सामने खड़े होकर प्रायना करनेवाले ईसाई,

- १३ पाश्चम पणिन्दिडुम बेय्वम-पोरळ
 याविनुम निन्दिडुम बेय्वम
 पाश्चकुळ्ळे बेय्वम ओधु-इरिस
 पपस हण्डेगळ बेण्डाम ।
- १४ वेळ्ळ निरसोव पुर्म-एंगळ
 वीट्टिल बळसु कण्डीर
 पिळ्ळपळ पेद्रु पुर्म-भवे
 पेवक्कोव निरम आयुम ।
- १५ पाम्बस निरम ओव कुट्टि-कडम्
 पाम्बु निरम ओव कुट्टि
 पाम्बु निरम ओव कुट्टि-वेळ्ळे
 पाल्लिन निरम ओव कुट्टि ।
- १६ एन्व निरमिन्नाकुम-भव
 माकुम ओरे तर मयो
 इन्व निरम शिरिबेमुम-इण्तु
 एट्टुमेधुम शोस्त्तामो ।
- १७ बण्णपळ वेट्टुर्म पट्टाल-अविस
 मानुबर वेट्टुर्म इस्ते
 एण्णपळ शोप्पीपळ एस्ताम-ईणु
 पाबकुंम ओमेतल काचीर ।
- १८ निगरेधु कोट्टु मुरसे-इन्व
 मीणिसम चाप ववरेस्ताम
 मगरेधु कोट्टु मुरसे-पोप्र्म
 चादि बगुप्पिर्ने एस्ताम
- १९ मय्येधु कोट्टु मुरसे-अविस
 माक्कमुण्डा मेधु कोट्टु
 तुन्वपळ पाधुमे पोणुम-वेरुम्
 एडु पिरिवुपळ पोतास ।

१३ ये सब जिस देवकी पूजा करते हैं वह सर्ववन्दित हैं, सर्वभ्यापी हैं। सबका एक ही देव है—इसमें सागड़ोंकी आवश्यकता नहीं है।

१४ और १५ सुनिए, हमारे घरपर एक सफेद रंगकी बिस्ली पल्लती है। उसके कई बच्चे एक ही माँसे उत्पन्न होनेपर भी हर एकका अलग अलग रंग है।

उनमेंसे एक मटमैला है, एक कालज-सा काळा। एक बच्चा साँपके रंगका है और एक बूझ-सा सफेद।

१६ रंग चाहे जो हो क्या वे सभी बच्चे एक समान नहीं हैं? क्या यह कहा जा सकता है कि अमुक रंग अच्छा है और अमुक बुरा?

१७ रंग बदलता है, इसलिए यह आवश्यक नहीं कि मनुष्य भी बदले। विचार और कार्य सबक एक हैं—यह जानो।

१८ हे बच्चे! तुम्हारी ध्वनिमें यह उद्घोषित हो कि इस संसारके सभी निवासी समान हैं। अपनी ध्वनिसे यह घोषित करो कि झूठा जातिभेद छोड़ा जाए।

१९ (सभी यह समझें) कि प्रेम आवश्यक है और उसीमें भलाई है। यदि छल-कपटका भेदभाव मिट जाए तो बुराईयाँ दूर हो जाएँगी।

- २० अम्बेधु कोट्टु मुरसा-मक्कळ
 अत्तमै पेक्कम मिगारात्त
 इ-बंगळ यावुम पेदुगुम-इंगु
 यावत्तम ओध्रेधु कोण्बात्त ।
- २१ उडन पिरन्बार्गळै पोत्ता-इवु
 उत्तगित्त मनिद रेत्तात्त
 इडम पेरिट्टुक्कु वेयत्तित्त-इदित्त
 एदुक्कु वाण्बंगळ शोय्वीर ।
- २२ मरत्तिने नट्टवन तण्णौर-मम्मु
 वात्ते ओयिड शोय्वान
 शिरई युडैयदु वेय्वम-इगु
 शोर्दै उवा वेत्तै इत्तै ।
- २३ वपिट्टुक्कु शोरुक्कु कण्डीर-इंगु
 वायुम मनिद रेत्तोर्कुम
 पपिट्टु वायुक्कु वायवीर-पिरर
 पंगै तिक्कुत्तल वेण्बात्त ।
- २४ उडन पिरम्बवर्गळै पोत्ता-इवु
 उत्तगित्त मनिदरेत्तोक्कु
 तिडम कोण्बवर मेत्तिम्बोर्-इम्मु
 तिम्मु पिपैत्तिड सामो ।
- २५ वत्तिम्मे युडैयदु वेय्वम-मम्मे
 वायुत्तिड शोय्वदु वेय्वम
 मेत्तिम्मे कण्बात्तुम् कुपण्द-वत्त
 शोय्वत्ति मिदित्तिड सामो ।
- २६ तम्बि शट्टे मेत्तिवानात्त-अण्णान
 तानडि मे कोळ्ळ सामो ?
 शोम्बुक्कुम् कोम्बुक्कुम् वत्ति मक्कळ
 गिट्टिट्टिम पडा सामो ।

- २० सभी मनुष्य समान हैं। यदि हम जान जाएँ कि सब समान हैं तो सुखकी खूब वृद्धि होगी।
- २१ इस ससारके सब लोग भाई-भाईके समान हैं। यहाँ स्वाम बहुत है। इस ससारमें (फिर ब्यथ ही) क्यों सड़ा जाए।
- २२ जिसने पौधा लगाया वह बराबर पानी देकर उसकी बढ़तीका ध्यान रखता है। ईश्वर सतक है। यहाँ अन्न अपार है।
- २३ इस ससारके सभी मनुष्योंके पेटके लिए यहाँ अन्न है। तुम लोग परिश्रम करके पदा करो और साथो, दूसरोंका हिस्सा मत भुराओ।
- २४ इस ससारके सभी लोग सहोदर-सम हैं। क्या यह उचित है कि सबके निर्बलको छोड़ें ?
- २५ सब सबके हैं। हमारा पालन देव करता है। बच्चा दुर्बल है इसलिए क्या उसको ठुकराया जाए ?
- २६ छोटा भाई अथ कमजोर है—इस कारणसे क्या बड़ा भाई उसे अपना दास बना ले ? चाँबेके या साठीके भयसे क्या मनुष्य दास बन जाए।

२७ मन्त्रेषु कोद्दु मुरसे-अदिस
 याकुंम विदुबसे युष्पु ।
 पिन्नु मनिबर्ग छेस्साम-कस्वि
 पेदु पबम पेदु वापु पार ।

२८ अरिवं वळतिडस वेण्डुम-मक्कळ
 अत्तने पेक्ककुम बोधाय
 शिरियारं मेन्बड शोम्बाल-पिन्नु
 बेय्बम एस्सोरयुम वापु लुम ।

२९ पाक्कळ्ळळे समत्तर्म-तोडर
 पदुम स्होडरर तने
 पाक्ककुम तीमें श्रेय्याडु-भुवि
 एयुम विदुबसे शोय्युम ।

३० वयिट्टुक्कु शोरिड बेण्डुम-इंगु
 वापु मनिबल्लकेस्साम
 पयिट्टु पसाकस्वि तम्बु-इन्ब
 पार जयतिड वेण्डुम ।

३१ ओम्बेषु कोद्दु मुरसे-अम्बिल्ल
 ओंगेषु कोद्दु मुरसे
 नम्बेषु कोद्दु मुरसे-इन्ब
 मानिता माम्बल्लकेस्साम ।

- २७ (सुखी जीवनके लिए) प्रेम आवश्यक है । उसमें सबका स्वातंत्र्य है । इस (स्वतंत्रता) के भाव सब लोग सुधिसिध और सम्य होंगे ।
- २८ सब लोगोंको अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिए । यदि छोटोंका उधार कर दिया जाए तो देव सबका भला करेगा ।
- २९ ससारमें समता और छातृत्व आ जाए तो ऐसी परिस्थिति आएगी कि किसीकी बुराई किए बिना सारा संसार स्वतंत्रतापूर्वक जीवन बिताएगा ।
- ३० इस ससारमें सभी लोगोंको पेटभर भोजन आवश्यक मिले । अनेक प्रकारकी बिद्याओंको सीखकर और दूसरोंको सिखा कर इस ससारकी ऊपर उठाना चाहिए ।
- ३१ हे बंके ! तुम्हारी ध्वनि द्वारा एकत्वकी घोषणा हो यह घोषित करो कि प्रेममें सब एक हैं । हे बंके ! इसीमें सब लोगोंकी भलाई है ।

१४ कृष्णन् सन् शेषकन्

कृष्णि मिग केदुपार कोदुस बेस्साम ताम मरप्पार
 बेसै मिग वलिरन्नास बीट्टिसे तंगिदुवार
 "एमडा मी नेट्टु तिंगु वर विस्सै" एव्वाल
 "पानैपिले तेळिरन्दु पत्ताल कडित्त" वेनुवार
 बीट्टिसे पेष्वाट्टि मैर ब्रूतम बम्बेन्वार
 पाट्टियार पोसु विट्टु पभिरब्बाम तळ्ळेन्वार,
 ओपामल पोम्पूरैप्पार, ओम्पूरैक्क बेद सेप्पुवार
 बायाबियोडु तनिपिडले पेशिदुवार
 उळ्ळ बीट्टु पोय्दि एस्साम ऊरम्बलत्तुरैप्पार
 एन बीट्टिल इस्तयेभास एंगुम मुरतारैवार
 शेबगराल पट्टु शिरममिपडब्बु, कब्डीर
 शेबगरिस्सा बिडिलो शेर्पा नडक्कविस्सै
 इंगिरनास पानुम इडर मिपुसु वाङ्गीयिल
 एंगिरन्बो बम्बान "इडै चादि नाग" एवाम्
 माडु कडु सेप्पुत्तिदुबेन, मक्कळै गाल कात्तिदुबेन
 वीडु पेक्किक किळक्केट्टि वलिरदुबेन
 शोस पडि केदुपेन, तुधि मशिगळ्ळ कात्तिदुबेन
 शिध्र कुपुन्बैक्कु शिगार पाट्टिसेले
 भाट्टुगळ्ळ काट्टि भयाव पडि पात्तिदुबेन
 काट्टु वपि पानासुम, कळ्ळर वयमानासुम
 इरविर पगसिले एत्तेरामानासुम
 शिरमलै पार्य विस्से, शेवरोर तम्मुडने
 शुट्टुवेन तंगळुक्कोर तुम्ब मुरा काप्येन
 कट्टु बिद्दु एणुमिस्सै काट्टु मगिरन ऐपु ।

१४ कान्ठ मेरा नीकर

कुछी ब्यादा मांगते हैं, जो कुछ भी दो भूल जाते हैं, अगर काम ब्यादा हो तो अपने घरपर रह जाते हैं। यदि उनसे पूछा जाए "क्यों भाई करु क्यों नहीं आए" तो जवाब देते हैं कि मटकेमें विच्छु या उसने दाँतसे काटा। कहते हैं—घरमें गृहिणीको भूत बाधा हो गई। कहते हैं धान नामीको मरे बारहवाँ दिन ह। अनवरत झूठ धोखते हैं। तुम कोई काम दो तो कुछ और ही कर बैठते हैं। तुम्हारे सगोत्रियोंसे अलग धा-आकर बातें करते हैं। तुम्हारे घरकी सारी बातें झुसे धाआरके दीपमें घोपित कर देते हैं। तुम्हारे घर यदि किसी वस्तुका अभाव हो तो उसकी डकेकी चोट धोपणा कर देते हैं। नीकरसे जो कष्ट पाया वह बहुत-बहुत अधिक ह। यदि नीकर न रहा तो काम ही नहीं चलता।

इस तरह संकटमें मैं जब ब्याकुल हो रहा था तब न आने कहीसे कोई आया और बोला—मैं (जातका) गया हूँ। गाय बछड़े बराता हूँ, बच्चोंका* भी पालन करता हूँ।

घर साफ करके दीपक जलाकर रख सकता हूँ। किसी भी धाआरका पालन करूँगा। बपड़े-रुतेकी रखा करूँगा। छोटे बच्चोंको सुंदर पीठ रखकर सुनाऊँगा और सुवर नाच नभाऊँगा—यह ध्यान रखूँगा कि वे रोएँ नहीं। चाहे जंगलका रास्ता हो चाहे चौरोंका भय हो, रात हो, दिन हो—जब भी आवश्यकता हो, अपने धमकी पिन्टा किए बिना आपके साथ रहकर यह ध्यान रखूँगा कि आपपर कोई संकट न पड़े। मैंने कोई विद्या प्राप्त नहीं की—जगदी आदमी हूँ।

* तमिळमें यहाँ पर "मक्कट्टै" शब्द प्रयुक्त है। इसका अर्थ 'बच्चोंका' या 'प्रवाह'—दोनों हो सकता है।

आमपोप बु गोसडि कुत्तुपोर मरप्पोर
नातरिवेन, शद्रुम मयवञ्जने नातपुरियेन

एषु पल शोस्ति निभान, "एहु पेयर शोस्" एभेन
"ओधु मिस्सै, कण्णन एबार ऊरिस्सुळ्ळोर एर्रे" एभान

कट्टु बवि उळ्ळ उडस, कण्णिने मस्स गुणम
ओट्टुरवे मधामा उरतिडुम शोस्-ईगिक्कट्टाल

तक्कवनेमुळ्ळते मारई मयियु चि मुडन

"मिक्कपुरे पल शोस्ति विरुडु पसा श्राद्रु गिराय
कूत्ति एम केट किधाय कूर" एभेन । "ऐमने ।

तात्तिकट्टुम पेण्डाट्टि सन्बदिकळेडु मिस्सै
नागोर तमियाळ नरेविरै तोध्रा विडिनुम

आमा वयविकळविस्स, वेवरोर
आवरित्तार पोडुम । अडियेन नेळिञ्जळुळ्ळ

काबल वेरिवेनक्कु कासु वेरिविस्सै" एभान ।
पण्ड कात्तु पयित्तियत्तिस ओधनने

कण्डु मिगडुम कळिप्पुडने नामबर्न
आळ्ळाय कोण्डु बिट्टेन, मधु मुवकोण्डु

नाळ्ळाय नाळ्ळाय नम्मिडले कण्णनुवकु
पट्टु मिगुम्बु वरक पाक्कियेन, कण्णनास

पेट्टु वरुम नन्ने घेसाम पेदिमडिपाडु
कण्ण इम इरवुम कार्पंडु पोस एन कुडुम्बम

वण्णमुरा काक्किधाम वाम् मुणुत्तस कण्डरियेन
वीदि वेरुक्कुगिरान, वीडु सुडु मावकुगिराम

वारियार रोय कुट्टु मेत्ताम तट्टि यडक्कुगिरान
मनक्कळक्कु वात्ति वळपुत्ताय वत्तिमनाय

ओवक ममम श्राद्रु गिरान, ओधुगुर विस्सै

फिर भी आवश्यकता पड़नेपर छाठी पला सकता हूँ, मुझका मार सकता हूँ, घातक युद्ध कर सकता हूँ। मेरी ओरसे कभी भी धोखेवाजी नहीं होगी।

यों बहुत कुछ कहकर वह चुप हो गया तब मैंने पूछा—“तुम्हारा नाम क्या है ?” उसने उत्तर दिया— कुछ नहीं लोग मुझे ‘कान्द’ कहा करते हैं।”

वह हटा बट्टा था, उसकी आँखोंमें अच्छे गुण झलकते थे, उसके बचम स्पष्ट और गभीर थे। इन कारणोंसे मैं मन ही मन प्रसन्न होकर आग गया कि वह एक योग्य व्यक्ति है। मैंने उससे कहा— ‘तुम बातें तो बहुत करते हो और अपनी बड़ी बड़ाई भी खूब करते हैं। बोलो, वेसन क्या लोगे ?’ उसने कहा ‘महाशय ! मेरी न तो छादी ही हुई है और न मेरे कोई सम्पत्ति ही है। मैं तो अकेला हूँ। यद्यपि कोई पका बेष दिखाई नहीं पड़ता तो भी मेरी आयुके कितने बप बीते—इसका कोई हिसाब नहीं। आप मुझे आश्रय भर दें, बस। मैं तो हृदयके प्यारको अधिक महत्त्वपूर्ण मानता हूँ, पैसेको नहीं।”

मैंने सोचा कि यह पुराने जमानेके सनकी लोगोंमेंसे कोई है। मैं बड़ा खुश हुआ। मैंने उसको अपनाया। तबसे मैं देखता हूँ कि दिन प्रतिदिन कान्दकी हमारे प्रति लगन बढ़ती ही जाती है। कान्दसे मैं इसनी मसाहियाँ पा रहा हूँ, जिनका वर्णन करना सम्भव नहीं है।

माँसोंकी रसा जैसे पसकें करती है, ठीक उसी प्रकार वह मेरे बुद्धिमेंकी रसा करछा है। कभी बड़बड़ाता नहीं है। धरके बाहरका भाग बुहारता है, पर साफ रखता है। घासियाँ जो नुटियाँ करती है, उन्हें समझाकर उन नुटियोंको दूर रखता है। वर्षोंका वो वह गुरु धाय-माँ और र्बसके समान है। उत्तम सस्इतिका परिषय देता है। मैं उसमें किसी प्रकारकी नुटि नहीं पाता।

पण्डमेसाम शोर्तुवस्तु पास चांगि मोर चांगि
 पेण्डुपुल्लै ताय पोसापिरिय मुर आदरित्तु
 मण्बनाम मन्बिरियाप मस्काभिरियनुमाय
 पण्बिसे बेम्बमाय पाबैयिसे शोवकनाय
 एंगिरुबो वन्बान इड साबि एभ्रु शोमान

इंगिवने यान पेरेवे एपतवम सेयुबिट्टेन
 कण्मन एनदगले कास वेस्त नाळ मुबलाम
 एण्मम बिन्नार एकुबुम बबन पोदप्पाम
 सेस्वम इळमाय्बु पीर शिरप्पु मकीति
 कस्वि भरिबु कबित शिवयोगम
 तेळिबे पडिवाय शिवज्ञानम एभ्रुम
 ओळि शेर तसमनेत्तुम ओंगि बदगिभन काय !

कण्मने नाम आदकोण्डेन कण्बुकोण्डेन कण्बुकोण्डेन
 कण्प्यने माठकोळ्ळु कारणमुम उळ्ळनवे ।

आवश्यक वस्तुओंका संग्रह करता है, दूध लेकर रखता है—इसी छेकब रखता है। स्त्रियोंकी माता-सम आवरणके साथ रखा करता है। वह एक अच्छे मित्र तुल्य है, अच्छे मंत्री और अच्छे मुक्के तुल्य है, संस्कार उसके वैश्व तुल्य हैं पर देखनेमें वह सेवक-सा ही लगता है। न जाने कहसि आया और बोला मैं जातिका ग्वाला हूँ।

म भास्कुम किस तपस्याका फल है कि मैंने उसको इस तरह पाया। सबसे मेरे घरमें कान्हूके चरण पड़े, तबसे मुझे किसी बातका सोच-विचार नहीं करना पड़ा। सब उसका काम हो गया। ऐश्वर्य यौवनका-सा स्वास्थ्य, सम्पन्नता बढाई, यश, विद्या ज्ञान कविता शिवयोग (भक्ति) सुस्पष्ट शिवज्ञान ऐसी तेजोमय सारी भलाइयाँ मिल्य चढ़ रही हैं।

कान्हूको मैंने अपनाया क्या—मैंने उसको पहचान लिया, पहचान लिया। कान्हूको अपनाया, इसके कारण भी हैं।

१५. कण्ठम्मा स्तु कावलि

बिस्ति तुस्कर दोप्ब वपुक्कमडि-वेष्मळ
 तिरैयिटट्टु मुगमसर मरत्तुवीसस
 वल्लि इडयिनेमुम ओंगि मुन निकुम-इव
 मार्वेयुम मूडुवडु शात्तिरंयष्मळ
 वस्ति इडयिनेयुम मार्बि रण्डेयुम-सुणि
 मरत्तव नाळयगु मरैव्वबिस्स
 सोस्सि तेरियबिस्से मन्मवक्कसे-सुय
 चोदि मरत्तु मोव कावलिगुष्मो ।
 भारियर मुम्भेरियळ मेन्ने एत्तगिराय-पण्डे
 आरिय वेष्मळ्ळुक्कु तिरैयळ वण्डो
 ओरिय मुर कण्डु पयागिय पिन-वेडम
 ओप्पुक्कु काट्टुवबिस्स नाज मेम्भडि ?
 यारिक्कवेधे इमु तडुत्तिडुवार-वम्
 चाग मुगत्तिरैये भगट्टि विट्टास ?
 कारिय मिस्से यडि बोथ पशाप्पिसे-कति
 कण्डवन तोत्तुरिवक्क कात्तिष्म्यामी ?

१५. कान्ह मेरी प्रेयसी

स्त्रियाँ परदा करके अपना कमल जैसा मुह छिपाती हैं यह दिस्लीके मुगलोंके काससे भला आया क्रम है। पतली कमरको और आगे बढ़ आनेवाली छातीको ढकना ही शास्त्र (सम्मत रीति) है। पतली कमरको और आगे बढ़ आनेवाली छातीको कपड़ा छिपा सेता है, इस कारणसे उनका सौन्दर्य छिप नहीं जाता। ममथ कला समझाए नहीं समझी जाती। यदि मुखज्योतिको ही छिपा लिया जाए तो फिर भला प्रेम कैसे हो सकता है ?

आर्योंकी प्राचीन रीतियाँ तुम्हें अच्छी लगती हैं। प्राचीन कालकी स्त्रियाँ क्या परदे में थीं ? एक दो बार मिसकर परिचित हो जानके बाद नाम मात्रके लिए दिखानेमें छुञ्जाकी कौनसी बात है ? यदि मैं अबरवस्ती परदा हटा दूँ तो कौन मेरा क्या कर लेगा ? व्यर्थकी हिचकिचाहटसे कुछ नहीं होनेका। जिसको फल प्राप्त हो गया क्या वह फिर उसका छिपका दूर करनेमें बिलम्ब करेगा ?

'कामन' काणिकरैषाय निघण्टो कण्ठुदगि
 निघं मणवके नेदुनाळ बिरन्नि अवन
 पोर्न मरुर् पुदुत्तेन कोष्पुनक्कु
 नित्तम कोडुत्तु निनेवेस्साम नीयापा
 चित्तम वरुन्दुगीयिल तेमोपिये नी यवने
 मारुंयिड वाक्कळिस्ताय मयत्तिनासिल्लै अवन
 शाल वरुन्दुदल सत्तियामरु शोत्तिविवृाय ।
 आयिय ये निघण अयगिन वेदं कीत्ति
 तेयमेगुम तान परय तेन मरुंयिन शाबित्तिलोर
 वेडरकोन शोस्वमुम नस खोरमुमे तामुडैयान
 नाडर्नत्तुम अत्ति नडुगुम क्षेयत्तुडैयान
 मोट्ट पुत्तिपत्तत्तम मूत्त मगतामा
 नेट्ट कुरगनुक्कु नेरान पेण वेण्डि
 निघं मणम पुरिय निच्चयित्तु निघप्पम
 तभ यग्गि "निघोर तैयल्लै एत पिळ्ळैस्सु
 कण्वात्म शोय्युम कवत्तुडैयेन" एत्तिडमुम
 एण्णा वेद मणिय्चि एय्बिए निघ तम्बै
 आगे उडन पट्टाम् ।

पिन्नर गिल द्विनेगळ दोप्रदमपिम पेण कुयिसी
 निघोल तोपियम्म नीयुमोद मारुंयिल्ले
 निघर कोडिगळ बिल्लै याड इल पोले
 काट्टिनिडैये कळिस्ताडि निघंयिल्ले
 वेट्टक्केन वम्बान वेस वेम्बर क्षेरमान
 तप्रदर्म मम्बन, तमिये तुण पिरिन्नु
 मप्रवन्डन् मैम्बनोद मार्ग तोडन्नु बरा

महाम जानकर मैं उनके घरोंमें गिरी। मुनिने प्रमसे मुझे
 आसीर्षि-दिया। मने-उनसे कहा, "हे मुनिवर! इस पृथ्वीपर
 निम्न पक्षी जातिमें मेरा जन्म हुआ है। परन्तु मेरा स्वभाव अन्य
 कोयलेंसे भिन्न है। मैं सबकी भाषा समझ पाती हूँ। यही क्यों?
 मुझमें मनुष्यों जैसे मनोभाव है क्या मुझे समझाए कि ऐसा क्यों है?

मेरे यों पूछनेपर मुनिने कहा, "हे कोयल, सुन। पूर्व जन्ममें
 तू भीर भुङ्गा नामक केठोर कर्मवाले शिकारी नायककी पुत्री होकर
 बेर बेसके बलिणी नाममें एक महाइपर रहती थी। तू यौवनमें
 अत्यन्त रूपवती थी। तीनो तमिस्र राज्योंमें सौन्दर्यमें तेरी समता
 करनेवाली और-कोई नहीं थी। शिकारियोंमें तेरा ममेरा भाई एक
 "भावन" (अथवा राज) था। वह तेरे रूपपर मुग्ध होकर काम
 चर-अस्त हुआ। बहुत दिनोंसे उसकी यह इच्छा थी कि तुमसे ही
 उसका विवाह हो। वह तुझे स्वर्ण पुष्प और साबा शहद आदि
 सा-साकर दिया करता था। वह सदा तेरी ही याद करके व्यस्र रहा
 करता था। हे मधुर भाषिणी! तूने उसकी पत्नी बननेका बचन
 दिया—प्रेमसे नहीं परन्तु उसकी बुद्धी न देख सकी, इसलिए तूने
 बचन दिया। हे सुन्दरी! तेरी सुन्दरताकी कीर्ति तो देशभरमें फैल
 ही चुकी थी। बलिणी पहाड़के पार्श्व प्रवेशमें एक शिकारियोंका
 छाया था। वह सम्पत्ति और बीरता-दोनोंसे सम्पन्न था। उसके कुर्योंसे
 साय देव काँप उठता था। उसका नाम मोट्टे पुच्छियन था। वह
 अपने व्येष्ठ पुत्र मेट्टे कुरयन (मर्कट राय) के लिए एक सुयोग्य
 बधुकी खोजमें था। उसने तुझ प्राप्त करनेका निश्चय किया। तेरे
 पिताके पास आकर उसने कहा— 'तेरी सङ्गीको अपने पुत्रकी बधु
 बनानेका मैंने निश्चय किया है।' बहुत प्रसन्न होकर तेरे पिताने
 स्वीकृति दे दी।

इसके बाद कुछ समय बीत गया, तब एक दिन हे कोयल! तू अपने ही समान रूपवती शिकारियोंके साथ शामको खेल रही थी। तुम लोगोंका खेचना विद्युत्कृताकी शीड़ा-सा लगता था।

तोवियरुम नोयुम तोगुत्तु निचे माडवा
 बावियरुम कण्डु बिट्टान, मैयस करे बडु
 निर्रे तनक्काय निरुममितान, माडु नी
 मयवने कण्ड उडन मा मोहम् कोम्बु बिट्टाय
 निर्रे अबन मोविकनाम मी यवने मोविक निप्राम
 अन्नबोर मोविकमिते भावि कसम्बु बिट्टोर
 तोवियरुम बेम्बन गुडर कोसर्त्त तान कण्डे
 भावि अरशान अरुम पुबल्बन पोत्तु मेमे
 अम्बि मरैन्नु बिट्टार, अम्बनुम निमिडले
 "बाम्बि तसंयन मयन यान" एन उरैत्तु
 "वेडर तव मागळे बिग्ई ययगुडैयय
 आडवमाय तोमियरुन ययने इप्पु वेट्टेन
 कण्डुमे निन मिनी नान काबल कोण्डेन' एमिरीक्का
 मण्डु वेक्कावत्त मगलडक्कि नी मोविवाय
 'ऐयने! उंगळ अरममेयित ऐमूव
 तैयल्लम्बाम, अपयित तन्निपरित्तावपराम
 अन्नबरे एग्गे नीर अम्बुडने बाय् गिडक्पीर
 मन्नबरे बेण्डेन मले कुरपर तम्मगळ यान
 कोस्तु मडर तियम कुयि मुयसै बेदपडुण्डो ?
 बेस्तु विरल माबेम्बर बेडक्को वेण्डेडुप्पार ?
 पत्तियियाय बाय् वदल्लास पारबेम्बर तामेनिनुम
 तति बिल्ले मगळा मागळ कुडि पोबदिल्ले
 पोन्नडिये पोडु गिरेम पोय वदबीर तोवियरुम
 एर्रे बिट्टु पोयिनरे, एन शोयुगेम एम्पु नी

तुम सोग बन प्रान्तमें जब लख रही थीं तब बेर देवक राजाका पुत्र चिकार लखने आया। वह राजकुमार एक हिरनका पीछा करता हुआ बहुत दूर चला गया—वह अपन साधियोंसे अलग हो गया था। उसने तुमसे सलियोंके साथ लखत देख लिया। तुम्हें वह तुमपर रीस गया। उसने निश्चय कर लिया कि वह तुमसे अपनागण्य। हे युवती! तू भी उस राजकुमारको देखकर प्रमथन हो गई। उसने तुमसे देखा तूने उसे। उसी दर्शनमें तुम दोनों अपन अपने प्राण एक-दूसरेको दे डाले। राजकुमारको वहाँ देखकर तब वह राजकुमार तेरे पास आया और बोला “मैं चर राजाका पुत्र हूँ। हे चिकारीकी पुत्री! तू बहुत सुन्दर है। पुरुष जन्म मलका मने आज फल पाया। देखते ही मैं तुमपर मुग्ध हो गया। तू भी कम मुग्ध नहीं हुई थी। अपनाको काबूमें रखकर तू बोली महागत्र आपके महेशमें सुनती हूँ पाँच सौ कामिनियाँ हूँ और सभीका अनुपम सौन्दर्य है। मुना है कि उनका गानम परपर भी पसीजता है। आप उन्हीके साथ मुली होकर रहिए। मुझ राजाकी आसप्यकता नहीं है। मैं तो पबत प्रदेगकी निम्न जातिकी हूँ? यहाँ बनगत्र सिहका सदाकस ध्याह हाता है? वीर प्रथापी राजा कहा निर चिकारीकी पुत्रीकी इच्छा करेगा? यद्यपि हम जातिकी छोटी हैं तो भी हम परली हाकर रहती हैं—बारांगना होकर नहीं। आपके स्वणमय चरणोंकी सीगघ है आप जाइए। सत्रियाँ भी मुझे छोड़कर चली गई हैं हाय! मैं क्या करूँ?

*

*

*

*

इनके बाद सिद्ध होता है कि कवि ही वह राजकुमार था। कोयल कविके हाथमें गिन्गी है। कविका यह देखकर आश्चर्य हुआ है कि वह कोयल नहीं सुन्दर युवती है। अचानक उसकी गर्व टूटता है और कविको बोल होता है कि वह वैचक स्वयं देखता था।

तुम छीय बन प्रान्तमें जब खेच रही थीं, सब खेर देसक राजाका पुत्र धिकार ससने आया। वह राजकुमार एक हिरनका पीछा करता हुआ बहुत दूर चला गया—वह अपने साधियोंसे अलग हो गया था। उसने तुम सखियोंके साथ ससने देस लिया। सुरन्त वह तुमपर रीस गया। उसने निदखम कर लिया कि वह तुमसे अपनाएगा। हे मुबती ! तू भी उस राजकुमारको देसकर प्रममग्न हो गई। उसन तुमसे देखा तूने उसे। उसी बानमें तुम दोनोंन अपन अपने प्राण एक-दुसरेको दे डाले। राजकुमारको वहाँ देसकर ठरो सखियाँ हट गइ। उसको शक्यतीका पुत्र जानकर वे डर गई थी। वह राजकुमार तेरे पास आया और बोला मैं खेर राजाका पुत्र हूँ। हे धिकारीकी पुत्री ! तू बहुत सुन्दर है। पुरुष जम सनेका मने बाब कर पाया। बेसठे ही में तुमपर मुग्ध हो गया। तू भी कम मुग्ध नहीं हुई थी। अपनेको काबूमें रसकर तू बोधी महाराज आपके महकमें सुनती हूँ पाँच सौ कामिनियाँ हँ और सभीका अनुपम सौन्दर्य ह। मुना है कि उनके गानसे परपर भी पसीजता है। आप उन्हीके साथ सुसो होकर रहिए। मुस राजाकी आवश्यकता नहीं है। म तो पवत प्रदेशकी निम्न जातिकी हूँ ? कही बनराज सिहका दासकसे ब्याह होता है ? यद्यपि हम जातिकी छोटी हैं तो भी हम पत्नी होकर रहती ह—बारांगना होकर नहीं। आपके स्वयमय खरपोंकी सौगय है आप जाइए। सखियाँ भी मुसे छोड़कर चली गई हैं हाय ! म क्या करूँ ?

इनके बाद सिद्ध होता है कि कबि ही वह राजकुमार था। कोयल कबिके हाथमें गिरती है। कबिको यह देखकर आश्चय होता है कि वह कोयल नहीं सुन्दर मुबती है। अचानक उसकी नँद टूटती है और कबिको बोध होता है कि वह केवल स्वयं देखता था।